अज़मते ताज़ियादारी

कुरान व अहादीस की रोशनी में

मुअल्लिफ़

डॉ0 आज़म बेग क़ादरी

अज़मते ताज़ियादारी

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

मदार बुक डिपो
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

नाम किताब- **अ़ज़मते ताज़ियादारी**

मुअ़ल्लिफ़- डा० आज़म बेग क़ादरी

नज़रे सानी- मौलाना सिराजुद्दीन वारसी

सने इशाअ़त- जुलाई-**2016** रमज़ानुल मुबारक (1437 हिज़री)

कम्पोज़िंग- अमन & ज़ैनुल आबदीन

क़ीमत- **80** रूपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक डिपो
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

उर्दू बुक हाउस
तलाक महल (कानपुर)
09389837386,09559032415

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

-: हिस्सा अव्वल :-

हिस्सा दोम

हिस्सा सोम

786 / 92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन वस्सलातु वस्सलामु अ़ला सइयदिल मुरसलीन अम्मा बाअ़द फ़अ़ाउज़ू बिल्लाही मिनश्शैतानिर्रजीम बिसमिल्ला हिर्ररह़मानिर्र रह़ीम०

तमाम ख़ूबियाँ और तारीफें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी हम्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबैअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मते और रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान और बेहद करम करने वाला है।

और दुरूदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर व बातिन में तइयब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को औसाफ़ व

अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम का सरदार और अपने नूर से हुजूरे पाक का जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अतहार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया–ए–किराम व सूफ़िया–ए–किराम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे है।

-: अ़र्ज़े मुअ़ल्लिफ़ :-

अलह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन अल्लाह तअ़ाला का लाख लाख शुक्र व एहसान है जिसकी तौफ़ीक़ से मुझ ह़क़ीर सरापा तक़सीर को ये किताब लिखने की सअ़ादत हासिल हुई हालाँकि मैं इसके क़ाबिल न था मगर मेरे रब ने अपने महबूब सरवरे कायनात सल्ललाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत अतहार की मुहब्बत और उनके नालैने पाक के सदक़े और अपने हबीब रहमते दो अ़ालम सल्ललाहु अ़लैह वसल्लम के ज़ेरे इ़नायत हमें इस शरफ़ से बहरेयाब फ़रमाया व अ़ताये मौला अ़ली शेरे खुदा करमल्लाहु वजहुल करीम व करम हज़रत ग़ौसुल आज़म अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु व फ़ैज़े रूहानी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ व तमाम आले रसूल व नज़रे करम पीरो मुर्शिद हज़रत सइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब बिलग्रामी व बरकात जुमला औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-किराम और बुजुर्गाने दीन की इ़नायते करम कि मैं उ़लूम व माअ़रफत से फ़ैज़याब हुआ।

शेखुल इस्लाम डा० मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी साह़ब क़िब्ला जो इ़ल्मो फ़न में बहरे ज़ख़्ख़ार और वली अल्लाह हैं जिनके बेशुमार ख़िताबात व कुतुब से मैने कसीर इ़ल्म हासिल किया है मैं अल्लाह तअ़ाला से दुअ़ा गो हूँ कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपने महबूब सरकारे दो अ़ालम सल्ललाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े व तुफ़ैल डा० मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी साह़ब की दीनी ख़िदमात को शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और उन्हें अपने मुक़र्रबीन व मख़सूस बन्दों की फेहरिस्त में जगह अ़ता फ़रमाये और उनके इ़ल्मो फ़न व मक़ामे आला

व दरजात में इज़ाफ़ा करे और हुजूर सल्ललाहु अ़लैह वसल्लम व अहले बैत अतहार की इन्तिहाई मुहब्बत और गुलामी से उनकी वाबस्तगी क़ायम व दायम रखे।

इस किताब की तालीफ़ का मक़सद व सबब ये है कि अहले बैत अतहार की क़दरो मन्ज़िलत व मक़ामो मरतबत को बाज़ लोग तख़फ़ीफ़ करते हुये कम दर्जे के ज़िमन में लेते हैं व दिलों में उनकी मुहब्बत व शानो अ़ज़मत को वो मक़ाम नहीं देते जिस शायाने शान के वो सज़ावार हैं अहले बैत अतहार की पाक व ताहिर ज़ात अ़ज़ीम शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत व आला सिफ़ात की हामिल है ये इन्सानी शराफ़त व अ़ज़मत के बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं इनकी सीरते तइयबा ऐ़न सीरते मुस्तफ़ा थी इनके तमाम आमाल हुजूर सल्ललाहु अ़लैह वसल्लम की सीरत व सुन्नत के बेहतरीन नमूना थे इनके अक़वाल व अफ़आ़ल हिदायते मुस्तफ़ा की मानिन्द हिदायत आफ़रीन थे।

अहले बैत अतहार के मनाक़िब व फ़ज़ाइल से वाबस्ता वाक़्यात व अहादीस मुबारका के पढ़ने व सुनने से ईमान में ताज़गी व निखार और दिलों में नूरानी रोशनी और ईमान में पुख़्तगी आती है और इन्सान को नसीहत व हिदायत हासिल होती है और रूह मुतासिर होती है और आ़ज़िज़ी व इन्किसारी व तवक्कुल और इ़बादत व इस्लाहे नफ़्स जैसे बेशुमार सबक़ हमें मिलते हैं जो दुनियाँ व आख़िरत में हमारे लिये बाइसे ख़ैर होते हैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त मुझ हक़ीर की इस तालीफ़ को रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सदक़े शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये। आमीन

डा० आज़म बेग क़ादरी (09897626182)

मनाक़िबे अहले बैत
-: कुरान की रोशनी में :-

अहले बैत की मुहब्बत हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है क्योंकि मुहब्बते अहले बैत ईमान की जान और शर्ते ईमान है उनकी मुहब्बत के बग़ैर किसी शख़्स के दिल में ईमान दाख़िल नहीं हो सकता हदीस पाक में वारिद है रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया इस्लाम की बुनियाद मेरी और मेरे अहले बैत की मुहब्बत है और हम तमाम मुसलमानों के लिये हुक्मे खुदावन्दी है कि अहले बैत से मुहब्बत करो अहले बैत की मुहब्बत मुहब्बते रसूल है और मुहब्बते रसूल मुहब्बते खुदा है।

अहले बैत अतहार की शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत व कमालातो किरदार इन्तिहाई बुलन्द व बाला हैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इन्हें मख़सूस सिफ़ात और पाकीज़गी का आला तरीन नमूना बनाया और अ़ज़ीम मरातिब से नवाज़ा अहले बैत अतहार की फ़ज़ीलत में बेशुमार अहादीस मन्कूल हैं और इनकी शानो अ़ज़मत में आयाते कुरआनी नाज़िल हुई हैं जिनमें बाज़ का तज़किरा हस्बे ज़ेल है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तअ़ाला है-
ऐ महबूब (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) आप मुसलमानों से फ़रमां दीजिये कि मैं तबलीग़ पर तुमसे कोई बदला या सिला नहीं मांगता अलबत्ता मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे क़राबतदारों से मुहब्बत करो। (सू०-शूरा-23)

वज़ाहतः– मज़कूरा आयात में हुक्मे खुदावन्दी है कि ऐ महबूब आप मुसलमानों से फ़रमां दीजिये कि ऐ लोगों मैने जो तुम पर मेहनत की ग़ारे हिरा में सज्दा रेज़ होकर आँसू बहाये और निहायत सख़्त मसाइबो आलाम बर्दास्त किये ओर तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशन मक़ाम अ़ता किया और तुम्हें गुमराहियों के अंधेरों से निजात देकर सिराते मुस्तक़ीम की राह दिखाई और मैने शिकम (मुबारक) पर पत्थर बाँधकर ख़न्दक़ें खोदीं मैदाने उहद और तॉयफ में अपने जिस्म (अतहर) पर ज़ख़्म खाये और तुम्हें जहन्नुम से बचाकर राहे जन्नत पर डाल दिया और तुम्हें जहालत व ज़िल्लत से बचाकर इ़ज़्ज़त व इन्सानियत से हम किनार किया और तुम्हें दावते हक़ देकर तुम्हारी रहनुमाई की और ईमान से बहरेयाब किया।

इन तमाम एहसानात का मैं तुमसे कोई बदला या सिला नहीं माँगता मेरा अज्र तो मेरे रब के पास है और मुझे मेरा अज्र मेरा रब अ़ता करेगा मैं तुमसे किसी अज्र का तालिब नहीं हूँ बल्कि मुझे तो तुम्हारे अज्र की फ़िक्र है जो तुम्हें मेरे क़राबत दारों से मुहब्बत के बाइस मिलेगा मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो इसी में तुम्हारी भलाई और बेहतरी है और दुनियाँ व आख़िरत में अज्रे अ़ज़ीम का बाइस है अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की कुर्बत और ईमान में पुख़्तगी मेरे अहले बैत की मुहब्बत से हासिल होगी इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो।

तफ़ासीर व अहादीस में है कि जब ये आयत

नाज़िल हुई तो सहाबाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपके क़राबत दार कौ़न हैं तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) ये मेरे क़राबत दार हैं इनसे मुहब्बत करो।
(इमाम सना उल्ला पानी पती–तफ़सीर मज़हरी–8/420)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–दुर्रे मन्सूर–5/701)
(इमाम कुरतबी– तफ़सीर कुरतबी–8/415)
(इमाम फख़रूद्दीन राज़ी– तफ़सीर कबीर–27/166)
(मजमउज़्ज़वाइद–7/103, 9/168)

इमाम तबरानी ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास से रिवायत नक़ल की है कि जब ये आयते मुबारका ''ऐ महबूब आप फ़रमां दें कि मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक़) का कुछ सिला नहीं चाहता सिवाय अहले क़राबत की मुहब्बत के'' नाज़िल हुई तो सहाबाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपके क़राबत दार कौन हैं जिनकी मुहब्बत हम पर वाजिब है तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– हज़रत मौला अ़ली, ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) हैं। (मुअ़जम कबीर तबरानी–3/47,48)

–: अहले बैत की शान व जुबाने कुरान :–

एक मर्तबा हसनैन करीमैन बीमार हो गये और अ़लालत (बीमारी) के बाइस (हसनैन करीमैन) कमज़ोर हो गये और उनके चेहरे मुरझा गये हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा (करमल्लाहु वजहुल करीम) ने कहा कि मेरे

दोनो बेटे सेहतमंद हो जायें तो मैं बतौर शुक्राना तीन रोज़े रखूँगा और ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) व हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) और आपकी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने भी यही कहा और तीन रोज़ों की मन्नत मान ली फिर जब हसनैन करीमैन सेहतमंद हो गये तो मन्नत (नज़र) पूरी करने के लिये पाँच अफ़राद हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और आपकी ख़ादिमा फ़िज़्ज़ा ने तीन दिन के रोज़ों का क़सद किया ताकि मन्नत (नज़र) पूरी हो जाये।

जब इन पाँच अफ़राद ने पहले दिन रोज़ा रखा तो घर में खाने को कुछ न था हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु बजहुल करीम) ने एक यहूदी से तीन साअ़ जौ उधार ली और घर पर लाये ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने उसमें से एक साअ़ जौ को पीसा और अफ़्तार के लिये रोटियाँ पकाई और शाम को अफ़्तार के वक़्त पाँचों अफ़राद ने रोटियाँ और नमक अपने सामने रखा कि ऐन वक़्त पर एक मिस्कीन दरवाज़े पर आया और आवाज़ दी या अहलल बैति अल्लाह की क़सम मैं भूका हूँ मुझे खाना खिलाओ अल्लाह तआ़ला तुम्हें जन्नत के दस्तर ख़्वान से खिलायेगा हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और फ़िज़्ज़ा जो कि अबरार (नेकोकार, परहेज़गार लोग) थे उन्होंने वो सारी रोटियाँ मिस्कीन को दे दी और खुद पानी से अफ़्तार किया और दिन रात भूके रहे और उस दिन उन्होंने ख़ालिस पानी के सिवा कुछ न खाया।

दूसरे दिन फिर रोज़ा रख लिया और एक साअ़ जौ की रोटियाँ पकाई गईं लेकिन दूसरे दिन भी यही कैफ़ियत रही कि ऐ़न अफ़्तार के वक़्त दरवाज़े पर एक यतीम ने दस्तक दी और कहा मैं यतीम हूँ और भूका हूँ मुझे खाना खिलाओ अबरार ने सारी रोटियाँ यतीम को दे दीं और पाँचों अफ़राद ने पानी से अफ़्तार किया और फिर तीसरे दिन का रोज़ा रख लिया तीसरे दिन भी यही कैफ़ियत रही कि ऐ़न वक़्ते अफ़्तार एक क़ैदी ने दरवाज़े पर आवाज़ लगाई ऐ अहले बैत मैं असीर (क़ैदी) हूँ और भूका हूँ मुझे खाना खिलाओ और अबरार ने सारी रोटियाँ उस क़ैदी को दे दी और खुद पानी से अफ़्तार किया।

इन पाँच अफ़राद हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और फ़िज़्ज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को अल्लाह तआ़ला ने अबरार के लक़ब से याद फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला को इन पाँच अफ़राद का तीन दिन का ये अम्र इतना पसन्द आया कि अल्लाह तआ़ला ने जिबरईल अ़लैहस्सलाम को भेजा और फ़रमाया कि तीन दिन की रोटियों का सद्क़ा मिस्कीन, यतीम और क़ैदी को देना और खुद पानी से अफ़्तार करने का बदला और इनाम ये है कि मैने उन्हें जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों का मालिक व वारिस बना दिया और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सू० दहर की आयात इन पाँच अफ़राद के हक़ में नाज़िल फ़रमाई–

बेशक नेक लोग मुख़लिस इताअ़त गुज़ार (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पियेगें जिसमें (खुश्बू, रंगत और लज़्ज़त बढ़ाने के लिये) काफूर की मिलावट होगी (काफूर

जन्नत) का एक चश्मा है जिससे (ख़ास) बन्दे पिया करेंगे और जहाँ चाहेंगे उसे छोटी-छोटी नहरों की शक्ल में (दूसरों को पिलाने के लिये) बहा कर ले जाया करेंगे ये अल्लाह तआ़ला के ख़ास बन्दे है जो उस दिन से डरते है जिसकी सख़्ती खूब फैल जाने वाली है और (अपना) खाना अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में मोहताज को यतीम को और क़ैदी को खिला देते है और कहते हैं हम तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रज़ा के लिये खिला रहे है तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं माँगते हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रहता है जो (चेहरों को) निहायत सियाह (और) बदनुमा कर देने वाला है पस अल्लाह तआ़ला उन्हें (ख़ौफ़े इलाही के सबब) उस दिन की सख़्ती से बचा लेगा और उन्हें रौनक़ व ताज़गी और (दिलों में) मशर्रत (खुशी) बख़्शेगा इस बात के बदले कि उन्होंने सब्र किया (रहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता करेगा ये लोग उसमें तख़्तों पर तकिया लगाये बैठे होंगे न वहाँ धूप की तपिश पायेंगे न सर्दी की शिद्दत और (जन्नत के दरख़्तों के) साये उन पर झुक रहे होंगे और उन्हें वहाँ (शराबे तहूर के) ऐसे जाम पिलाये जायेंगे उसमें एक चश्मा है जिसका नाम सलसबील है और उनके इर्द गिर्द ख़िदमत गुज़ार लड़के हमेशा घूमते रहेंगे और जब वो उन्हें देखेंगे तो बिखरे हुये मोती गुमान करेंगे और जब (बहिश्त पर) नज़र डालेंगे तो वहाँ (कसरत से) नेअ़मतें और (हर तरफ़) बड़ी सल्तनत देखेंगे उन (के जिस्मों) पर बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और उन्हें चाँदी के कंघन पहनाये जायेंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलायेगा बेशक ये तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत ठिकाने लगी। (सू०-दहर-5-22)

तसरीहः—इमाम जलालुद्दीन सयूती दुर्रे मन्सूर में रक़म तराज़ हैं कि मज़कूरा आयात पंज अफ़राद हज़रत मौला अ़ली, ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और फ़िज़्ज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के हक़ में नाज़िल हुई (दुर्रे मन्सूर–6/823) (तफ़्सीर कुरतबी–10/139)

अल्लाह तआ़ला ने तीन दिन की रोटियों की कुर्बानी की जज़ा जन्नत व उसकी दायमी अ़ज़ीम उन नेअ़मतों का मालिक व वारिस बना दिया जो हर एक को मयस्सर न होगी तो अब ज़रा सोचो और मुवाज़ना (अंदाज़ा) करो कि करबला में दस दिन की कुर्बानियों की जज़ा और ख़ानबादा-ए-रसूल के सब्र व तहम्मुल और मक़ामे रज़ा पर इस्तिक़ामत की जज़ा क्या होगी बेटे अ़ली अक़बर और अ़ली असग़र की कुर्बानी की जज़ा क्या होगी तीन दिन की शिदद्ते भूक प्यास और जिस्मे अक़दस पर नेज़ों और तलवारों की बेशुमार ज़रबें और तीरों से खाये ज़ख़्मों की जज़ा क्या होगी।

भाई अब्बास और भतीजे कासिम और भाँजे औन व मुहम्मद की कुर्बानी की जज़ा क्या होगी और कसीर मसाइबो आलाम व इन्तिहाई तकलीफ़ों की जज़ा क्या होगी अल्लाह तआ़ला ने ज़िक्रे हुसैन और ज़िक्रे कर्बला को बुलन्द और क़ायम व दायम कर दिया ज़िक्रे हुसैन सिर्फ़ ज़मीन पर ही नहीं बल्कि आसमानों पर भी मुनक़्क़िद होता है और क़यामत तक ज़मीनो आसमान पर ज़िक्रे हुसैन और ज़िक्रे करबला होता रहेगा करबला से पहले हुसैन ज़ाकिर था और करबला के बाद हुसैन (अ़लैहस्सलाम) मज़कूर हो गया और अर्श ता फर्श मजलिसे ज़िक्रे शहादतैन मुनक़्क़िद होती रहेगी।

-: आयते मुबाहला :-

एक बार नजरान से साठ ईसाई पादरियों का वफ़द हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ तो उनमें से दो लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से गुफ़्तगू की तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि तुम इस्लाम कुबूल कर लो तो उन्होने जवाब दिया कि हम आपसे पहले इस्लाम कुबूल कर चुके तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तीन चीज़े तुम्हें इस्लाम लाने से रोकती हैं-1-तुम्हारा सलीब की इ़बादत करना 2- खिंजीर खाना 3- तुम्हारा ये एतक़ाद (अ़क़ीदा) रखना कि ईसा अ़लैहस्सलाम खुदा के बेटे हैं उन ईसाई जमाअ़त के एक सरदार ने कहा क्या तुम ये गुमान रखते हो कि ईसा अ़लैहस्सलाम अल्लाह के बन्दे हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया हाँ वो रूहअल्लाह और अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं

तो उनका एक सरदार बोला तो हमें कोई ऐसा बन्दा दिखाओ जो मुर्दों को ज़िन्दा करता हो मादरजात अन्धों को बीनाई देता हो मिट्टी से परिन्दे की शक्ल बनाकर उसमें फूँक मारता तो वो उड़ने लगता हो क्या आप हमारे साथ मुबाहला (वाकयुद्ध, बद्दुआ़) करते हैं कि हज़रत ईसा अ़लैहस्सलाम ऐसे न थे और जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो और वो तबाह व बर्बाद हो जायेगा फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम यही चाहते हो उन्होंने कहा हाँ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जैसी तुम्हारी मर्ज़ी और अल्लाह तआ़ला ने आयते मुबाहला नाज़िल फ़रमाई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम

ने उन ईसाई पादरियों को मुबाहला की दावत दी। अल्लाह तआ़ाला ने इरशाद फ़रमाया– पस आपके पास इ़ल्म आ जाने के बाद जो शख़्स ईसा अ़लैहस्सलाम के मामले में आपसे झगड़ा करते हैं तो आप फ़रमाँ दें कि आ जाओ हम (मिलकर) अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपने आपको और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं फिर हम मुबाहला करते हैं और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजते हैं (सू०–आले इमरान–61)

तसरीहः– फिर दूसरे दिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्ल्म ने हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा, व खातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपने साथ लिया और नसरानियों से मुबाहला करने के लिये तशरीफ़ ले गये और अपने अहले बैत (हज़रत मौला अ़ली सइयदा फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) से फ़रमाया कि जब मैं दुआ़ करूँ तो तुम सब आमीन कहना हज़रत इमाम हसन व हजरत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आप के साथ थे और हज़रत मौला अ़ली और सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (अ़लैहिमुस्सलाम) आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के पीछे थे।

उन ईसाइयों में से एक शख़्स जिसका नाम अब्दुल मसीह था वो बोला कि ऐ ईसाइयो तुम पहचान चुके हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) सच्चे रसूल हैं अगर तुमने इनसे मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे इसलिये मुबाहला से इन्कार कर दो और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सुलह कर लो और ये वो ही रसूल हैं जिनकी

ख़बर व ज़िक्र तौरात में है अल्लाह की क़सम अगर तुम उन्हें लानत व मलामत करोगे तो हम सब हलाक हो जायेंगे और न हम कामयाब होंगे और न हमारे बाद वाले और रूये ज़मीन पर कोई नसरानी बाक़ी न रहेगा और न हमारा बाल बाक़ी रहेगा और न हमारा नाखून बाक़ी रहेगा और फिर उन ईसाई पादिरियों के सरदारों में से कुछ लोगों ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ की कि हमारे बेवकूफ़ों ने आपसे मुबाहला करने की बात की थी हमारी आप से गुज़ारिश है कि आप हमें माफ़ फ़रमां दें फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया।

इमाम जलालुद्दीन सयूती ने मज़कूरा आयात की तफ़सीर में एक रिवायत नक़ल की है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि अ़ज़ाबे इलाही अहले नजरान पर क़रीब आ चुका था अगर वो मुबाहला करते तो उनका ख़ात्मा हो जाता। (दुर्रे मन्सूर–2/111)

एक दूसरी रिवायत में है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास एक फ़रिश्ता आया था जिसने मुझे ये ख़बर दी कि अगर वो मुबाहला करते तो अहले नजरान हलाक हो जाते।

एक और रिवायत में है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है बेशक अ़ज़ाबे इलाही नजरान के क़रीब आ चुका था अगर वो मुबाहला करते तो उन्हें बन्दरों और खिंजीरों की शक्ल

में मस्ख़ कर दिया जाता और वादी आग से भर जाती और अल्लाह तआ़ला नजरान और उसके बाशिंदों की जड़ें उखेड़ लेता हत्ता कि दरख़्तों पर परिन्दा भी न बचता।(तफ़्सीर मज़हरी–2/78)(तफ़्सीर नईमी–3/477)

हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात जिसने मुझे हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया अगर वो मुबाहला करते तो उन पर वादी आग से भर जाती। हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आयते मुबाहला पंजतन पाक (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) के बारे में नाज़िल हुई और अन्फुसाना से मुराद हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम व हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम हैं और अब्नाअना से मुराद इमाम हसन व इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) है और निसाअना से मुराद हज़रत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) हैं। (दुर्रे मन्सूर–2/109)

इमाम मुस्लिम, तिर्मिज़ी, हाकिम और बैहक़ी ने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत नक़ल की है जब ये आयते मुबाहला (कुल तआ़लो नदऊ़ अब्नाअना व अब्नाअकुम व निसाअना व निसाअकुम व अन्फुसाना व अन्फुसाकुम) नाज़िल हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा व सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया और फ़रमाया ऐ अल्लाह ये मेरे अहले बैत हैं।

(मिश्कात–3 / 252) (तफ़्सीर नईमी–2 / 77)
(दुर्रे मन्सूर–2 / 111) (मुस्तदरक हाकिम–3 / 163)

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नजरान से एक वफ़द हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बारगाहे अक्दस में हाज़िर हुआ और पूछा कि हज़रत ईसा अ़लैहस्सलाम के बारे में आपकी क्या राय है तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया वो रूह अल्लाह और अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं उस वफ़द ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से कहा क्या आप हमारे साथ मुबाहला करते हैं कि हज़रत ईसा अ़लैहस्सलाम ऐसे न थे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जैसे तुम्हारी मर्ज़ी (तब आयते मुबाहला नाज़िल हुई) और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम घर तशरीफ़ लाये और अपने बेटों हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) और हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा व ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहिमुस्सलाम) को साथ ले जाने के लिये जमा किया उन ईसाइयों के एक सरदार ने उन (नसरानियों) से कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से मुबाहला मत करो अल्लाह की क़सम अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारा कोई भी आदमी नहीं बचेगा फिर वो ईसाई हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के पास आये और कहा कि हमारे कुछ बेवकूफ़ लोगों ने आपसे मुबाहला का इरादा किया था हम आपसे गुज़ारिश करते हैं कि आप हमें माफ़ कर दें आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया।
(मुस्तदरक हाकिम–2 / 649)

-: अक़सामे अहले बैत :-

अहले बैत की तीन क़िस्में हैं-

1-सकनी- यानी घर में क़याम करने वाले क़ाबिले रिहाइश यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतहरात।

2-निसबती व नस्ली- यानी जिन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का निसबती व नस्ली तअ़ाल्लुक़ है यानी हज़रत मौला अ़ली सइयदा फ़ातिमा, इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम)।

3-ऐज़ाज़ी- यानी वो हस्तियाँ जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने बतौर ऐज़ाज़ अपने अहले बैत में शामिल किया-जैसे-हज़रत सलमान फारसी (रज़ि०)।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतहरात तो आपके निकाह में आने के बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की अहले बैत में शामिल हुईं उन तमाम को अल्लाह तअ़ाला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के अहले बैत में शामिल किया और हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा, सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपने अहले बैत में शामिल किया और उनसे जो सिलसिला-ए-नसब चला वो सब आले रसूल आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के अहले बैत में शामिल हैं और आले रसूल की मुहब्बत राहे खुदा है और इस राह पर चलने वाला कभी गुमराह नहीं होता हत्ता कि

वो रज़ाये इलाही के बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हो जाता है और अल्लाह तआ़ला की खुशनूदी उसका हासिल मुक़ाम होता है और वो अज्रे अ़ज़ीम का मुस्तहिक़ हो जाता है।

अल्लाह तआ़ला ने अहले बैत के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया–अल्लाह तो यही चाहता है कि ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के घर वालो तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत (पाकीज़गी) से नवाज़ कर बिल्कुल पाक साफ व खूब सुथरा कर दे। (सू०–अहज़ाब–33)

(यानी हर वो काम जो ख़िलाफ़ शरअ़ और बारगाहे खुदावन्दी में ना पंसदीदा हैं और हर तरह की बुराई व शर और गुनाह से अल्लाह तआ़ला ने अहले बैत अतहार को पाक व महफूज़ रखा)

तसरीहः– इमाम जलालुद्दीन सयूती ने इस आयाते करीमा की तफ़्सीर में हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत नक़ल की है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हज़रत उम्मे सलमा के घर में थे और आप पर ख़ैबर की बनी हुई चादर थी और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर ये आयत नाज़िल हुई–कि अल्लाह तो यही चाहता है कि ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के घर वालो तुम से हर तरह की नापाकी दूर कर दे.................... फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया और अपनी चादर मुबारक से ढाँप लिया और बारगाहे खुदावन्दी में

अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह ये मेरे अहले बैत (घर वाले) हैं इनसे हर तरह की रिज्स (नापाकी, पलीदी) को दूर फ़रमां दे और इन्हें पाकीज़ा बना दे ये कलिमात आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने तीन दफ़ा दोहराए हज़रत उम्मे सलमा ने कहा कि मैंने अपना सर उस चादर के अन्दर किया और अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैं भी इनके साथ हूँ तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया नहीं लेकिन तुम ख़ैर की जानिब हो ये बात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने दो बार इरशाद फ़रमाई। (दुर्रे मन्सूर–5/562) (तफ़्सीर इब्ने कसीर–22/672)

एक दूसरी रिवायत में इमाम तबरानी ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत नक़ल की है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) से फ़रमाया कि अपने दोनो बेटों व खाबिन्द को ले आओ तो आप उन सब को ले आयीं फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपनी गोद मुबारक में बिठाया और हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (अ़लैहस्सलाम) को दाँयी जानिब और सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) को वाँयी जानिब बिठाया और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इन सब पर अपनी चादर मुबारक डाल दी फिर दुआ़ की ऐ अल्लाह ये अहले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) हैं इन पर अपनी रहमतें और बरकतें उसी तरह नाज़िल फरमां जिस तरह तूने आले इब्राहीम पर रहमतें व बरकतें नाज़िल फरमाईं हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने कहा मैने चादर ऊपर उठाई ताकि मैं भी उसमें दाख़िल हो जाऊँ तो

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने चादर को मेरे हाथों से खींच लिया और फ़रमाया तुम भलाई पर हो। (दुर्रे मन्सूर–5/563) (मुअ़जम कबीर–तबरानी–3/53,54)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि ये आयत पाँच अफ़राद (पंजतन पाक) के बारे में नाज़िल हुई (यानी मैं,(हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम)हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा ज़हरा, इमाम हसन व इमाम हुसैन(अ़लैहिमुस्सलाम) (तफ़्सीर तबरी–22/10) (दुर्रे मन्सूर–5/563)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के दौलत कदाह में जब ये आयते करीमा–अल्लाह तो यही चाहता है कि ऐ नबी सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के घर वालो तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे...... नाज़िल हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली, सइयदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन को बुलाकर चादर उड़ाई फिर दुआ़ की ऐ अल्लाह ये मेरे अहले बैत हैं इनसे हर तरह की नापाकी को दूर फ़रमां दे और इन्हें खूब पाक साफ व सुथरा कर दे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं भी इनके साथ हूँ आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तुम अपनी जगह पर हो और ख़ैर की जानिब हो। (तिर्मिज़ी–2/736)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है आप फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम एक चादर ओढ़े हुये

थे जिस पर सियाह ऊन से कजाबों की सूरतें बनी हुई थीं इतने में हज़रत इमाम हसन (अ़लैहस्सलाम) आये तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उन को चादर के अन्दर कर लिया फिर हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) आये उन को भी चादर के अन्दर कर लिया फिर ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (अ़लैहस्सलाम) आयीं तो उन को भी चादर के अन्दर कर लिया फिर हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा (अ़लैहस्सलाम) आये तो उनको भी चादर के अन्दर कर लिया फिर ये आयते करीमा पढ़ी (अल्लाह तो यही चाहता है कि ऐ अहले बैत तुमसे हर तरह की आलूदगी दूर कर दे और तुम को तहारत से नवाज़ दे) (सही मुस्लिम–6/103)

मनाक़िबे अहले बैत
-: अहादीस की रोशनी में :-

सही मुस्लिम व तिर्मिज़ी शरीफ़ में वारिद है हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) ने फ़रमाया मैं तुममें दो ऐसी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुम लोग इनको मज़बूती से थामे रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और अगर एक को भी छोड़ दिया तो गुमराह हो जाओगे इनमें से एक दूसरे से बड़ी अज़मत वाली हैं एक अल्लाह तआला की किताब (कुरान) जो आसमान से ज़मीन तक लटकी हुई रस्सी है इसमें हिदायत व नूर है तो अल्लाह तआला की किताब (कुरान) को मज़बूती से थामे रहो और दूसरी चीज़ मेरे अहले बैत हैं मैं तुमको अहले बैत के बाब में खुदा की याद दिलाता हूँ (अहले बैत की निसबत ये जुमला तीन बार इरशाद फ़रमाया) और कुरान व अहले बैत कभी आपस में जुदा न होंगे यहाँ तक कि दोनों हौज़े कौसर पर मेरे पास आयेंगे और जो इनकी पैरवी करेगा वो हिदायत पर होगा और जो इनको छोड़ देगा वो गुमराह हो जायेगा। (सही मुस्लिम-6/94) (मिश्कात-3/254) (तिर्मिज़ी-2/736)

वज़ाहतः- मज़कूरा हदीस में ये बात क़ाबिले तवज्जो है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने कुरान मजीद का ज़िक्र एक बार फ़रमाया लेकिन अहले बैत का ज़िक्र तीन बार फ़रमाया इसमें हिकमते मुस्तफ़ा ये थी कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के इल्मे ग़ैब में ये बात थी कि मेरे बाद कुछ लोग मेरी उम्मत के दिलों से अहले बैत की मुहब्बत व अक़ीदत को मिटाने का काम

करेंगे और अहले बैत अतहार से एतक़ादी व मुहब्बती तअ़ाल्लुक़ को मुनक़ताअ़ करने के काम को बखूबी अंजाम देंगे आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की निगाहे नबूवत ये देख रही थी कि मेरी उम्मत के बाज़ लोग मेरे अहले बैत से बुग्ज़ व अ़दावत और दिलों में निफ़ाक़ व कीना रखेंगे इसलिये एक ही मुक़ाम पर दोनो चीज़ों (कुरान व अहले बैत) का ज़िक्र किया मगर कुरान का ज़िक्र एक बार और अहले बैत का ज़िक्र तीन बार फ़रमाया।

आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इ़ल्म में ये बात थी कि कुरान अल्लाह का कलाम है जो नूर व राहे हिदायत है और लोग इसे अल्लाह का कलाम ही जानेंगे और इस पर इख़्तिलाफ़ व इन्कार का फ़ित्ना न होगा मगर मेरे अहले बैत के मुताअ़ल्लिक़ मेरी उम्मत के लोग इख़्तिलाफ़ व इन्तिसार और बुग्ज़ व अ़दावत का फ़ित्ना खड़ा करेंगे ताकि लोग गुमराह हो जायें और इस फ़ित्ने की इब्तिदा जंगे सिफ़्फ़ीन में हुई फिर कूफ़ा में फिर मारका–ए–करबला बपा हुआ और दीगर मक़ामात पर भी फ़ित्ने उठे।

और यही काम ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोग भी बखूबी अंजाम दे रहे हैं कि किसी तरह ताज़ियादारी ख़त्म हो जाये और आने वाले वक़्त में लोग भूल जायें कि मारका–ए–करबला क्या था और इमाम हुसैन कौन थे और लोगों के दिलों से अहले बैत की मुहब्बत मिट जाये और लोग गुमराह हो जायें लेकिन इनकी ये कोशिश व ख़्वाहिश इंशा अल्लाह कभी कामयाब न होगी और न कभी तकमील को पहुँचेगी क्योंकि अल्लाह तअ़ाला जिसे हिदायत दे उसे कोई

गुमराह नहीं कर सकता इसलिये हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपनी उम्मत को गुमराही से बचाने के लिये अहले बैत अतहार की मुहब्बत को अपनी उम्मत पर वाजिब करते हुये ताकीद फ़रमाई कि मेरे अहले बैत की मुहब्बत का दामन पकड़े रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और अगर अहले बैत की मुहब्बत का दामन छोड़ दिया तो यक़ीनन गुमराह हो जाओगे।

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-ख़बरदार ये मस्जिद (नबवी) किसी जुनबी और हाइज़ा (औ़रत) के लिये हलाल नहीं सिवाये मेरे (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली व सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) के इनके अलावा किसी के लिये मस्जिद (नबवी) में (जनाबत, नापाकी व हालते हैज़ में) आना जाना जाइज़ नहीं (इमाम जलालुद्दीन सयूती-ख़साइसुल कुबरा-2/424) (बैहकी-सुनन कुबरा-7/65) (इब्ने असाकर-तारीख़ दमिश्क़-14/166)

हज़रत इब्ने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-मेरे रिश्ते और नसब के सिवा क़यामत के दिन हर रिश्ता और नसब मुनक़ताअ़ हो जायेगा। (मुअ़जम कबीर-तबरानी-3/44) (मुस्तदरक हाकिम-3/153) (मजमउज़्ज़वाइद-9/173)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-बेशक अ़ली,

फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) जन्नतुल फ़िरदौस में सफेद गुम्बद में मुक़ीम होंगे जिसकी छत अ़र्शे इलाही होगी।
(इब्ने असाकर–तारीख़ दमिश्क़–14/61)

हज़रत अ़ली बयान करते हैं कि वो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुये आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने चादर बिछाई हुई थी पस उस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अ़ली फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) बैठ गये फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उस चादर के किनारे को पकड़कर उन पर डालकर उसमें गिरह लगा दी फिर फ़रमाया– ऐ अल्लाह तू भी इनसे राज़ी हो जा जिस तरह मैं इनसे राज़ी हूँ। (मुअ़जम औसत –तबरानी–5/348 ह०–5514) (मजमउज़्ज़वाइद–9/169)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मेरे घर तशरीफ़ फ़रमा थे ख़ादिम ने अ़र्ज़ किया दरवाज़े पर अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आये हैं आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया एक तरफ़ हो जाओ और मुझे अपने अहले बैत से मिलने दो उम्मे सलमा फ़रमातीं हैं मैं पास ही घर मैं एक तरफ़ हटकर खड़ी हो गयी पस हज़रत अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) दाख़िल हुये उस वक़्त वो कमसिन थे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने दोनो बच्चों (हसन व हुसैन) को पकड़कर गोद में बिठा लिया और दोनों को चूमने लगे। (मुस्नद–अहमद बिन हम्बल–6/296 ह०–26582) (मजमउज़्ज़वाइद–9/166)

-: तमाम मुहिब्बाने अहले बैत जन्नती हैं :-

अल्लाह तआ़ाला और उसके महबूब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हम तमाम मुसलमानों को अहले बैत अतहार की मुहब्बत व इताअ़त पर मुतइ़यन फ़रमां दिया सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सुन्नतों व सूरतो सीरत का मुकम्मल व आला और बेहतरीन नमूना अहले बैत अतहार हैं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सुन्नतों व सीरत का चमकता हुआ नूरानी माहताब अहले बैत अतहार हैं इसलिये हमें चाहिये कि इस माहताब की नूरानी किरन से अपने दिलों को अहले बैत की इन्तिहाई मुहब्बत व अ़क़ीदत से मुनव्वर करें ताकि हमें अल्लाह व रसूल की कुर्बत नसीब हो और अल्लाह तआ़ाला क़यामत के दिन हमें अपने मुक़र्रब व मख़सूस बन्दों की फ़ेहरिस्त में जगह अ़ता फ़रमाये।

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हसनैन करीमैन का हाथ पकड़कर फ़रमाया जो कोई मुझसे और इन दोनों (इमाम हसन व इमाम हुसैन) से और इनके माँ बाप (सइयदा फ़ातिमा व हज़रत मौला अ़ली) से मुहब्बत करेगा वो रोज़े क़यामत मेरे साथ मेरे दर्जे में होगा (यानी मेरे ही ठिकाने पर होगा) (तिर्मिज़ी-2/717) (मुस्नद अहमद-1/77) (मुअ़जम कबीर- तबरानी-3/50)

हर इ़बादत मेहनत व मशक़्क़त पर मुश्तमिल होती है लेकिन अल्लाह व रसूल और अहले बैत की दिलों में मुहब्बत बिला मेहनतो मशक़्क़त के हासिल

होती है सिर्फ़ हुस्ने अ़क़ीदा होना लाज़िमी है और इस मुहब्बत की जज़ा और इनाम जैसा कि मज़कूरा हदीस पाक में है यानी क़यामत के दिन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की नज़दीकी और उनका साथ बाइसे निजात और कुरबते इलाही है यानी अ़मल थोड़ा और अज्र बे शुमार है।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- मैं दरख़्त हूँ फ़ातिमा उसकी टहनी है और अ़ली उसका शगूफ़ा है और हसन व हुसैन उसके फल हैं और अहले बैत से मुहब्बत करने वाले उसके पत्ते हैं और ये सब जन्नत में होंगे ये हक़ है ये हक़ है। (यह जुमला दो बार फ़रमाया) (अल फ़िरदौस-1/52)

अहले बैत से मुहब्बत दरअस्ल हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से निसबती तआ़ल्लुक़ की बुनियाद है और मुहिब्बाने अहले बैत के लिये ये बड़े फ़ख़्र का मक़ाम है कि अहले बैत की मुहब्बत के सबब मुहिब्बाने अहले बैत की हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बातिनी वाबस्तगी उनका मुक़द्दर बन जाती है जो उन्हें जन्नत के आला दरजात से सरफ़राज़ करती है और अ़ज़ाबे नार से महफ़ूज़ रखती है और बाद मौत तमाम पुर ख़ौफ़ मक़ामात पर मुहब्बते अहले बैत उनके लिये फायदेमंद और मददगार होगी जैसा कि फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है-

हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु

अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– मेरे अहले बैत की मुहब्बत सात पुर ख़ौफ़ मक़ामात पर नफ़ा (फ़ायदा) पहुँचायेगी, 1– मौत के वक़्त 2– क़ब्र में 3–क़ब्र से उठने के वक़्त 4– नामे आमाल हाथ में दिये जाने के वक़्त 5– हिसाब कि वक़्त 6– मीज़ान पर 7–पुलसिरात के वक़्त (हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी–12)

वज़ाहतः–

1–मौत के वक़्तः– जिस वक़्त गुनाहगार बन्दे की रूह क़ब्ज़ की जाती है तो फ़रिश्ते उसे हथोड़े से मारते हैं और उसकी रूह निहायत सख़्त तकलीफ़ के साथ जिस्म से खींची जाती है रूह क़ब्ज़ होने वक़्त उसे इतनी सख़्त और दर्दनाक तकलीफ़ होती है कि जितनी तलवार कि वार और कैंची के काटने पर भी नहीं होती तो मौत के वक़्त जब रूह खींची जायेगी उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत हमारे काम आयेगी और हमें फ़ायदा पहुँचायेगी और मौत के वक़्त वाक़ैअ़ होने वाली तमाम तकालीफ़ से निजात देगी और हमारी रूह बिला तकलीफ़ आसानी से क़ब्ज़ की जायेगी।

2–क़ब्र मेंः– मइयत को दफ़न करने के बाद जब उस पर उसके गुनाहों के सबब अ़ज़ाब मुसल्लत किया जाता है और उसके जिस्म को कीड़े मकोड़े, साँप और बिच्छू काटते नौचते और खाते हैं और उसको आग का अ़ज़ाब और दीगर मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब उस पर मुसल्लत किये जाते हैं उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत मुहिब्बाने अहले बैत के काम आयेगी और नफ़ा (फ़ायदा) देगी और अ़ज़ाब से निजात व राहत देगी।

3–क़ब्र से उठने के वक़्तः– रोज़े क़यामत जब सूर फूँका जायेगा तो लोग अपनी–अपनी क़ब्रों से नंगे पाँव नंगे जिस्म उठेंगे और उनके दिल इतने ख़ौफ़ ज़दा होंगे कि शर्मगाहें खुली होने के बावजूद लोग क़यामत की हौलनाकियों और सख़्त मसाइबो आलाम के सबब एक दूसरे को देखने से बे नियाज़ रहेंगे उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत मददगार व नफ़ा बख़्श होगी।

4–नामे आमाल मिलने के वक़्तः– यानी क़यामत के दिन जिसको उसका नामे आमाल दाहिने हाथ में दिया जायेगा वो खुशी–खुशी पलटेगा और जिसको उसका नामे आमाल बाँये हाथ में दिया जायेगा उसके लिये हलाकत होगी वो वक़्त बड़ा ही हौलनाक होगा उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत मददगार व फ़ायदे मंद साबित होगी।

5–हिसाब के वक़्तः– यानी अल्लाह तआ़ला बन्दे से जब हर चीज़ के मुताअ़ल्लिक़ हिसाब लेगा और इन्सान अपने रब के सामने ख़ौफ़ ज़दा खड़ा होगा और उसके तमाम आज़ा (अंग) ख़ौफ़ व डर के बाइस काँप रहे होंगे उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत काम आयेगी और अल्लाह तआ़ला की रहमत उसकी निजात का बाइस बनेगी।

6–मीज़ान के वक़्तः– रोज़े क़यामत जब इन्सान के आमाल तौले जायेंगे और मीज़ान (तराजू) क़ायम किया जायेगा और इन्सान के गुनाह और नेकियाँ एक–एक पलड़े में रख दी जायेंगी वो वक़्त निहायत ख़ौफ़ व दिल दहलाने वाला होगा और उसकी निगाहें टकटकी बाँधे तराजू पर लगी होंगी कि कहीं हमारी नेकियाँ

गुनाहों के मुक़ाबिले कम न पड़ जायें उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत फ़ायदेमंद व मददगार होगी।

7-पुलसिरात के वक़्तः- पुलसिरात जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगी जो जहन्नुम के ऊपर बिछी होगी इसके नीचे जहन्नुम जो शोले मारती हुई दहक रही होगी और इस पर से हर एक को गुज़रना होगा और कुछ लोग फिसल-फिसल कर जहन्नुम में गिर रहे होंगे उस वक़्त अहले बैत की मुहब्बत मुहिब्बाने अहले बैत की मददगार होगी और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत पुल सिरात से बा आसानी और बिला तकलीफ़ो परेशानी तेज़ी से गुज़र जायेंगे।

मज़कूरा तमाम हौलनाक व ख़ौफ़नाक और दिल दहलाने वाले मक़ामात पर अहले बैत की मुहब्बत मुहिब्बाने अहले बैत के काम आयेगी और मददगार व नफ़ा बख़्श होगी अहले बैत की मुहब्बत अ़ज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रहने और अल्लाह तआ़ला की रहमत व रज़ा और खुशनूदी हासिल करने और दोज़ख़ से आजादी का आसान व बेहतरीन ज़रिया है

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं इ़ल्म का तराजू हूँ अ़ली उसका पलड़ा है हसन व हुसैन उसकी रस्सियाँ हैं फ़ातिमा उसका दस्ता है और मेरे बाद आइम्मा अत्‌हार (उस तराजू की) उ़मूदी सलाख़ हैं जिसके ज़रिये हमारे साथ मुहब्बत करने वालों और बुग्ज़ रखने वालों के आमाल तौले जायेंगे।
(अल फ़िरदौस-1/44 ह०-107)

सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- आले रसूल की माअ़रफ़त दोज़ख़ से निजात है आले रसूल की मुहब्बत पुलसिरात पर गुज़रने में आसानी है और आले रसूल की विलायत का इक़रार अ़ज़ाबे इलाही से हिफ़ाज़त है। (अलशिफ़ा-2/54)

योमे क़यामत मैदाने महशर में चीख़ो पुकार का अ़ालम होगा और लोग निहायत ख़ौफ़ व सख़्त परेशानियों व तकलीफ़ों से घिरे होंगे कुछ लोग अ़ज़ाब में मुब्तिला होंगे और कुछ हिसाबो किताब से गुज़र रहे होंगे और कुछ की जुबाने भूक व प्यास की शिद्दत के बाइस बाहर को खिंच रहीं होंगी और निहायत सख़्त गर्मी की शिद्दत के बाइस लोगों के दिमाग़ खौलते होंगे और पसीने ने उनके जिस्मों को लगाम डाल रखी होगी लोग क़यामत की हौलनाकियों व मुसीबतो तकालीफ़ में गिरफ़्तार काँप रहे होंगे लोगों की योमे क़यामत होगी और मुहिब्बाने अहले बैत के लिये योमे ज़ियाफ़त होगी अल्लाह तअ़ाला जन्नत के दस्तरख़्वान पर मुहिब्बाने अहले बैत को दावत खिलायेगा जैसा कि फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है-

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-जो मुझसे और अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) से मुहब्बत करते हैं वो क़यामत के दिन एक ही मुक़ाम पर जमा होंगे और हमारा खाना पीना भी इकट्ठा होगा। (मुअ़जम कबीर तबरानी-3/41) (तारीख़ दमिश्क़-13/227) (मजमउज़्ज़वाइद-9/174)

कोई भी शख़्स सिर्फ़ अपने नेक आमाल के बाइस जन्नत को नहीं पा सकता चाहे उसके पास समुन्दर और पहाड़ों के बराबर नेक आमाल हों जब तक कि अल्लाह तआ़ाला की रहमत उसे ढाँप न ले हदीस पाक में वारिद है कि रोज़े क़यामत इन्सान के आमाल के तीन दफ़्तर (रजिस्टर) होंगे एक उसकी नेकियों का दफ़्तर होगा दूसरा उसके गुनाह व बुराइयों का और तीसरा अल्लाह तआ़ाला की नेअ़मतों का दफ़्तर होगा और जब कोई नेकी लायी जायेगी तो उसके मुक़ाबले नेअ़मत रख दी जायेगी हत्ता कि नेकियाँ नेअ़मतों में ख़त्म हो जायेंगी सिर्फ़ गुनाह और बुराइयाँ बाक़ी रह जायेंगी फिर अल्लाह तआ़ाला को उन पर इख़्तियार है।

चाहे तो अपनी रहमत से बख़्श दे या सज़ा दे और अल्लाह तआ़ाला की रहमत उसकी मुहब्बत के बग़ैर हासिल नहीं होती और अल्लाह तआ़ाला की मुहब्बत हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत के बग़ैर हासिल नहीं होती और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत अहले बैत की मुहब्बत के बग़ैर हासिल नहीं होती हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम व अहले बैत अतहार के सदक़े व वसीले से ही हर शख़्स को जन्नत मिलेगी तो जो शख़्स जन्नत और उसकी दायमी नेअ़मतों का तालिब व ख़्वाहिश मन्द हो उसे चाहिये कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत अतहार की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ ले क्योंकि तमाम मुहिब्बाने अहले बैत वारिसे जन्नत हैं।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- अहले बैत की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ो तो बेशक जो शख़्स इस हाल में अल्लाह तआ़ाला से मिला

कि वो मेरे अहले बैत को महबूब रखता था और मेरे अहले बैत से मुहब्बत करता था तो वो हमारी शफ़ाअ़त के वसीले से जन्नत में दाख़िल होगा उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है किसी शख़्स को उसका अ़मल हमारे हक़ की माअ़रफ़त हासिल किये बग़ैर फ़ायदा नहीं देगा। (मुअ़जम औसत तबरानी–2/360) (मजमउज़्ज़वाइद–9/172)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से रिवायत है रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने आख़िरी चीज़ जो इरशाद फ़रमाई वो ये है कि मुझे मेरे अहले बैत में तलाश करो। (मुअ़जम औसत– तबरानी–4/173)

हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–जिसने नमाज़ पढ़ी और मुझ पर और मेरी आल पर दुरूद न पढ़ा उसकी नमाज़ कुबूल न होगी। (बैहक़ी–सुनन कुबरा–2/530)

हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा करमल्लाहु वजहुल करीम फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने मुझे बताया कि मेरे साथ सबसे पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले मैं (हज़रत अ़ली) सइयदा फ़ातिमा ज़हरा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) हैं मैने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह हमसे मुहब्बत करने वाले कहाँ होंगे आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे पीछे होंगे। (मुस्तदरक हाकिम–3/164) (तारीख़ दमिश्क़–14/173)

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–सबसे पहले हौज़े कौसर पर मुझसे मेरे अहले बैत मिलेंगे। (कंज़ुल उ़म्माल–12 / 100)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा से फ़रमाया (ऐ फ़ातिमा) मैं और तू और ये दोनो (हसनैन करीमैन) और अ़ली (अ़लैहिमुस्सलाम) रोज़े क़यामत एक ही जगह पर होंगे। (मजमउ़ज़्ज़वाइद–9–169,180) (मुस्नद अहमद–1 / 101, 2 / 692)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया–
ऐ अली तू और तेरे मददगार (रोज़े क़यामत) मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब होकर आयेंगे और उनके चेहरे (नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन (रोज़े क़यामत) मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा चेहरों के साथ सख़्त प्यास की हालत में आयेंगे। (मुअ़जम कबीर– तबरानी–1 / 319) (मजमउ़ज़्ज़वाइद–9 / 131)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– मेरे अहले बैत की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इ़बादत से बेहतर है और जो इसी मुहब्बत पर फ़ौत हुआ वो जन्नत में दाख़िल हो गया। (मुस्नद अल फ़िरदौस–2 / 142)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से बेहतरीन वो है जो मेरे बाद मेरे अहले बैत के लिये बेहतरीन है। (मुस्तदरक हाकिम-3/352) (मजमउज़्ज़वाइद-9/174) (अल फ़िदौस-2/170) (तारीख़ बग़दाद-7/276)

हज़रत अबू राफ़अ़ बयान करते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया बेशक जो पहले चार शख़्स जन्नत में दाख़िल होंगे वो मैं,(हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम) और तुम (हज़रत अली) और हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम) होंगे और हमारी औलाद हमारे पीछे होगी और हमारी बीवियाँ हमारी औलाद के पीछे होंगी और हमारे चाहने वाले हमारे दाँये और वाँये जानिब होंगे। (मुअ़जम कबीर- तबरानी-1/319) (मजमउज़्ज़वाइद-9/131)

हज़रत मौला अली (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया कि चार शख़्स ऐसे हैं कि क़यामत के रोज़ जिनके लिये मैं शफ़ाअत करने वाला होऊँगा (और वो ये हैं) मेरी औलाद की इज़्ज़त व तकरीम करने वाला और उनकी हाजात को पूरा करने वाला और उनके मुआ़मलात के लिये तग व दू (दौड़ धूप) करने वाला और दिल व जान से उनसे मुहब्बत करने वाला। (कंजुल उ़म्माल-12/100 ह०-34180)

–: अहले बैत से बुग़्ज़ रखने वाले जहन्नुमी हैं :–

गुज़िस्ता सफ़ा पर मज़कूरा अहादीस में मुहिब्बाने अहले बैत के लिये जो इनामात और अज्रे अ़ज़ीम से बहरेयाब होने का जो ज़िक्र हुआ है उसकी सआ़दत जिसको हासिल हो जाये तो उसके एज़ाज़ो इकराम व मर्शरतो कामरानी का आ़लम क्या होगा रोज़े क़यामत हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत अतहार की कुर्बत से जो मुशर्रफ़ हो जाये वो अल्लाह तआ़ला की रहमत व अमान में रहेगा और ये मुहिब्बाने अहले बैत के लिये बड़े फख़्र और मर्शरत का मक़ाम होगा अहले बैत से मुहब्बत की जज़ा अल्लाह की रहमत व जन्नत है और इनसे बुग्ज़ व अ़दावत की सज़ा दोज़ख़ है।

हज़रत अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो शहीद मरा जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो मग़फ़ूर मरा (यानी उसकी मग़फिरत हो गई) और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो जन्नत में इस तरह जायेगा जिस तरह दुल्हन अपने दूल्हा के घर जाती है और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा तो उसकी क़ब्र पर अल्लाह तआ़ला रहमत के फ़रिश्तों को मुक़र्रर फ़रमायेगा और जो शख़्स आले मुहम्मद की मुहब्बत पर मरा वो रोज़े महशर इस तरह आयेगा कि उसकी पेशानी पर आयते रहमत लिखी होगी और जो शख़्स आले मुहम्मद के बुग्ज़ पर मरा वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूँघेगा। (हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी–14,15)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- उस शख़्स पर अल्लाह तआ़ला का सख़्त अ़ज़ाब होगा जो मेरे अहले बैत के बारे में मुझे तकलीफ़ पहुँचायेगा। (कंजुल उ़म्माल-12/93)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- अगर कोई शख़्स काबातुल्लाह के पास रूक्ने यमानी और मक़ामे इब्राहीम के दरमयान खड़ा होकर नमाज़ पढ़े और रोज़ा (भी) रखे फिर वो इस हाल पर मरे कि मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता था तो बेशक वो जहन्नुम में जायेगा। (मुस्तदरक हाकिम-3/161) (मुअ़जम कबीर तबरानी-11/176) (मजमउज़्ज़वाइद-9/171)

अहले बैत से बुग्ज़ रखने के सबब इन्सान के तमाम नेक आमाल अकारत (बर्बाद) हो जाते हैं और दुनियाँ व आख़िरत में उसके आमाल उसे कोई नफ़ा न देंगे जिसने अहले बैत से बुग्ज़ रखा गोया उसने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बुग्ज़ रखा और जिसने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बुग्ज़ रखा गोया उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा और ऐसा शख़्स जहन्नुम में निहायत सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला होगा और न उसकी नमाज़े उसके काम आयेंगी और न रोज़ा और न दीगर नेक आमाल बल्कि वो दाख़िले जहन्नुम होगा और जहन्नुम की दहकती हुई आग उसका दायमी ठिकाना होगी।

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- खुदा की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है हम अहले बैत से बुग्ज़ रखने वाला कोई एक शख़्स भी ऐसा नहीं कि जिसे अल्लाह तअ़ाला जहन्नुम में न डाले (मुस्तदरक हाकिम-3/162)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जिसने अहले बैत से बुग्ज़ रखा वो मुनाफ़िक़ है। (दुर्रे मन्सूर-7/349) (इमाम अहमद बिन हम्बल- फ़ज़ाइले सहाबा-2/661)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं- नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को अपनी कमली में ले लिया और दुअ़ा की ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत (दुश्मनी) रखे तू उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू उसे दोस्त रख। (मजमउज़्ज़वाइद-9/166)

जैसा कि अहले ईमान का अ़क़ीदा है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की दुअ़ा कभी रद्द नहीं होती बल्कि शरफ़े मक़बूलियत पाती है यानी जो अहले बैत अतहार का दोस्त है वो अल्लाह तअ़ाला का दोस्त है और जो अहले बैत का दुश्मन है वो अल्लाह तअ़ाला का दुश्मन है और अल्लाह तअ़ाला का दुश्मन दोज़ख़ी और अ़ज़ाबे इलाही का मुस्तहिक़ व सज़ावार है और अल्लाह तअ़ाला जिसे अपना दोस्त बना ले वो रहमते इलाही और जन्नत का मुस्तहिक़ व सज़ावार है

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जो मेरे अहले बैत से बुग्ज़ रखता है अल्लाह तआ़ला उसे रोज़े क़यामत यहूदियों के साथ जमा करेगा चाहे वो रोज़े नमाज़ का पाबन्द क्यों न हो और खुद को मुसलमान गुमान करता हो।
(मुअ़जम औसत-तबरानी-4/212)
(मजमउज़्ज़वाइद-9/172)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) तुम जिससे लड़ोगे मैं भी उससे लड़ूँगा और जिससे तुम सुलह करोगे मैं भी उससे सुलह करूँगा। (तिर्मिज़ी-2/762) (इब्ने माजा-1/82) (मुअ़जम कबीर-तबरानी-5/184)
(मुस्तदरक हाकिम-3/161)

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ अल्लाह जो मुझसे और मेरे अहले बैत से बुग्ज़ व अ़दावत रखता हो उसे कसरते माल और कसरते औलाद से नवाज़ ये उनकी गुमराही के लिये काफ़ी है कि उनका माल कसीर हो जाये पस (उस कसीर माल के बाइस) उनका हिसाब तवील (लम्बा) हो जाये और उनकी विजदानियत (जज़्वाती चीज़ें) कसीर हो जाये ताकि उनके शयातीन कसरत से हो जायें। (अल फ़िरदौस-1/492)

-: अहले बैत अतहार की मुहब्बत वाजिब है :-

अल्लाह तआ़ला हमारा ख़ालिक़ व मालिक है जिसने हमें अशरफुल मख़लूक़ात बनाया और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की उम्मत में पैदा फ़रमाया और हमें दीने इस्लाम अ़ता किया जो कायनात की तमाम नेअ़मतों में सबसे अफ़ज़ल नेअ़मत है जिसने हमें बेशुमार नेअ़मतों बरकतों से नवाज़ा जिसने हम मुसलमानों के लिये जन्नत को आरास्ता किया जिसने हमारी दुन्यावी ज़रूरियात व हाजात की तकमील की और दुनियाँ में इन्सान की इब्दिता से इख़्तिताम तक और क़ब्र से क़यामत तक और क़यामत से दाख़िले जन्नत तक हमें अल्लाह तआ़ला की रहमत निहायत ज़रूरी है और अल्लाह तआ़ला की रहमत के लिये उसकी इंतिहाई मुहब्बत ज़रूरी है।

और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत हासिल करने के लिये उसके महबूब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत ज़रूरी है जिनके ज़रिये हमें कुरान व सुन्नत और अहकामे शरीअ़त व राहे हिदायत मिली और जिनके तुफ़ैल हमें दुनियाँ में बे शुमार नेअ़मतें मिलीं और इन्हीं के वसीले और शफ़ाअ़त से अल्लाह तआ़ला हमें जन्नत अ़ता करेगा और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से मुहब्बत करना गोया अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करना है और हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की मुहब्बत के लिये अहले बैत से मुहब्बत ज़रूरी है और अहले बैत अतहार हुजूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की सुन्नतों व कमालात का ज़ाहिरी व बातिनी आइनादार बेहतरीन नमूना हैं और

इस्लाम की बक़ा के ज़ाहिरी मुहाफिज़ अहले बैत अतहार हैं जिनसे आज इस्लाम ज़िन्दा व ताबिन्दा है।

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से उसके लिये मेरी शफ़ाअ़त है जिसने मेरे अहले बैत से मुहब्बत की। (तारीख़ बग़दाद–2/146)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करो कि वो तुम्हें नेअ़मतों से नवाज़ता है और अल्लाह तआ़ला के लिये मुझसे मुहब्बत करो और मेरे सबब से मेरे अहले बैत से मुहब्बत करो।
(तिर्मिज़ी–2/737) (मुअ़जम कबीर– तबरानी–3/46)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– आदमी क़यामत के दिन क़ब्र से उठकर इधर उधर हरकत न कर सकेगा जब तक उससे चार बातों का जवाब न ले लिया जाये उ़म्र के बारे में कि किस काम में गुज़ारी और जिस्म की ताक़त के बारे में कि कहाँ ख़र्च की और माल के बारे में कि कहाँ ख़र्च किया और मेरे अहले बैत से मुहब्बत के के बारे में। (मुअ़जम कबीर– तबरानी–11/83)
(मजमउज़्ज़वाइद–10/346)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने

फ़रमाया– कि अपनी औलाद को तीन बातें सिखाओ अपने नबी की मुहब्बत और अपने नबी के अहले बैत की मुहब्बत और कुरान पढ़ना तो बेशक कुरान के इल्म वाले क़यामत के दिन जिस दिन अल्लाह तआ़ला की रहमत के साये के सिवा कोई साया न होगा अल्लाह की रहमत के साये में ये लोग अम्बिया और नेक बन्दों के साथ होंगे। (कुंजुल उ़म्माल–16/456)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से फ़रमाया–ऐ अ़ली बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुझे और तेरी औलाद को और तेरे घर वालों को और तेरे मददगारों को और तेरे चाहने वालों को बख़्श दिया है पस तुझे ये खुशख़बरी मुबारक हो। (अल फ़िरदौस–5/329)

हज़रत अबूजर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने काबे का दरवाज़ा पकड़े हुये फ़रमाया–कि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि तुममें मेरे अहले बैत की मिसाल नूह अ़लैहससलाम की कश्ती के मानिन्द है कि जो इसमें सवार हो गया वो निजात पा गया और जो पीछे रहा (यानी जो चढ़ न पाया) वो हलाक हो गया। (मिश्कात–3/264)

वज़ाहतः– अहले बैत को कश्ती–ए–नूह (अ़लैहस्सलाम) कहने का माना और मफ़हूम ये है कि वो लोग जो नूह (अ़लैहस्सलाम) के मुन्किर थे और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते और कुफ़्र व शरकशी में मुब्तिला रहते थे और उनमें से बाज़ ने नूह (अ़लैहस्सलाम) को बुग्ज़ व कीना के सबब मुख़्तलिफ़ अज़्ज़ियतें पहुँचायीं थीं वो तमाम सरकश लोग हज़रत नूह (अ़लैहस्सलाम)

की कश्ती में सवार न हो सके और तूफाने नूह में ग़र्क़ होकर हलाक हो गये और जो लोग कश्ती में सवार हो गये थे वो निजात पा गये थे।

इसी तरह जिनके दिल अहले बैत अतहार की मुहब्बत से लबरेज़ हैं वो निजात पा जायेंगे और आख़िरत में अज्रे अ़ज़ीम के मुस्तहिक़ और अल्लाह तआ़ला की रहमत से बहरेयाब होंगे और जन्नत में दाख़िल होंगे और जिनके दिल अहले बैत अतहार की मुहब्बत से ख़ाली हैं उनके लिये हलाकत है और वो लोग अहले बैत अतहार से बुग्ज़ व कीना से बाइस नारे जहन्नुम में तूफ़ाने नूह की तरह ग़र्क़ हो जायेंगे और जहन्नुम के मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब में मुब्तिला किये जायेंगे।

हर मामलात में एतदाल बेहतर शैः है लेकिन मुहब्बत के मामले एतदाल नहीं क्योंकि मुहब्बत की कोई हद नहीं होती अल्लाह तआ़ला और उसके महबूब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत अतहार से हमें जिस क़दर मुहब्बत होती है उस मिक़दार से कई गुना ज़्यादा हमें उनकी क़ुरबत हासिल होती है मज़ीद हमारी बख़्शिश और अच्छे हश्र व अल्लाह तआ़ला की रहमत व खुशनूदी का सबब बनती है और मुहब्बत व अक़ीदत पर ही ईमान की बुनियाद और बख़्शिश का इन्हिसार है यानी सही उल अ़क़ीदा और सच्ची मुहब्बत से ही हमारी मग़फ़िरत और अच्छे हश्र उम्मीद बनती है।

हज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह

वसल्लम से शिकायत की कि कुरैश जब आपस में गुफ़्तगू कर रहे होते हैं और हम (इस दरमियान) जब उनसे मिलते तो वो गुफ़्तगू बन्द कर देते और ख़ामोश हो जाते तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि किसी शख़्स के दिल में उस वक़्त तक ईमान दाख़िल नही हो सकता जब तक कि अल्लाह तआ़ला के लिये और मेरी क़राबत की वजह से मेरे अहले बैत से मुहब्बत न करे।
(इब्ने माजा–1/80) (तिर्मिज़ी–2/727)

हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का बयान है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की रज़ा मन्दी और खुशनूदी अहले बैत की मुहब्बत में है।
(सही बुख़ारी–2/424,433)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह ने फ़रमाया– कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसकी जान से ज़्यादा महबूब तर न हो जाऊँ और मेरे अहले बैत उसे उसके अहले खाना से ज़्यादा महबूब तर न हो जाँयें और मेरी औलाद उसे अपनी औलाद से ज़्यादा महबूब न हो जाये और मेरी ज़ात उसे अपनी ज़ात से ज़्यादा महबूब तर हो जाये। (मुअ़जम कबीर– तबरानी–7/70) (शुअ़बुल ईमान–2/189) (मजमउज़्ज़वाइद–1/88) (अल फ़िरदौस–5/154)

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम
-: के मनाक़िब :-

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ज़ाते अक़्दस से ख़िलाफ़ते बातिनी और विलायत का सरचश्मा फूटा जो अहले बैत अतहार को अ़ता हुआ जो बाद में वियालत व इमामत के नाम से मौसूम हुआ हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपना नायबे विलायत हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) को मुक़र्रर किया और हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुम) बिलायते अ़ली की नूरानी शमां के दो मुख़्तलिफ़ चेहरे और हज़रत मौला अ़ली के नायबे बिलायत हैं हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम से ही कुतबियत मुजद्दियत ग़ौसियत, अ़ब्दालियत के चश्मे फूटे जिससे उम्मत के मोमिनीन व औलिया व सालिहीन फ़ैज़याब हुये और बिलायत का ये सिलसिला हज़रत मेंहदी (अ़लैहस्सलाम) पर ख़त्म होगा।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) की फ़ज़ीलत में जितनी अहादीस मुबारका वारिद हैं किसी दीगर सहाबा की फ़ज़ीलत में इतनी अहादीस वारिद नहीं हैं आप के ज़ाते पाक को वो मक़ामो मन्ज़िलत और ऐज़ाज़ हासिल हुआ जो दीगर सहाबा को हासिल न था आप आला मरतबत व पाकीज़ा सीरतो किरदार के हामिल थे आप की फ़ज़ीलत में बेशुमार अहादीस मन्कूल हैं जिनमें से बाज़ का तज़किरा दर्जे ज़ैल है मुलाहिज़ा फ़रमायें।

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह

वसल्लम ने ग़दीरे खुम पर क़याम किया और हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का हाथ पकड़कर फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है। (तिर्मिज़ी-2/710) (मिश्कात-3/243) (ग़दीरे खुम मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के दरमियान एक जगह का नाम है)

हज़रत अबू हुरैरा (रजिअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ग़दीरे खुम का दिन था जब नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया- जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है।

इस मौक़े पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई-कि आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दीं और तुम्हारे लिये (बतौर) दीन इस्लाम पसन्द कर लिया। (सू०-मायदा-5/3) (इमाम जलालुद्दीन सयूती-दुर्रे मन्सूर-2/708) (इब्ने कसीर-अल विदाया वन निहाया-5/464) (इब्ने असाकर-तारीख़ दमिश्क़-45/176)
(मुअ़जम औसत-तबरानी-3/324)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है ये आयते मुबारका-कि ऐ रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब के जानिब से नाज़िल किया गया (वो सारा लोगों को) पहुँचा दीजिये (सू०-मायदा-5/67) हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई इस आयत का शाने नुजूल

बयान करते हुये फ़रमाते हैं कि ये आयते मुबारका जब नाज़िल हुई तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ा और फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और उससे अ़दावत रख जो अ़ली से अ़दावत रखे। (दुर्रे मन्सूर–2/817) (तफ़सीर कबीर–12/49,50) (तफ़सीर मज़हरी–3/152)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने ग़दीरे खुम के मक़ाम पर ख़िताब किया और फ़रमाया– जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू उसे दोस्त रख जो अ़ली से अ़दावत रखे तू उससे अ़दावत रख और जो अ़ली की नुसरत (मदद) करे तू उसकी नुसरत फ़रमां और जो अ़ली की इआ़नत करे तू उसकी इआ़नत फ़रमां। (कंजुल उ़म्माल–11/609) (मुअ़जम कबीर–तबरानी–5/192 (अलविदाया वन निहाया–4/170) (मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/104)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का हाथ पकड़ा और फ़रमाया अ़ली हर उस शख़्स का दोस्त है जो मुझे दोस्त रखता है नीज़ फ़रमाया– ऐ अल्लाह तू उसको दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखता है। (इब्ने माजा–1/72)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाद अ़ली हर मोमिन का वली है। (तिर्मिज़ी-2/710)

मज़कूरा हदीस पाक इस बात पर दलालत करती है कि कोई हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (अ़लैहस्सलाम) को हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से जुदा गुमान न करे हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम का अदबो एहतराम व ताज़ीमो तकरीम गोया ताज़ीमे मुस्तफ़ा है और हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की तनक़ीस गोया तनक़ीसे मुस्तफ़ा है और हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा का ज़िक्र ज़िक्रे मुस्तफ़ा है और ज़िक्रे मुस्तफ़ा दरअस्ल ज़िक्रे खुदा है और हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) से मुहब्बत गोया हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से मुहब्बत की अ़लामत है और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से मुहब्बत अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत की अ़लामत है और मौला अ़ली शेरे खुदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का मुहिब मेहबूबे मुस्तफ़ा है और मेहबूबे मुस्तफ़ा मेहबूबे खुदा है और हज़रत अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) का दुश्मन दरअस्ल दुश्मने रसूल है और दुश्मने रसूल दरअस्ल दुश्मने खुदा है और तमाम दुश्मने रसूल क़ाबिले लानत और जहन्नुम के अहल और अ़ज़ाबे नार के मुस्तहिक़ हैं।

हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया- जो मुझ पर ईमान लाया और मेरी तसदीक़ की मैं उसे विलायते अ़ली की वसीअ़त करता हूँ जिसने अ़ली को वली

जाना उसने मुझे वली जाना और जिसने मुझे वली जाना उसने अल्लाह को वली जाना और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह से बुग्ज़ रखा। (कंजुल ड़म्माल–11/611)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/108,109)
(मुस्नद अल फ़िरदौस–1/429)
(तारीख़ दमिश्क़–40/181,182)

विलायते अ़ली के फ़ैज़ के बग़ैर न कोई ग़ौस हो सका न कोई कुतुब और न कोई अ़ब्दाल हो सका विलायत, ग़ौसियत, इमामत, कुतबियत, अ़ब्दालियत सब विलायते अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के फ़ैज़ से हैं और आपकी सीरते पाक तमाम मुसलमानों के लिये बेहतरीन राहे हिदायत का नमूना है

एक मर्तबा चार असहाब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुये उनमें से एक ने हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) की शिकायत करते हुये अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या आपने नहीं देखा कि हज़रत अ़ली ने ऐसा किया आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उससे मुँह फेर लिया फिर दूसरा उठा उसने भी हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में यही कहा आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उससे भी मुँह फेर लिया फिर इसी तरह तीसरे और चौथे शख़्स ने भी उठकर हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में वो ही बात दोहराई फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम उनकी तरफ़ मुतवज्जै हुये और आप

सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के चेहरे मुबारक से गुस्सा ज़ाहिर हो रहा था आप ने फ़रमाया कि तुम अली से क्या चाहते हो (ये तीन मर्तबा फ़रमाया) फिर इरशाद फ़रमाया– अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और वो मेरे बाद हर मोमिन का वली है। (तिर्मिज़ी–2/710)

वज़ाहतः– मज़कूरा हदीस पाक में हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम की शिकायत पर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का चेहरा मुबारक मुताग़इयर हो जाना और उस पर गुस्से का ज़ाहिर होना और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का उन शिकायत करने वाले असहाब से मुँह फेरना और आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम का ये इरशाद फ़रमाना कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि तुम जो हज़रत अ़ली की शिकायत करते हो तो गोया तुम मेरी (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की शिकायत करते हो क्योंकि जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमां दिया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ तो हज़रत मौला अ़ली की शिकायत करना गोया हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शिकायत करना है और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का मज़कूरा अहादीस में दूसरा फ़रमान कि मेरे बाद अ़ली हर मोमिन का वली है यानी जो हज़रत मौला अली की विलायत का मुन्किर है वो मोमिन ही नहीं बल्कि मुनाफ़िक़ है हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के बेशुमार फ़ज़ाइल व मरातिब हैं जिनका शुमार और मुवाज़िना करना ना मुमकिन है।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम फ़रमाया करते थे कि किसी मुनाफ़िक़ की हज़रत अ़ली से मुहब्बत नहीं हो सकती और कोई मोमिन हज़रत अ़ली से बुग्ज़ नहीं रख सकता। (तिर्मिज़ी–2/712)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने मुझसे अ़हद फ़रमाया कि तुझसे मोमिन ही मुहब्बत करेगा और तुझसे बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ ही होगा। (इब्ने माजा–1/72) (तिर्मिज़ी–2/718)

उस ज़माने में सहाबाकिराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) मुनाफ़िक़ों और मोमिनों की पहचान इस तरह किया करते थे कि जिसके चेहरे पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) के नाम से मरोड़ व सिकुड़न आ जाये तो वो मुनाफ़िक़ है और जिसका चेहरा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) के नाम से खुशी और मशर्रत से खिल उठे वो मोमिन है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– हज़रत अ़ली का मेरे साथ तआ़ल्लुक़ इस तरह से है जिस तरह हारून (अ़लैहस्सलाम) का मूसा (अ़लैहस्सलाम) के साथ तआ़ल्लुक़ है अलबत्ता मेरे बाद नबूवत नहीं। (सही बुख़ारी–1/526)

हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ग़ज़बये तबूक को तशरीफ़ ले जा रहे थे तो

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहुल करीम को मदीना मुनव्वरा का ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत मौला अ़ली ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप मुझे औ़रतों और बच्चों में छोड़े जाते हैं आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसे हारून अ़लैहस्सलाम का दर्जा मूसा अ़लैहस्सलाम के नज़दीक था पर मेरे बाद कोई नबी नहीं। (सही मुस्लिम–6/90)

वज़ाहतः–हज़रत हारून अ़लैहस्सलाम मूसा अ़लैहस्सलाम के चचा ज़ाद भाई थे और हज़रत मौला अ़ली हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के चचा ज़ाद भाई थे जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ग़ज़वये तबूक पर जाने के लिये तैयार थे उस वक़्त आपने ये इरशाद फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसे हारून अ़लैहस्सलाम का मूसा अ़लैहस्सलाम के नज़दीक था इस इरशादे मुबारक से हज़रत मौला अ़ली(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को वो शरफ़ (मर्तबा) मिला जो बनी ईसराईल में हारून अ़लैहससलाम को मिला था मगर फ़र्क़ इतना था कि हारून अ़लैहस्सलाम नबी हैं और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ख़ातिमुल अम्बिया हैं आपके बाद कोई पैग़म्बर दुनियाँ में नहीं आना था।

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ग़ज़वये तबूक पर जाने लगे तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) को मदीना मुनव्वरा का ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत मौला अ़ली ने अ़र्ज़ किया कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) मुझे अपने साथ ग़ज़वये

तबूक पर नहीं ले जा रहे बल्कि औ़रतों और बच्चों की देखभाल व हिफ़ाज़त के लिये मदीने में छोड़े जा रहे हैं तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं कि तुम्हारा मेरे साथ तअ़ाल्लुक़ इस तरह है जिस तरह हारून अ़लैहस्सलाम का मूसा अ़लैहस्सलाम के साथ तअ़ाल्लुक़ था जब हज़रत मूसा अ़लैहस्सलाम कोहे तूर पर गये तो हज़रत हारून अ़लैहस्सलाम को अपना ख़लीफ़ा बना गये थे लेकिन इस हदीस ये मुराद नहीं कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के विसाल के बाद भी आप ख़लीफ़ा होंगे बल्कि हज़रत मौला अ़ली को आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने वक़्ती तौर पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया था ग़रज़ ये कि जो क़राबत हारून अ़लैहस्सलाम को मूसा अ़लैहस्सलाम से थी उससे कई गुना ज़्यादा क़राबत हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा को हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से थी।

साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मुअ़ाविया बिन अबू सुफ़ियान ने साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) को हुक्म दिया और पूछा कि तुम अबू तुराब (हज़रत अ़ली मुर्तज़ा) को बुरा क्यों नहीं कहते हज़रत साद रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने कहा कि मैं तीन बातों की वजह से हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) को बुरा नहीं कहूँगा जो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाई थीं मैंने सुना है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली से ग़ज़बये तबूक पर जाते वक़्त मुख़ातिब होकर फ़रमाया ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा दर्ज़ा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसे हारून अ़लैहस्सलाम का मूसा

अ़लैहस्सलाम के नज़दीक था पर मेरे बाद कोई नबी नहीं और मैंने सुना है ख़ैबर के दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कल मैं ऐसे शख़्स को झण्डा दूँगा जो मुहब्बत रखता है अल्लाह और उसके रसूल से और अल्लाह और उसका रसूल भी उससे मुहब्बत रखते हैं और उसके हाथों पर अल्लाह तआ़ला फ़तह देगा ये सुनकर हम इंतिज़ार करते रहे फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया अ़ली को बुलाओ फिर हज़रत अ़ली आये तो उनकी आँखें दुख्ती थीं हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत अ़ली की आँखों पर अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया (पस उनकी आँखों की तमाम तकलीफ़े ख़त्म हो गईं) फिर हज़रत मौला अ़ली को झण्डा दिया गया और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अ़ली के हाथ पर फ़तह दी और मैंने सुना है जब ये आयत नाज़िल हुई कि बुलायें हम अपने बेटों को और बुलाओ तुम अपने बेटों को.. ......(आयते मुहाबला) तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत अ़ली, सइयदा फ़ातिमा और हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) को बुलाया और फ़रमाया ऐ अल्लाह ये मेरे अहले बैत है।
(सही मुस्लिम–6/91) (तिर्मिज़ी–2/714)
(अबू तुराब हज़रत मौला अ़ली की कुन्नियत है)

तसरीहः– मज़कूरा हदीस मुबारका से कई बातें वाज़ेह हुईं हैं एक ये कि अल्लाह व रसूल और हज़रत अ़ली की बाहमी मुहब्बत व क़राबत इस बात पर दलालत करती है कि हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम मरतबत के आ़ला मक़ामो मन्ज़िलत पर फ़ाइज़ थे और दूसरी बात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इ़ल्मे ग़ैब को साबित करती है कि आप

सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ये फ़रमाना कि कल मैं उस शख़्स को झण्डा अ़ता करूँगा जिसके हाथों पर अल्लाह तआ़ला फ़तह देगा ये आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इ़ल्मे ग़ैब पर दलालत करता है।

तीसरी बात ये कि जब आयते मुहाबला नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अब्नाअना में हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) को और निसाअना में सिर्फ़ सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को और अन्फुसाना में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपने साथ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को शामिल किया और फ़रमाया ये मेरे अहले बैत हैं आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इस फ़रमाने मुबारक ने लोगों के अहले बैत के मुताअ़ल्लिक़ मुग़ालते की नफ़ी कर दी कि कोई शख़्स अ़ली, फ़ातिमा, हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को मेरे अहले बैत से जुदा गुमान न करे बल्कि मेरे अहले बैत में हज़रत मौला अ़ली सइयदा फ़ातिमा और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) अ़ाला दरजात के मन्सब पर फाइज़ है।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ अ़ली तू दुनियाँ व आख़िरत में सरदार है तेरा महबूब मेरा महबूब है और मेरा महबूब अल्लाह का महबूब है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह का दुश्मन है और उसके लिये हलाकत (बर्बादी) है जो मेरे बाद तुम्हारे साथ बुग्ज़ रखे (मुस्तदरक हाकिम-3/138)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से फ़रमाया ये अ़ली बिन अबू तालिब हैं इनका गोस्त मेरा गोस्त है और इनका खून मेरा खून है। (मुअ़जम कबीर–तबरानी–11/93) (मजमउज़्ज़वाइद–9/102)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला अ़ली पर रहम फ़रमाये नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह अ़ली जिधर को रुख करें हक़ का रूख भी उधर को हो जाये। (तिर्मिज़ी–2/712)

हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम हक़ व हिदायत के कामिल व बेहतरीन नमूना थे आप ने कभी हक़ व हिदायत का और हक़ व हिदायत ने कभी आपका साथ न छोड़ा जिस तरह रूह और जिस्म का मज़बूत बाहमी तआ़ल्लुक़ होता है उसी तरह हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का हक़ व हिदायत से मज़बूत बाहमी तआ़ल्लुक़ था और ये सारा फ़ैज़ दुआ़ये मुस्तफ़ा के असर व निस्बते मुस्तफ़ा से था।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने सहाबाकिराम के दरमियान भाई चारा क़ायम कराया तो हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) इस हालत में हाज़िर हुये कि आपकी आँखों से आँसू जारी थे आकर अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपने सहाबा के दरमियान भाई चारा

क़ायम फ़रमाया लेकिन मुझे किसी का भाई नहीं बनाया आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अ़ली तुम दुनियाँ व आख़िरत में मेरे भाई हो।
(तिर्मिज़ी–2/713)

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (अ़लैहस्सलाम) को अपना भाई क़रार दिया और दुनियाँ व आख़िरत में आप इस अज़ीम मरतबत से बहरेयाब हुये।

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के पास एक पका हुआ परिन्दा रखा था आपने दुआ़ माँगी ऐ अल्लाह मख़्लूक़ में से अपने महबूब तरीन शख़्स को मेरे पास भेज ताकि वो मेरे साथ ये परिन्दा खाये इतने में हज़रत मौला अ़ली हाज़िर हुये फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के साथ परिन्दा खाया। (तिर्मिज़ी–2/713)

हज़रत अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है मौला अ़ली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहुल करीम ने फ़रमाया– जब मैं कुछ माँगता हूँ तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मुझे अ़ता फ़रमाते हैं और अगर मैं ख़ामोश रहता हूँ तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मुझसे इब्तिदा फ़रमाते हैं (यानी आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हज़रत अ़ली से खुद पूछते और बग़ैर सवाल के अ़ता फ़रमाते) (तिर्मिज़ी–2/713)

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने तॉयफ़ के दिन हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को बुलाया और उनसे सरगोशी (कानाफूसी) की तो लोगों ने कहा हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की अपने चचाज़ाद भाई के साथ सरगोशी तवील हो गई तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मैंने अ़ली से सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह तआ़ला ने अ़ली से सरगोशी फ़रमाई है (यानी अल्लाह तआ़ला के हुक्म से मैने सरगोशी की है) (तिर्मिज़ी–2/715)

हज़रत उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने एक लश्कर भेजा जिसमें हज़रत अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) भी थे मैने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को हाथ उठाये दुआ़ माँगते हुये सुना था ऐ अल्लाह उस वक़्त तक मेरा विसाल न हो जब तक तू मुझे अ़ली को न दिखा दे।
(तिर्मिज़ी–2/719)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) की जुदाई में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ये दुआ़ फ़रमाना इंतिहाई मुहब्बत की अ़लामत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को हज़रत मौला अ़ली से बेहद मुहब्बत थी और हज़रत मौला अ़ली को भी हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बेइंतिहा मुहब्बत थी हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम अल्लाह व रसूल के मुहिब भी थे और मेहबूब भी थे।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के दरवाज़े के सिवा तमाम दरवाज़े बन्द करने का हुक्म दिया। (जो मस्जिदे नबवी में खुलते थे)
(तिर्मिज़ी–2/717)

हज़रत इमाम हसन बिन अ़ली (अ़लैहिमुस्सलाम) ने खुत्बा दिया और फ़रमाया– गुज़िश्ता कल तुमसे वो हस्ती जुदा हो गई जिनसे न तो गुज़िश्ता लोग इ़ल्म में सबक़त ले सके और न ही बाद में आने वाले उनके इ़ल्मी मर्तबे को पा सकेंगे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम उनको अपना झण्डा देकर भेजते थे और जिबराईल आपकी दाँयी तरफ़ होते थे और मीकाईल आपकी बाँयी तरफ़ होते थे और आपकी फ़तह होने तक वो आपके साथ रहते थे। (मुस्नद अहमद–1/199) (मुअ़जम औसत– तबरानी–2/336)

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि ग़जबये ख़ैबर के दिन हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) ने क़िला ख़ैबर का दरवाज़ा उठा लिया यहाँ तक कि मुसलमान क़िले पर चढ़ गये और उसे फ़तह कर लिया हालाँकि उस दरवाज़े को चालीस आदमी मिलकर उठाते थे। (इमाम अशक़लानी– फ़तहुल बारी–7/478) (इमाम इब्ने अ़ली शैबा– अल मुसन्निफ़–6/347)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– मैं इ़ल्म का शहर हूँ और अ़ली

उसका दरवाज़ा है लिहाजा जो इस शहर में दाख़िल होना चाहता है वो बाबे अ़ली से आये। (मुस्तदरक हाकिम–3/126,127) (मजमउज़्ज़वाइद–9/114) (अल फ़िरदौस–1/44) (मुअ़जम कबीर– तबरानी–11/55)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (करमल्लाहु वजहुल करीम) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– मै हिकमत का घर हूँ और अ़ली उसका दरवाज़ा है। (तिर्मिज़ी–2/714)

जो शख़्स हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बारगाहे अक़दस से इ़ल्मो माअ़रफत से फ़ैज़याब होने का तालिब हो तो उसे बाबे अ़ली से गुज़रना होगा बाबे अ़ली से गुज़रे बग़ैर बारगाहे मुस्तफ़ा से कोई फ़ैज़याब नहीं हो सकता और बाबे अ़ली अहले बैत अतहार की सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत से खुलता है और अल्लाह तअ़ाला की कुर्बत व रसाई और फ़ज़्लो करम का हुसूल नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत अतहार की मुहब्बत से है।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है। (मुस्तदरक हाकिम–3/102—ह0—4737) (अल फ़िरदौस–4/294)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैने अपने वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) को देखा कि वो कसरत से हज़रत अ़ली के

चेहरे को देखा करते थे तो मैने आपसे पूछा कि ऐ अब्बाजान क्या वजह है कि आप कसरत से हज़रत अ़ली के चेहरे की तरफ़ देखते रहते हैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने जवाब दिया कि ऐ मेरी बेटी मैने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है।
(इब्ने असाकर–तारीख़ दमिश्क़–42/355)

हज़रत तलीक़ बिन मुहम्मद बयान करते है कि मैने हज़रत इ़मरान बिन हसीन को देखा कि वो हज़रत अ़ली को टकटकी बाँधे देख रहे थे किसी ने उनसे पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि मैने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना कि हज़रत अ़ली की तरफ़ देखना भी इ़बादत है। (मजमउज़्ज़वाइद–9/109)
(मुअ़जम कबीर–तबरानी–18/109)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि अ़ली का ज़िक्र भी इ़बादत है। (अल फ़िरदौस–2/244)
(कंजुल उ़म्माल–11/601)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ली और कुरान का चोली दामन का साथ है ये दोनों कभी भी जुदा न होंगे यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े कौसर पर (भी इकट्ठे) आयेंगे। (मुस्तदरक हाकिम–3/134)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/134)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि ये आयात- बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये तो रहमान उनके लिये (लोगों के) दिलों में मुहब्बत पैदा फ़रमां देगा- (सू०-मरयम-19/96) ये आयते करीमा हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की शान में उतरी और इससे मुराद मोमिनीन के दिलों में हज़रत अ़ली की मुहब्बत डालना है। (तफ़्सीर कुरतबी-6/153) (मजमउज़्ज़वाइद-9/125)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि ये आयत हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम के हक़ में नाज़िल हुई यानी मोमिनीन के दिलों में हज़रत मौला अ़ली की मुहब्बत डाल दी। (दुर्रे मन्सूर-4/747) (तफ़्सीर मज़हरी-6/161)

इमाम अ़ब्दुल रज़्ज़ाक ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास से रिवायत किया है कि इस आयत से मुराद दुनियाँ में मोमिनीन के दिलों में हज़रत मौला अ़ली की मुहब्बत पैदा करना है। (तफ़्सीर अब्दुल रज़्ज़ाक-2/367) (दुर्रे मन्सूर-4/748)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा की शान बा जुबाने कुरान- वो जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे हुये और ज़ाहिर (सू०-बक़राह-274)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि ये आयत हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के हक़ मे नाज़िल हुई आपके पास चार दिरहम थे आपने एक दिरहम रात

को एक दिरहम दिन को और एक दिरहम खुफ़िया और एक दिरहम ऐलानियाँ ख़र्च किया।
(दुर्रे मन्सूर–1/936) (तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास–1/165) (तफ़्सीर इब्ने कसीर–1/384)(तफ़्सीर मज़हरी–1/539) (तफ़्सीर कुरतबी–2/419)

कुरान मजीद की सूरह तहरीम में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) को सालिहुल मोमिनीन फ़रमाया–

तो बेशक अल्लाह ही उनका दोस्त व मददगार है और जिबरईल और सालिहुल मोमिनीन (नेक ईमान वाले) और फ़रिश्ते उनके मददगार हैं। (सू०–तहरीम–4)

मुफ़स्सिरीनेकिराम इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि सालिहुल मोमिनीन से मुराद हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) हैं।
(तफ़्सीर इब्ने कसीर– 28/566)

हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस (रजिअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि मैनें नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि सालिहुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) हैं।
(दुर्रे मन्सूर–6/643) (तफ़्सीर कुरतबी–9/504)

इमाम इब्ने असाकर (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से बयान किया है कि सालिहुल मोमिनीन से मुराद हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) हैं।
(तारीख़ इब्ने असाकर–42/361) (दुर्रे मन्सूर–6/643)

-: ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा के मनाक़िब :-

हज़रत सइयदा फ़ातिमा अ़लैहस्सलाम ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल व आला हैं और कायनात की तमाम औ़रतों की सरदार हैं अल्लाह तआ़ला ने इन्हे ख़ास इनायात व सिफ़ात से नवाज़ा है पूरी इन्सानी कायनात में किसी को हूर का लक़ब अ़ता नहीं हुआ आप ख़ास इनायात व सिफ़ात व ऐज़ाज़ की बुनियाद पर ख़ास अ़ज़मतों की हामिल थीं आप आ़बिदा, ज़ाहिदा, ताहिरा, शाकिरा व साबिरा और रब की रज़ा पर राज़ी रहने वाली बेमिस्ल पाकीज़ा ख़ातून थीं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की नूरे नज़र उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीज़ातुल कुबरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की लख़्ते जिगर हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) की जोज़ा और हसनैन करीमैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) की माँ और तमाम ख़वातीने जन्नत की सरदार हैं।

अल्लाह तआ़ला ने सइयदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को वो एज़ाज़ और बुलन्द मक़ामो मरतब से नवाज़ा जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं और किसी दूसरी ख़ातून को ये शरफ़ हासिल न हुआ आपकी खुसूसियात में से ये भी है कि आपका निकाह अ़र्शे आज़म पर मुनक़्क़िद हुआ और आप मासूमीन की फ़ेहरिस्त व आसमानी शाख़्सियतों के ज़ुमरे में शामिल हैं सरवरे कायनात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को अपनी सबसे प्यारी व लाडली बेटी सइयदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से बेहद मुहब्बत थी और इस मुहब्बत का अंदाज़ जुदागाना था हुज़ूर

सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सइयदा फ़ातिमा अ़लैहस्सलाम का रिश्ता सिर्फ़ बाप और बेटी का रिश्ता न था बल्कि हुक्मे इलाही से उम्मत के मुस्तक़बिल व हक़ व हिदायत और इमामत व क़ियादत (रहनुमाई) और रहबरी से मुन्सलिक है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से फ़रमाया– ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम मेरी उम्मत की तमाम औ़रतों की सरदार हो। (सही मुस्लिम–6/121)

हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा ने मुझसे पूछा कि तुमने कब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से मुलाक़ात की थी मैने कहा कि इतनी मुद्दत से मैं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से नहीं मिल सका ये सुनकर वो रंज़ीदा हुईं तो मैंने अ़र्ज़ किया कि मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ूँ और तुम्हारे और अपने लिये दुआ़ये मग़फ़िरत कराऊँ पस मैं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के साथ नमाज़े मग़रिब अदा की यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने नमाज़े इशां अदा फ़रमाई और चल पड़े मैं भी आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के पीछे चल पड़ा मेरी आहट सुनकर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कौन हुज़ैफ़ा है मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ आप

सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तुझे क्या काम है अल्लाह तुझे और तेरी माँ को बख़्श दे फिर फ़रमाया यह एक फ़रिश्ता है जो आज रात से पहले कभी नहीं उतरा इसने अपने रब से इजाज़त माँगकर मुझे सलाम करने और मुझे ये खुशख़बरी देने के लिये हाज़िर हुआ है कि फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) तमाम जन्नती औ़रतों की सरदार हैं और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) तमाम जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं। (तिर्मिज़ी–2/734)

तसरीहः– मज़कूरा हदीस पाक से कई बातें वाज़ेह हुईं हैं कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अपनी और अपनी वालिदा की दुआ़ये मग़फ़िरत के इरादे से नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये थे लेकिन हज़रत हुज़ैफ़ा के (दुआ़ये मग़फ़िरत) अ़र्ज़ करने से क़ब्ल सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ये फ़रमाना कि ऐ हुज़ैफ़ा अल्लाह तआ़ला तुझे और तेरी माँ को बख़्श दे आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ये इरशादे मुबारक आपके इ़ल्मे ग़ैब पर दलालत करता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इ़ल्मे ग़ैब में ये बात थी कि हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) किस इरादे से मेरे पास आये हैं।

दूसरी बात ये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर सलाम पढ़ने पर लगने वाले एतराज़ात की नफ़ी कर दी कि जब मलाइका (फ़रिश्ते) इज़्ने खुदा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को सलाम अ़र्ज़ करने की ग़रज़ से आते हैं तो हम मुसलमान अपने प्यारे आक़ा ताजदारे मदीना रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु

अ़लैह वसल्लम पर सलाम भेजते हैं तो बाज़ लोगों को क्यों तकलीफ़ होती है और सलाम पढ़ने पर एतराज़ात लगाते हैं हालाँकि उनके तमाम एतराज़ात बे बुनियाद और बद अ़क़ीदगी और उनके बे-ईमान होने पर दलालत करते हैं।

तीसरी बात ये कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्ते के ज़रिये अपने महबूब तक ये पैग़ाम और खुशख़बरी भेजी कि ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) तमाम ख़वातीने जन्नत की सरदार हैं और हसनैन करीमैन (अ़लैहिमुस्सलाम) तमाम जवानाने जन्नत के सरदार हैं बल्कि हक़ीक़त ये है कि हसनैन करीमैन तमाम जन्नती मर्दों के सरदार हैं क्योंकि हदीस पाक में है कि जन्नत में कोई भी मर्द व औ़रत बूढ़ा नहीं होगा यानी सब जवान होंगे और तीस साल की उ़म्र के होंगे और हमेशा इसी उ़म्र में रहेंगे और न कभी उनकी जवानी ख़त्म होगी।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- फ़ातिमा मेरे जिगर का टुकड़ा है उसकी तकलीफ़ मेरी तकलीफ़ है और जो चीज़ उसे अज़्ज़ियत दे वो मेरे लिये भी अज़्ज़ियतनाक है (तिर्मिज़ी-2/763)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- फ़ातिमा मेरे जिस्म का हिस्सा है जिसने फ़ातिमा को गुस्सा दिलाया उसने मुझे गुस्सा दिलाया। (सही बुख़ारी-2/424)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- बेशक फ़ातिमा मेरी शाख़े समरबार है जिस

चीज़ से उसे खुशी होती है उस चीज़ से मुझे भी खुशी होती है और जिस चीज़ से उसे तकलीफ़ पहुँचती है उस चीज़ से मुझे भी तकलीफ़ पहुँचती है।
(मुस्तदरक हाकिम–3/168) (मुस्नद अहमद–4/332)

खा़तूने जन्नत सइयदा फा़तिमा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत का यह एक अलग अंदाज़ है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने सइयदा फा़तिमा को अपने जिस्म अक़दस का एक जुज़ और जिगर का टुकड़ा कहा और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ये फ़रमाना कि फा़तिमा की हर तकलीफ़ गोया मेरी तकलीफ़ है और फा़तिमा (अ़लैहस्सलाम) को गुस्सा दिलाना और उन्हें नाराज़ करना गोया मुझ (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) को गुस्सा दिलाना और नाराज़ करना है और सइयदा फा़तिमा को जो चीज़ खुशी पहुँचाती है वो चीज़ मुझे भी खुशी पहुँचाती है और ये हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और सइयदा फा़तिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के दरमियान एक अनोखी और बे मिस्ल बाहमी मुहब्बत है जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं है और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तकलीफ़ व नाराज़गी दरअस्ल अल्लाह तअ़ाला की नाराज़गी और गज़ब का बाइस है।

हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने सइयदा फा़तिमा से फ़रमाया– बेश्क अल्लाह तअ़ाला तेरी नाराज़गी पर नाराज़ होता है और तेरी रज़ा पर राज़ी होता है। (मुअ़जम कबीर–तबरानी–1/108)
(मुस्तदरक हाकिम–3/167)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम जब सफ़र का इरादा फ़रमाते तो अपने अहल व अ़याल में सबसे आख़िर में सइयदा फ़ातिमा से गुफ़्तगू फ़रमाकर सफ़र पर र'वाना होते और सफ़र से बापसी पर सबसे पहले सइयदा फ़ातिमा के पास तशरीफ़ लाते और फ़रमाते- ऐ फ़ातिमा मेरे माँ बाप तुझ पर कुर्बान हों।
(इब्ने असाकर–तारीख़ दमिश्क़–43/141)
(हाकिम- अल मुस्तदरक–3/169,170)

तमाम सहाबाकिराम का ये मालूम था कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते और कुछ अ़र्ज़ करते तो कहते कि या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों मगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के नज़दीक सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) की क़दरो मन्ज़िलत व ऐज़ाज़ का वो बुलन्द मक़ाम था कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अपनी लख़्ते जिगर ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा से फ़रमाते ऐ फ़ातिमा मेरे माँ बाप तुझ पर कुर्बान हों।

हज़रत मौला अ़ली (करमल्लाहु वजहुल करीम) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- मेरे पास एक फ़रिश्ते ने आकर अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह अल्लाह तआ़ला ने आप पर सलाम भेजा और फ़रमाया कि मैने आपकी बेटी फ़ातिमा का निकाह माला-ए-आला (अ़र्शे आज़म) पर अ़ली बिन अबू तालिब से कर दिया है पस आप ज़मीन पर फ़ातिमा का निकाह अ़ली से कर दें।
(मुहिब्बे तबरी–1/73)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म फ़रमाया है कि फ़ातिमा का निकाह अ़ली से कर दूँ। (मजमउज़्ज़वाइद–9/204)
(मुअ़जम कबीर–तबरानी–10/156)

सइयदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा की शानो अ़ज़मत का ये आ़लम कि आपको ये शरफ़े अ़ज़ीम हासिल हुआ है कि आपका निकाह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अ़र्शे आज़म पर मुनक़्क़िद किया और आपके मजलिसे निकाह में (40) चालीस हज़ार फ़रिश्तों ने शिर्कत की फिर हुक्मे खुदा से ज़मीन पर आपका निकाह हज़रत मौला अ़ली से हुआ।

हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरी बेटी फ़ातिमा क़यामत के दिन इस तरह उठेगी कि उस पर इज़्ज़त का जोड़ा होगा जिसे आवे हयात में धोया गया होगा सारी मख़लूक़ उसे देखकर दंग रह जायेगी फिर उसे जन्नत का लिबास पहनाया जायेगा जिसका हर हुल्ला (जन्नती लिबास) हज़ार हुल्लों पर मुशतमिल होगा और हर एक पर सब्ज़ ख़त से लिखा होगा मेरी बेटी फ़ातिमा को अहसन (बहुत अच्छी, बहुत खूब) सूरत व अकमल (बड़ी कामिल, निहायत माहिरे फ़न) व तमाम तर करामत और इज़्ज़त के साथ दुल्हन की तरह सजाकर सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में जन्नत में ले जाया जायेगा। (मुहिब्ब तबरी–95)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा करमल्लाहु वजहुल करीम से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- क़यामत के दिन मुझे बुर्राक पर और मेरी बेटी फातिमा को मेरी सवारी उ़ज़बा पर बिठाया जायेगा (तारीख़ दमिश्क़-10/353)

रोज़े क़यामत अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हज़रत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (अ़लैहस्सलाम) को वो बुलन्द मक़ाम व इ़ज़्ज़तो इकराम से सरफ़राज़ फ़रमायेगा कि अम्बियाकिराम भी उन्हें देखकर रश्क करेंगे रोज़े क़यामत हुक्मे खुदा होगा कि ऐ महशर वालो अपनी निगाहें और सरों को झुका लो ताकि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) गुज़र जाये और आप दो सब्ज़ चादरों में लिपटी हुई सत्तर हज़ार हूरों के झुरमुट में गुज़र जायेंगीं।

हज़रत अबू अइयूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रोज़े क़यामत अ़र्श की गहराइयों से एक निदा देने वाला आवाज़ देगा कि ऐ महशर वालों अपने सरों को झुकालो और अपनी निगाहें नीची कर लो ताकि फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) पुल सिरात से गुज़र जायें पस आप सत्तर हज़ार ख़ादिमा हूरों के साथ गुज़रेंगी। (मुहिब्बे तबरी-1/94) (कंजुल उ़म्माल-12/105)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है फ़रमाती हैं कि मैने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की साहबज़ादी ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा से बढ़कर किसी को आदात हसन सीरत व किरदार और वक़ार

व उठने बैठने में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के मुशाबा नही देखा नीज़ फ़रमातीं हैं जब फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) तशरीफ़ लातीं तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम (उनके इस्तक़बाल के लिये) खड़े हो जाते और उन्हें चूमते फिर उन्हें अपनी जगह बिठाते और जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम सइयदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के यहाँ तशरीफ़ ले जाते तो सइयदा फ़ातिमा (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इस्तक़बाल के लिये) खड़ी हो जातीं और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को चूमती और अपनी जगह बिठाती जब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अ़लील (बीमार) हुये तो सइयदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) हाज़िर हुईं और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर झुक गईं आप का बोसा लिया फिर सर उठाया और रो पड़ीं फिर दोबारा झुकीं और सर उठाया तो हंस रही थीं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के विसाल के बाद मैंने उनसे पूछा कि बताओ कि जब आप हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर पहली बार झुकीं और सर उठाया तो आप रो रहीं थीं फिर दोबारा झुककर सर उठाया तो हंस रहीं थीं इसकी क्या वजह है तो आपने फ़रमाया—मुझे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने बताया कि इसी मर्ज़ में मेरा विसाल होगा तो मैं रो पड़ी फिर बताया अहले बैत में सबसे पहले तुम मुझसे मिलोगी ये सुनकर मैं हंस पड़ी। (तिर्मिज़ी–2/765) (सही बुख़ारी–2/424)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) रिवायत करती हैं कि जब सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (अ़लैहस्सलाम) अपनी मरजुल मौत में मुब्तिला हुईं तो मैं उनकी तीमारदारी किया करती थी बीमारी के इस

पूरे अ़र्से के दौरान जहाँ तक मैंने देखा कि एक दिन सुबह उनकी हालत बेहतर थी और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) किसी काम से बाहर गये थे सइयदा फ़ातिमा ज़हरा ने कहा ऐ अम्मा (उम्मे सलमा) मेरे गुस्ल के लिये पानी लायें तो मैं पानी लायी और आप सइयदा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने गुस्ल किया फिर बोलीं अम्मा मुझे नया लिवास दें और मैंने ऐसा ही किया फिर आप क़िब्ला रूख़ होकर लेट गईं और अपना हाथ मुबारक अपने रूख़सार अक़दस के नीचे कर लिया और फ़रमाया अम्मा अब मेरी वफ़ात हो जायेगी मैं (गुस्ल करके) पाक हो चुकी हूँ लिहाज़ा मुझे कोई न खोले पस उसी जगह आपकी वफ़ात हो गई। (मुस्नद अहमद–6/461)(मजमउज़्ज़वाइद–9/210)

हजरत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरी बेटी का नाम फ़ातिमा इसलिये रखा गया है कि अल्लाह तआ़ाला ने उसे और उससे मुहब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से अलग–थलग कर दिया है। (कंजुल उ़म्माल–12/109 ह०–34227) (अल फ़िरदौस–1/364)

हजरत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने बारगाहे रिसालत माब में अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपको मेरे और फ़ातिमा में कौन ज़्यादा महबूब है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया फ़ातिमा मुझे तुम से ज़्यादा प्यारी है और तुम मुझे उससे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो (मजमउज़्ज़वाइद–9/173) (मुअ़जम औसत–तबरानी–7/343 ह०–7675)

–: मनाक़िबे हसनैन करीमैन (अ़लैहिमुस्सलाम) :–

सरवरे कायनात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिस्म अक़दस पर सवारी करने वाले हसनैन करीमैन (अ़लैहिमुस्सलाम) अ़ज़ीम शानो अ़ज़मत व मरतबत के उस आ़ला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे जिसका तसव्वुर भी मुहाल है हसनैन करीमैन को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की गोद मुबारक और हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा व ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहिमुस्सलाम) की ज़ेरे निगरानी व सरपरस्ती में तरबियत पाने का शरफ़ हासिल हुआ जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपनी जुबाने मुक़द्दस चुसाकर पाला जिनको अपनी पुश्त मुबारक पर सवार करके खिलाया जिनको अपने बेटे और गुलशने दुनियाँ के दो फूल क़रार दिया इनसे मुहब्बत को अपनी मुहब्बत और इनसे अ़दावत (दुश्मनी) को अपनी अ़दावत क़रार दिया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपनी उम्मत पर हसनैन करीमैन की मुहब्बत को वाजिब कर दिया ये वो अज़ीम हस्तियाँ है कि जिन पर मलाइका (फ़रिश्ते) भी रश्क किया करते हैं।

मारका–ए–करबला में हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अपनी आँखो से अपने गुलशन को उजड़ते देखा फिर भी आपके क़दम मुबारक में एक लम्हे के लिये भी लग़ज़िश न आई आप पर मसाइबो आलाम के पहाड़ टूटे फिर भी आप सब्र व तहम्मुल पर इस्तिक़ामत का दामन पकड़े हुये दीने मुहम्मदी की हिफ़ाज़त की जंगे करबला में जिन्नो के बादशाह आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़

की ऐ इमाम अ़ाली मक़ाम आप इजाज़त दें तो मैं इन तमाम लश्करे यज़ीद का ख़ात्मा कर दूँ लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें इजाज़त नहीं दे सकता क्योंकि तुम और तुम्हारा लश्कर सब जिन्न हैं जो दिखाई नहीं देते और इन्सान और जिन्नात की जंग ये ना इंसाफ़ी है और मैं ना इंसाफ़ी की जंग नहीं करना चाहता क्योंकि मैं यहाँ अ़द्लो इंसाफ़ की जंग कर रहा हूँ और आपने ये कहकर जिन्नात बादशाह को रूख़सत कर दिया।

हज़रत इमाम हुसैन मैदाने करबला में खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे और अपने ख़ेमों के गिर्द आग रोशन करवा ली थी मालिक बिन उ़र्वाह ने पुकार कर कहा ऐ हुसैन तुमने वहाँ की आग से पहले यहीं आग लगा दी तब आपने फ़रमाया ऐ दुश्मने खुदा मुझे उम्मीद है कि मैं जन्नत में जाऊँगा और तू दोज़ख़ में जायेगा फिर आपने बारगाहे खुदावन्दी में अपने हाथ मुबारक उठाये और दुअ़ा की ऐ मेरे रब इस ना-बकार को अ़ज़ाबे नारे जहन्नुम से क़ब्ल इस दुनियाँ में आग का अ़ज़ाब दे और आपकी दुअ़ा मक़बूल हुई और उसी वक़्त मालिक बिन उ़र्वाह का घोड़ा विदका और उसका पाँव रकाब में उलझा और घोड़ा उसे घसीटता हुआ ले गया और आग की ख़न्दक़ में डाल दिया और वो आग में जलकर भस्म हो गया फिर हज़रत इमाम अ़ाली मक़ाम ने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया और हम्दे इलाही बजा लाये और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह तेरा शुक्र है कि तूने आले रसूल के गुस्ताख़ को सज़ा दी। (सवानेह करबला-88)

एक यज़ीदी बद कलाम गुस्ताख़ ने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से कहा कि आपको अल्लाह के रसूल से क्या निसबत इस जुमले ने हज़रत इमाम अ़ाली मक़ाम को ईज़ा (तकलीफ़) पहुँचाई और आपने दुअ़ा फ़रमाई ऐ अल्लाह इस बद गुफ़्तार को अपने अ़ज़ाब में गिरफ़्तार फ़रमां आपकी दुअ़ा मक़बूल हुई और उस बद गुफ़्तार को एकदम क़ज़ाये हाजत हुई और वो घोड़े से उतरकर एक तरफ़ बरहूना (नंगा) होकर क़ज़ाये हाजत के लिये बैठा कि एक सियाह बिच्छू ने ऐसा डंक मारा कि चारों तरफ़ दौड़ा-दौड़ा फिरा और फिर मर गया। (सवानेह करबला-89)

हसनैन करीमैन की शानो अ़ज़मत व फ़ज़ीलत में बेशुमार अहादीस वारिद हैं जिनमें से कुछ का तज़किरा हस्बे ज़ैल है।

हज़रत यअ़ाला बिन मर्राह से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ। (तिर्मिज़ी-2/732)

वज़ाहतः- मज़कूरा हदीस पाक में ये बात क़ाबिले तवज्जो है कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का फ़रमान कि हुसैन मुझसे है ये बात तो समझ में आती है लेकिन ये फ़रमान कि मैं हुसैन से हूँ इसमें क्या हिकमत है क्योंकि जुज़ कुल से होता है कुल जुज़ से नहीं होता तो इस अशक़ाल का मफ़हूम और खुलासा ये है कि खातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) की गोद मुबारक से करबला तक हुसैन (अ़लैहस्सलाम) मुझ (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से था और करबला से क़यामत तक मैं (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह

वसल्लम) हुसैन से हूँ यानी इस्लाम का वुजूद मुहम्मदी है और इस्लाम की बक़ा हुसैनी है दीने इस्लाम मारका ए-करबला के बाद हुसैन से है दरअस्ल कमालाते हुसैन का सुदूर मुस्तफ़ा से हुआ और कमालाते मुस्तफ़ा का जहूर हुसैन से हुआ कमालाते हुसैन का मसदर मुस्तफ़ा हैं और कमालाते मुस्तफा का मज़हर हुसैन हैं।

जो कमालात हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) में थे वो तमाम मुस्तफ़ा से थे और वो कमालाते मुस्तफ़ा जिनका ज़हूर होना बाक़ी था वो करबला में वाक़ेअ़ हुये शहादत इमाम हुसैन अस्ल में शहादते मुस्तफ़ा की तकमील थी और फ़रमाने मुस्तफ़ा कि मैं हुसैन से हूँ इस तरफ़ भी इशारा करता है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) का ज़ाहिर व बातिन व हुस्नो जमाल व खूबियाँ व किरदारो कमाल और सीरतो अख़लाक़ सब मुझ (हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) से हैं और मेरी शहादत व सब्रो शुक्र और मक़ामे रज़ा पर इस्तिक़ामत के कमालात का ज़हूर हुसैन से सादिर होगा जो मेरे दीन इस्लाम की हिफाज़त और बक़ा का सबब बनेगा।

अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शहादत के ज़हूर के लिये हज़रत इमाम हुसैन को मुन्तख़ब फ़रमाया इसलिये अल्लाह तआ़ला ने हसनैन करीमैन को जुर्रियते मुस्तफ़ा अ़ता फ़रमाई और ज़ाहिरी व बातिनी मुशाबहत अ़ता की और हसनैन करीमैन के कमालात का मसदर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को बनाया और कमालाते मुस्तफ़ा का मज़हर हसनैन करीमैन को बनाया।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने जो मोजिज़ात व कमालात और नेअ़मतें तमाम अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) को मुख़्तलिफ़ अ़ता की वो सब अपने महबूब सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ज़ाते पाक में यकजा जमा फ़रमां दी अब रहा सवाल शहादत का तो कुछ अम्बियाकिराम को नेअ़मते शहादत भी अ़ता हुई तो मेरे आक़ा ताजदारे मदीना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम इस नेअ़मते शहादत से कैसे महरूम रहते और अल्लाह तआ़ला को ये कैसे गवारा होता कि मेरा महबूब नेअ़मते शहादत से महरूम रह जाये अलबत्ता अल्लाह तआ़ला को आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर ख़त्मे नबूवत भी करनी थी और नेअ़मते शहादत भी अ़ता करना थी मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शहादत का ज़हूर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ज़ाते पाक से मुम्किन न था।

क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने अपने मेहबूब से वायदा फ़रमाया था कि ऐ मेहबूब तेरी वफ़ात किसी काफ़िर या दुश्मन के हाथों से न होगी कि कोई दुश्मन या काफ़िर ये ताना न दे (मआ़ज़अल्लाह) कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़ेलैह वसल्लम को क़त्ल किया है अल्लाह तआ़ला को ऐसे तानो से अपने महबूब को बचाना भी था और आपकी दुश्मनों से हिफ़ाज़त भी फ़रमानी थी और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को जामे शहादत भी पिलाना था।

सूरह मायदा में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने महबूब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से वायदा फ़रमाया-(ऐ महबूब) अल्लाह तआ़ला लोगों से तुम्हारी निगेहबानी फ़रमायेगा। (सू०-मायदा-5/67)

अलबत्ता आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ये ख़्वाहिश थी कि मैं अल्लाह तआ़ला की राह में शहीद कर दिया जाऊँ और जामे शहादत से सैराब हो जाऊँ और अल्लाह तआ़ला को आपकी ख़्वाहिश की तकमील भी करनी थी और ख़त्मे नबूवत को भी बरक़रार रखना था आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़्वाहिशे शहादत जो आपने ज़ाहिर की वो मुन्दरजा ज़ैल अल्फ़ाज़ो में मज़कूर हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सुना है आपने फ़रमाया- क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है अगर मुसलमान इस बात को ना पसंद करते कि मैं जिहाद में चला जाऊँ और वो पीछे रह जायें और मेरे पास इतनी सवारियाँ नहीं हैं कि सब को साथ ले जाऊँ (अगर मुझे इस बात का ख़्याल न होता) तो मैं हर टुकड़ी के साथ निकलता जो जिहाद पर जाती क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि मेरी तो यही आरज़ू है कि मैं अल्लाह तआ़ला की राह में क़त्ल कर दिया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल कर दिया जाऊँ। (सही बुख़ारी-4/266 ह०-2797)

और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की औलाद हज़रत अ़ब्दुल्लाह, हज़रत क़ासिम व हज़रत इब्राहीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) का जवानी तक ज़िन्दा रहना भी मुम्किन न था

क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की औलाद हो और उसे नबूवत न मिले ये कैसे मुम्किन होता कि बाज़ अम्बियाकिराम की औलाद को भी नेअ़मते नबूवत मिली और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की औलाद को नेअ़मते नबूवत न मिले तो कल को कोई ताना देता कि फ़लाँ नबी के बेटे भी नबी थे और इसके अलावा नबियों को नबूवत आपके तुफ़ैल मिली और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के बेटे नेअ़मते नबूवत से महरूम रहें अल्लाह तआ़ला को ये मंजूर व गवारा न था इसलिये आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की औलाद को जवानी में पहुँचने से पहले ही वफ़ाद दे दी क्योंकि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त को सिलसिला-ए-नबूवत आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ज़ाते अक़दस पर ख़त्म भी करना था।

कुरान मजीद में अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने इरशाद फ़रमाया- मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हाँ (वो) अल्लाह के रसूल और आख़िरी नबी हैं। (सू०-अहज़ाब-33/40)

इसलिये आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की औलाद जवानी तक ज़िन्दा न रही इसमें हिकमते इलाही थी कि ख़त्मे नबूवत भी क़ायम रहे और आपका बेटा भी रहे इसलिये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने फ़रमाया ऐ मेहबूब हर नबी की नस्ल उनके बेटों से चली मगर तेरी नस्ल तेरी बेटी फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से चलेगी इसलिये सरवरे कायनात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) ये मेरे दो बेटे हैं और मेरा नसब इन्हीं से चलेगा।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैंने नबी अकरम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को देखा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया ये मेरे बेटे हैं। (मुस्तदरक हाकिम–3/180)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैने सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) को फ़रमाते सुना है कि हर औ़रत के बेटों की निसबत उनके बाप की तरफ़ होती है सिवाय फ़ातिमा की औलाद के कि मैं उनका नसब हूँ और मैं ही उनका बाप हूँ। (मुअ़जम कबीर- तबरानी–3/44) (मजमउज़्ज़वाइद–4/224)

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– अल्लाह तआ़ला ने हर नबी की जुर्रियत उसकी सुल्ब से जारी फ़रमाई और मेरी जुर्रियत हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब की सुल्ब से चलेगी। (कंजुल उ़म्माल–11/400) (मजमउज़्ज़वाइद–9/172) (मुअ़जम कबीर- तबरानी–3/44)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते है कि मैने सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि क़्यामत के दिन मेरे हसबो नसब के सिवा हर सिलसिला–ए–नसब मुनक़्ताअ़ हो जायेगा हर बेटे की निसबत उसके बाप की तरफ़ होती है मा सिवाये औलादे फ़ातिमा के

कि उनका बाप भी मैं ही हूँ और उनका नसब भी मैं ही हूँ। (मुस्नद अहमद–2/626)(मुअ़जम कबीर–3/44)

इसलिये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने हसनैन करीमैन को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शहादत के लिये चुन लिया और हसनैन करीमैन को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ज़ाहिरी व बातिनी शबीय बनाया।

हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा से रिवायत है कि हज़रत हसन सीने से सर मुबारक तक और हज़रत हुसैन सीने से पाँव मुबारक तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के मुशाबा थे। (तिर्मिज़ी–2/733)

हज़रत उ़कबा बिन हारिस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं मैने अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को देखा कि आपने इमाम हुसैन उठाया हुआ था और आप फ़रमां रहे थे मेरे बाप की क़सम तुम रसूले खुदा के मुशाबा हो हज़रत अ़ली के मुशाबा नहीं और हज़रत अ़ली हंस रहे थे।
(सही बुख़ारी–2/253– ह०–3750)

हज़रत अबू राफ़अ़ बयान करते हैं कि सइयदा फ़ातिमा से रिवायत है कि वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के मरजुल विसाल के दौरान हसन व हुसैन को आपके पास लायीं और अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह ये आपके बेटे हैं इन्हें अपनी विरासत में कुछ अ़ता फ़रमायें आप सल्लल्लहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया हसन के लिये मेरी हैबत व सरदारी और हुसैन के लिये मेरी जुर्रात व सख़ावत की विरासत है। (कंजुल–उ़म्माल–13/760 ह०–37710) (अल फ़िरदौस–4/280)

हज़रत मौला अ़ली मुर्तज़ा (करमल्लाहु वजहुल करीम) फ़रमाते थे कि जिस शख़्स की ये ख़्वाहिश हो कि वो लोगों में ऐसी हस्ती को देखे जो गर्दन से चेहरे तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सबसे कामिल शबीय (मुशाबा, हमशक्ल) हो तो वो हसन को देख ले और जिस शख़्स की ये ख़्वाहिश हो कि वो लोगों में ऐसी हस्ती को देखे जो गर्दन से पैर तक रंगत व सूरत दोनो में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सबसे कामिल शबीय हो तो वो हुसैन को देख ले। (मुअ़जम कबीर- तबरानी-3/90)

ज़ाहिरी शक्ल में हसनैन करीमैन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से इतनी मुशाबहत रखते थे कि अगर दोनो शहज़ादों (हसनैन करीमैन) को मिला दिया जाये तो दोनो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तस्वीर थे हसनैन करीमैन को अहले जन्नत की सियादत (सरदारी) का मिलना और कुरान को अहले बैत के मज़बूत तअ़ाल्लुक़ के साथ जोड़ना आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की रूहानी व बातिनी मुशाबहत पर दलालत करता है।

चुनाँचा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सिर्री शहादत जिसकी इब्तिदा ग़ज़वये ख़ैबर में हुई जब एक यहूदिया औ़रत ने आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को खाने में ज़हर दिया और वो ज़हर इतना शदीद (सख़्त,तेज़) था कि एक सहाबी वहीं पर फ़ौत हो गये और इस शहादत की तकमील हज़रत इमाम हसन की शहादत पर मुकम्मल हुई जब हज़रत इमाम हसन को ज़हर दिया गया और आपने जामे शहादत नौश फ़रमाया।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की जहरी शहादत जिसकी इब्तिदा गज़बये उहद से हुई जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को नेज़ा लगा और चेहरे मुबारक से खून बहा और पत्थर लगे चेहरा मुबारक ज़ख़्मी हुआ और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के दाँत मुबारक का एक किनारा टूट गया और इसकी तकमील करबला में हज़रत इमाम हुसैन पर मुकम्मल हुई शहादते मुस्तफ़ा का ज़हूर जो हुजूरे पाक की ज़ाते अक़्दस से मुम्किन न था वो हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन की ज़ाते पाक से ज़ाहिर हुआ और शहादते मुस्तफ़ा हसन व हुसैन की शक्ल में ज़ाहिर हुई

शहादते मुस्तफ़ा की ज़हर से इब्तिदा हुई तो हज़रत इमाम हसन पर ज़हर से इन्तिहां हुई और नेज़े से मुस्तफ़ा की शहादत की इब्तिदा हुई तो हज़रत इमाम हुसैन पर नेज़ो से इन्तिहां हुई अगर शहादते हुसैन न होती तो न दीन इस्लाम बचता और न ईमान बचता बल्कि दीन इस्लाम की शक्ल बिगड़ जाती।

रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) का बोसा लिया और फ़रमाया हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ और अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत रखता है जो हुसैन से मुहब्बत रखता है। (इब्ने माजा–1/82)

हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मुहब्बत की जज़ा और ईनाम ये है कि इमाम हुसैन से मुहब्ब्त रखने वाले शख़्स से अल्लाह तआ़ला मुहब्बत रखता है और अल्लाह तआ़ला जिससे मुहब्बत करे वो ग़जबे इलाही से महफ़ूज़ रहता है और हज़रत

इमाम हुसैन की मुहब्बत उसके लिये ख़ैर व बख़्शिश का ज़रिया बनती है और वो अल्लाह तआ़ला की अमान में रहता है और (बारगाहे खुदावन्दी) में उसका दर्जा बुलन्द मक़ाम की सआ़दत का शरफ़ हासिल करता है।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम नमाज़ पढ़ा रहे थे कि हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की पुश्त (पीठ) मुबारक पर सवार हो गये तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हालते सज्दा में अपने सज्दे को तवील (लम्बा) कर दिया सहाबा-ए-किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने ख़्याल किया कि कोई बात हो गई है फिर जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने सलाम फेरा तो सहाबाकिराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपने सज्दा तवील फ़रमाया कि हमने गुमान किया कि कोई अम्रे इलाही वाक़ैअ़ हो गया है या फिर आप पर वही नाज़िल होने लगी है या कोई और बात हो गई है फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मेरा बेटा हुसैन मेरे ऊपर सवार था तो मैने जल्दी करना मुनासिब नहीं समझा (कि मेरे सज्दे से सर उठाने से कहीं मेरे हुसैन को कोई नुकसान या चोट न पहुँचे और कहीं उसका दिल रंजीदा न हो जाये)।

(मुस्नद अहमद-3/494)
(मुस्तदरक हाकिम-3/181)
(बैहक़ी- सुनन कुबरा-2/263)
(मुअ़जम कबीर- तबरानी-7/270)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम नमाज़ अदा फरमां रहे थे तो हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की पुश्त मुबारक पर सवार हो गये तो लोगों ने उनको मना किया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया इन्हें छोड़ दो इन पर मेरे माँ बाप कुर्बान हों। (मुअ़जम कबीर- तबरानी-3/47)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते है कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हमराह नमाज़े इशां अदा कर रहे थे जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हालते सज्दा में थे तो हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की पुश्त मुबारक पर सवार हो गये जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने सज्दे से सर उठाया तो उन दोनो (हसन व हुसैन) को अपने पीछे नरमी के साथ पकड़कर ज़मीन पर बिठा दिया फिर जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम दोबारा सज्दे में गये तो शहज़ाद गान ने दोबारा भी ऐसा ही किया यहाँ तक कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने नमाज़ मुकम्मल कर ली इसके बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हसन व हुसैन(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) को अपनी रान मुबारक पर बिठा लिया।

(ख़साइसुल कुबरा-2/136)
(अलविदाया वन निहाया-6/152)
(मुस्नद अहमद-2/513)
(मजमउज़्ज़वाइद-2/513)
(मुअ़जम कबीर- तबरानी-3/51)
(मुस्तदरक हाकिम-3/183)

तसरीहः– नमाज़ इबादते खुदा है और हालते नमाज़ में कोई ऐसी बात हाइल हो जिसकी शरीअ़ते मुतहरा ने मुमानियत की हो जैसे सलाम का जवाब देने या हालते नमाज़ में दोनो हाथो के इस्तेमाल करने वग़ैराह से नमाज़ फ़ासिद (ख़राब) हो जाती है मगर मेरे मुस्तफ़ा के नूरे नज़र हसनैन करीमैन का वो आला मक़ाम कि हालते नमाज़ में सरवरे कायनात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की पुश्त मुबारक पर सवारी करते और खेलते मगर नमाज़ फ़ासिद नहीं होती बल्कि हसनैन करीमैन के ऐसा करने से हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को क़ल्बी मशर्रत और चश्मे मुबारक को ठन्डक मिलती हसनैन करीमैन का इस तरह आप की पुश्त मुबारक पर खेलना आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के क़ल्बे अतहर को खुशी पहुँचाता।

हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हालते नमाज़ में हसनैन करीमैन को आहिस्तगी और नरमी के साथ अपनी पुश्त मुबारक से उतारते कि कहीं उन्हें नुकसान या चोट न पहुँचे इस बात का ख़्याल रखना मेरे मुस्तफ़ा की हसनैन करीमैन से बेहद मुहब्बत की अ़लामत है कि हालते नमाज़ में भी आपने अपने लख़्ते जिगर बेटों हसनैन करीमैन की परवाह और फ़िक्र रखना कि कहीं उनके दिल रंजीदा न हों और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का ये फ़रमान के मेरे माँ बाप इन पर कुर्बान हों ये इरशाद मुबारक हसनैन करीमैन की शानो अ़ज़मत व एज़ाज़ को अ़ज़ीम बुलन्दी के मक़ाम पर फ़ाइज़ होने पर दलालत करता है।

हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने

फ़रमाया हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) दुनियाँ में ये मेरे दो फूल हैं। (सही बुख़ारी–2/433)
(तिर्मिज़ी–2/731) (मिश्कात–2/258)

हज़रत अइयूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते है कि मैं रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ तो देखा कि हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आपकी गोद मुबारक में खेल रहे हैं मैने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या आप इनसे मुहब्बत करते हैं तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– कि मैं इनसे मुहब्बत क्यों न करूँ मेरे गुलशने दुनियाँ के यही तो दो फूल हैं जिनकी महक को मैं सूँघता रहता हूँ।
(मुअ़जम कबीर–तबरानी–4/155)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/181)

हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते है कि मैने हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के कन्धों पर सवार देखा तो हसरत भरे लहजे में कहा कि आपके नीचे कितनी बेहतर सवारी है तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने जवाबन इरशाद फ़रमाया कि ज़रा ये भी तो देखो कि सवार कितने बेहतर हैं। (मजमउज़्ज़वाइद–9/181)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम खातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के घर के सामने रूके तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने सइयदा फ़ातिमा ज़हरा

को सलाम किया इतने में हसनैन करीमैन में से एक शहज़ादा घर से बाहर आया तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उस शहज़ादे से फ़रमाया कि अपने बाप के काँधे पर सवार हो जा तू मेरी आँखो का तारा है फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उन्हें हाथ से पकड़ा तो वो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के काँधे पर सवार हो गये फिर दूसरा शहज़ादा बाहर आया तो उससे भी आपने फ़रमाया खुश आमदीद अपने बाप के काँधे पर सवार हो जा तू मेरी आँखो का तारा है फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उन्हे भी अपने काँधे पर सवार कर लिया। (मजमउज़्ज़वाइद–9/180) (मुअ़जम कबीर- तबरानी–3/49)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हसनैन करीमैन को अपनी रानो पर बिठा लेते और कहते या अल्लाह इन दोनो पर रहम फ़रमां क्योंकि मैं भी इन पर मेहरबानी करता हूँ। (मिश्कात–3/256)

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला बयान करते हैं कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के पास हाज़िर हुआ तो देखा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम चार (दो हाथों और दो टाँगो के बल) पर चल रहे थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की पुश्त मुबारक पर हसनैन करीमैन सवार थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम फ़रमां रहे थे तुम्हारा ऊँट क्या खूब है और तुम दोनो सवार भी क्या खूब हो। (मजमउज़्ज़वाइद–9/182)
(मुअ़जम कबीर- तबरानी–3/52)

अल्लाह तआ़ाला ने अपने मेहबूब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के नूरे नज़र हसनैन करीमैन को अहले जन्नत की सियादत (सरदारी) अ़ता फ़रमाई और अपने हबीब सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) और अहले बैत अतहार को जन्नत का मालिको मुख़्तार बनाया वो जिसे चाहेंगे उसे जन्नत का वारिस बना देंगे तमाम मुहिब्बाने अहले बैत रोज़े क़यामत शफ़ाअ़ते मुस्तफ़ा से बहरेयाब होंगे और इज़्ज़त व इकराम के साथ जन्नत में दाख़िल होंगे और हसनैन करीमैन की ज़ेरे सरदारी में होंगे और तमाम ख़्वातीन सइयदा फ़ातिमा की ज़ेरे सरदारी में होंगी।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) अहले जन्नत के सरदार हैं।
(इब्ने माजा-1/73) (तिर्मिज़ी-2/730)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मिम्बर पर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया मेरा ये बेटा हसन (अ़लैहस्सलाम) सरदार है अल्लाह तआ़ाला इसके हाथों दो जमाअ़तों के दरमियान सुलह करायेगा। (तिर्मिज़ी-2/732) (सही बुख़ारी-2/432)

हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) अ़र्श के दो सुतून हैं लेकिन वो लटके हुये नहीं हैं नीज़ फ़रमाया जब अहले जन्नत जन्नत में मुक़ीम होंगे तो

जन्नत अ़र्ज़ करेगी या अल्लाह तूने मुझे अपने सुतूनों में से दो सुतूनो से मुझे आरास्ता व ज़ीनत देने का वायदा फ़रमाया था फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा क्या मैने तुझे हसन व हुसैन की मौजूदगी के ज़रिये आरास्ता नहीं कर दिया। (यही तो मेरे दो सुतून हैं) (मजमउज़्ज़वाइद–9/184) (तारीख़ बग़दाद–2/239) (मुअ़जम औसत–तबरानी–1/108)

हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) ये दोनो जन्नत से आये हुये नाम हैं तारीख़े दुनियाँ में इनसे पहले रूऐ ज़मीन पर किसी का नाम हसन व हुसैन न था अल्लाह तआ़ला ने इनके नामों को हिज़ाब में रखा यहाँ तक कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपने लख़्ते जिगर बेटों के नाम हसन व हुसैन रखे और कुल जन्नत नूर है इसलिये हसन व हुसैन ये दोनो नाम भी नूर हैं।

हज़रत मौला अ़ली शेरे खुदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि जब हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) पैदा हुये तो उनका नाम हमजा और जब हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) पैदा हुये तो उनका नाम जाफ़र रखा (एक रिवायत में है कि उनका नाम हर्ब रखा) फिर मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने बुलाकर फ़रमाया कि मुझे इन दोनो साहबज़ादों (हसनैन करीमैन) के नामों को तब्दील करने का हुक्म दिया गया है (हज़रत मौला अ़ली फ़रमाते हैं) मैने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं पस आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उनके नाम हसन व हुसैन रखे। (मुस्नद अहमद–1/159) (मुस्तदरक हाकिम–4/308) (तारीख़ दमिश्क़–7/116)

एक मर्तबा नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सामने हसनैन करीमैन कुश्ती लड़ रहे थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हज़रत इमाम हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की मदद फ़रमां रहे थे हसन जल्दी करो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप हसन की मदद फ़रमां रहे है लगता है वो आपको हुसैन से ज़्यादा प्यारा है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया (ऐसा नहीं है) जिबराईल (अ़लैहस्सलाम) हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की मदद कर रहे हैं इसलिये मैने चाहा कि मैं हसन की मदद करूँ। (इब्ने असाकर–तारीख़ दमिश्क़–13/223) (इमाम जलालुद्दीन सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/465) (मुहिब्बे तबरी–1/34)

अहले बैत अतहार से इंतिहाई मुहब्बत मज़बूत ईमान की अ़लामत और तारीके दिल की नूरानी रोशनी है और इनसे बुग्ज़ व कीना मुर्दा दिल और ख़ारिजे अज़ इस्लाम की दलील है जो शख़्स अल्लाह व रसूल की मुहब्बत को हासिल करने का तालिब व ख़्वाहिशमंद हो तो उसे हर हाल में अहले बैत की मुहब्बत को लाज़िम पकड़ना होगा हम गुनाहगारों के पास इतने नेक आमाल नहीं जो हमारी बख़्शिश और अ़ज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रखने और जन्नत में ले जाने के लिये काफ़ी हों अलबत्ता अहले बैत की मुहब्बत यक़ीनन हमें ज़रूर अ़ज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रखने और हमारी बख़्शिश और जन्नत में ले जाने के लिये नफ़ा बख़्श और मददगार होगी अहले बैत अतहार की मुहब्ब्त हमें

अल्लाह व रसूल के नज़दीक और राहे जन्नत की तरफ़ ले जाती है और इनसे बुग्ज़ व अ़दावत हमें जहन्नुम की तरफ़ ले जाती है और अल्लाह व रसूल से महज़ दूरी के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता।

सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिसने हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) से मुहब्बत की उससे मैने मुहब्बत की और जिससे मैं मुहब्बत करूँ उससे अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करता है और जिसे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेहबूब रखता है उसे नेअ़मतों वाली जन्नत मे दाख़िल करता है।
(मजमउज़्ज़वाइद–9/181)
(मुअ़जम कबीर– तबरानी–3/50)

मज़कूरा हदीस में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के फ़रमान का अंदाज़ जुदा और निराला है कि जिसने हसनैन करीमैन से मुहब्बत की उससे मैं मुहब्बत करता हूँ और बेशक हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम जिसके मुहिब हों वो अल्लाह तआ़ला का मेहबूब हो जाता है और जिसका मुहिब रब्बुल आ़लमीन हो तो वो मख़सूस व मुक़र्रबे ख़ुदा हो जाता है और वो जन्नत का मुस्तहिक़ व सज़ावार हो जाता है यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला उसके लिये जन्नत को वाजिब कर देता है।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया या अल्लाह मैं हसन (अ़लैहस्सलाम) से मुहब्बत रखता हूँ तू भी इससे मुहब्बत रख और उस

शख़्स से भी मुहब्बत रख जो हसन (अ़लैहस्सलाम) से मुहब्बत रखता हो। (सही मुस्लिम-6/102)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिसने मुझसे मुहब्बत की उस पर लाज़िम है कि वो इन दोनो (हसन हुसैन) से भी मुहब्बत करे।
(निसाई-सुनन कुबरा-5/50) (मजमउ़ज़्ज़वाइद-9/179)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जो मुझसे मुहब्बत करता है उस पर इन दोनो (हसन व हुसैन) से मुहब्बत करना वाजिब है।
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-2/263) (मजमउ़ज़्ज़वाइद-9/180)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं एक रात किसी काम के लिये सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाये और आप के पास कुछ लिपटा हुआ था मुझे मालूम न हो सका कि वो क्या चीज़ है मैं अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुआ फिर मैने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप ने क्या चीज़ लपेट रखी है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने कपड़ा हटाया तो मैने देखा कि हसनैन करीमैन आप की रानो पर हैं आपने फ़रमाया ये मेरे बेटे और मेरी बेटी के बेटे है ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ तू भी इन्हें मेहबूब रख और उन्हें भी मेहबूब रख जो इनसे मुहब्बत रखें। (तिर्मिज़ी-2/731)

हज़रत यअ़ाला बिन मर्राह (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हसनैन करीमैन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तरफ़ चलकर आये पस उन में से जब एक पहुँचा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपना बाजू उसके गले में डाला फिर दूसरा पहुँचा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपना दूसरा बाजू उसके गले में डाला फिर एक को चूमा फिर दूसरे को चूमा फिर फ़रमाया- ऐ अल्लाह मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ तू भी इनसे मुहब्बत कर।
(मुअ़जम कबीर तबरानी-3/32)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जिसने हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुम) से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा।
(इब्ने माजा-1/81)

हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते है कि मैने सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि हसन व हुसैन (अ़लैहस्सलाम) मेरे बेटे हैं जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अल्लाह तअ़ाला से मुहब्बत की तो अल्लाह तअ़ाला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया और जिसने हसन व हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुम) से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उस पर अल्लाह तअ़ाला का ग़ज़ब हुआ और अल्लाह तअ़ाला ने उसे आग में दाख़िल कर दिया।

(मुस्तदरक हाकिम–3/181)
(मुअ़जम कबीर– तबरानी–3/50)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने ये पेशीनगोई फ़रमाई थी कि मेरे बाद ख़िलाफ़ते राशिदा तीस साल तक रहेगी फिर बादशाहत आ जायेगी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफत ढ़ाई साल रही हज़रत उमर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफ़त दस साल रही हज़रत उसमान ग़नी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफ़त बारह साल रही और हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) की ख़िलाफत पाँच साल रही और हज़रत इमाम हसन की ख़िलाफ़त छः महीने रही फिर इसके बाद दौरे बादशाहत की इब्तिदा हुई।

जब हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ख़िलाफ़ते राशिदा के मन्सब पर फ़ाइज़ हुये उस वक़्त अमीर मुअ़ाविया दमिश्क़ के गर्वनर थे तो अमीर मुअ़ाविया पर लाज़िम था कि अपनी हुकूमत को हज़रत मौला अ़ली की ख़िलाफ़ते राशिदा के ताबेअ़ कर देते लेकिन अमीर मुअ़ाविया ने ऐसा नहीं किया बल्कि ख़िलाफ़ते अ़ली की बैत से इन्कार करते हुये अपनी हुकूमत को आज़ाद हुकूमत में तब्दील करते हुये आज़ाद हुकूमत का ऐलान कर दिया हालाँकि अमीर मुअ़ाविया का ये फ़ैसला और इक़दाम शरअ़न जाइज़ व दुरूस्त न था बल्कि हज़रत मौला अ़ली की ख़िलाफ़त से बग़ावत थी जिसके नतीजे में हज़रत मौला अ़ली और अमीर मुअ़ाविया के दरमियान जंग हाइल हुई जिससे मुसलमानों के इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ में दरार पड़ी।

और बाहमी तफ़रीक़ के बाइस मुसलमानो में क़िताल व ख़ूँरेज़ी का माहौल बरपा हुआ।

फिर जब हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ख़िलाफ़ते राशिदा पर फ़ाइज़ हुये तो मुसलमानो को क़िताल व ख़ूँरेज़ी से महफूज़ रखने और उनके इत्तेहाद और उनकी ख़ैर व बेहतरी के लिये हज़रत इमाम हसन ने अमीर मुआ़विया से होने वाली जंग को रोका और एक मुआ़हिदे के तहत तख़्ते ख़िलाफ़त से अलग हो गये और अमीर मुआ़विया से बैत कर ली और उस मुआ़हिदे में ये तय हुआ था कि अमीर मुआ़विया अपने बाद अपनी हुकूमत अपने वारिसों को नहीं देंगे बल्कि मुसलमान जिसे चाहें उसे हुकूमत के लिये मुन्तख़ब कर लेंगे लेकिन अमीर मुआ़विया ने फिर ग़लती की और अपने फ़ासिक़ो फ़ाजिर बेटे की मुहब्बत और नफ़्सानी ख़्वाहिसात के ग़लबे के बाइस अमीर मुआ़विया ने मुआ़हिदे को तोड़ते हुये अपने बदकार व ना अहल बेटे यज़ीद को अपनी हुकूमत की तख़्ता नशीनी के लिये नामज़द किया और यज़ीद पलीद को अपनी हुकूमत का वारिस व जानशीन बनाने का ऐलान कर दिया।

और यहीं से जबरो ज़ुल्म व ख़िलाफ़े दीनो सुन्नत की हुकूमत का आगाज़ हुआ जिसने इस्लामी कानून व अहकामे शरीअ़त व सुन्नत के निज़ाम को बदल दिया और इस हुकूमत में क़त्लो ग़ारत जबरो ज़ुल्म व ख़ूँरेज़ी की इंतिहा हुई यज़ीद पलीद के हुक्म से मदीना मुनव्वरा में हमला किया गया जिसमें औ़रतों की इ़ज़्ज़त व आबरू को तार-तार किया गया और उनकी बे हुरमती की गई और हज़ारों अफ़राद जिनमें

मुहाजिरीन व अन्सार व हुफ़्फ़ाज़ व सहाबा व ताबईन और दीगर अफ़राद शहीद किये गये और तीन दिन क़त्लो ग़ारत व लूटपाट की गई हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) सहाबी की दाढ़ी पकड़कर तमाचे मारे गये और उनकी बेइ़ज़्ज़ती की गई

यज़ीदी फ़ौज ने मस्जिदे नवबी में घोड़े बाँधे और उनकी लीद व पेशाब से मस्जिद में गन्दगी बपा हुई और तीन दिन तक अज़ान व अक़ामत व नमाज़ मुअ़त्तल रही फिर यज़ीदी लश्कर ने मक्का मुकर्रमा पर हमला किया ख़ाना-ए-काबा पर पत्थर बरसाये मस्जिदे हराम के सुतून टूट गये और ख़ाना-ए-काबा में आग लगा दी जिससे काबे का ग़िलाफ़ व दीवारें जल गईं ये तमाम वाक़्यात चौसठ (64) हिज़री में हुये और इसी दौरान यज़ीद पलीद को कुलंग का शदीद दर्द उठा और इसी मर्ज़ में वो वासिले जहन्नुम हुआ और उसकी मौत की ख़बर से यज़ीदी फ़ौज के हौसले पस्त हो गये और वो मैदाने जंग से भागने लगे और मक्का फ़तह हुआ और यज़ीदियों की दरिन्दगी व जुल्म से मक्का को निजात मिली।

हदीस पाक में है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिसने अहले मदीना के साथ बुराई का इरादा किया तो अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नुम में इस तरह पिघला देगा जैसे नमक पानी में घुलता है तो जब अहले मदीना के लिये सिर्फ़ बुराई का इरादा करना गुनाहे अ़ज़ीम व जहन्नुम में सख़्त तरीन दर्दनाक अ़ज़ाब का बाइस है तो जिसके हुक्म से मारका-ए-करबला बपा हुआ और जिन लोगो ने

ख़ानवादा-ए रसूल व असहाब को शहीद किया उन पर निहायत जुल्म व सख़्तियाँ की तो उनके अंजाम व उनके अ़ज़ाब का अ़ालम क्या होगा।

हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) और उनके जां निसारों के जसदे अक्दस को घोड़ों की टापों से पामाल किये गये ख़ानवादा-ए-रसूल के ख़ेमों को लूटकर आग लगा दी गई और उन्हें क़ैदी बनाया गया सरे इमाम हुसैन को नेज़े पर चढ़ाया गया ख़वातीने अहले बैत की बे हुरमती की गई जब हज़रत इमाम हुसैन का मजलूम लुटा पिटा काफ़िला दमिश्क़ में दरबारे यज़ीद मलऊ़न में पहुँचा तो बदबख़्त काफ़िर बदकार यज़ीद ने हज़रत इमाम हुसैन के दन्दाने मुबारक पर छड़ी मारी और कहा आज हमने अपने मक्तूलीन का बदला ले लिया बदबख़्त यज़ीद ने अपने अन्दर छुपे हुये कुफ़्र को ज़ाहिर कर दिया दरबारे यज़ीद में मौजूद ये मंजर देखकर एक सहाबी उठे और यज़ीद को इस कुफ़्राना हरकत से मना किया और फ़रमाया- खुदा की क़सम मैने अपनी आँखों से हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को हज़रत इमाम हुसैन के लबों को बोसा देते हुये देखा है।

यज़ीद पलीद और उसके हुक्मरान और फ़ौजे यज़ीद के वो तमाम अफ़राद जो मारका-ए-करबला में ख़ानवादा-ए-रसूल व अहसाब के ख़िलाफ़ जंग में शामिल थे उन तमाम का अंजाम दुनियाँ में भी निहायत सख़्त दर्दनाक हुआ और आख़िरत में भी उन पर वो दर्दनाक निहायत सख़्त अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा जिसका कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता यज़ीद लईन के इंतिहाई जुल्म व ज़्यादती और ख़ानावाद-ए-रसूल व

असहाब को क़त्ल करने के इरतिकाब ने यज़ीद मरदूद को काफ़िर व मुरतद बना दिया और वो दायमी नारे जहन्नुम का मुस्तहिक़ हो गया।

इमाम इब्ने कसीर ने अल विदाया वन निहाया में रक़म किया है- जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) का सरे अनवर यज़ीद के पास लाया गया तो वो हज़रत इमाम हुसैन के लबाने अक़दस पर छड़ी मारते हुये कहता था ऐ काश बदर में क़त्ल होने वाले मेरे बुजुर्ग ज़िन्दा होते जो ग़ज़ब-ए-बदर में मारे गये थे तो मैं उन्हें बताता कि तुम्हारे क़त्ल का बदला मैने हुसैन की शहादत की शक्ल में ले लिया है और हमने तुम्हारे दो गुना अशराफ़ को क़त्ल करके योमे बदर का बदला ले लिया है उसका ये ऐलान उसके ईमानदार होने का कोई इमकान बाकी नहीं रखता और उसके काफ़िर होने की कई दलीलें हैं। (अल विदाया वन निहाया-8/192)

मोमिन को क़त्ल करना गुनाह है और अहले बैत को क़त्ल करना कुफ़्र है क्योंकि ख़ानवादा-ए-रसूल की अज़्ज़ियत दरअस्ल अज़्ज़ियते रसूल व अज़्ज़ियते खुदा है हालाँकि अल्लाह तआ़ला को कोई ईज़ा (तकलीफ़) नहीं दे सकता अलबत्ता हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की अज़्ज़ियत को अल्लाह तआ़ला ने अपनी अज़्ज़ियत क़रार दिया।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है-
बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अज़्ज़ियत देते है उन पर अल्लाह की लानत है दुनियाँ और आख़िरत में और अल्लाह ने उनके लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तैयार कर रखा है। (सू०-अहज़ाब-33/57)

हदीस पाक में है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) के घर के पास से गुज़रे तो हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) को रोते हुये सुना तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया (ऐ फ़ातिमा) क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुसैन का रोना मुझे तकलीफ़ देता है। (मुअ़जम कबीर- तबरानी-3/116)
(मजमउज़्ज़वाइद-9/201)

जब हुसैन (अ़लैहस्सलाम) का किसी मामूली बात पर रोना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को तकलीफ़ देता है तो ज़रा ग़ौर करो कि करबला में जब हुसैन के गले पर तलवार चली होगी तीरों से जिस्म छलनी हुआ होगा जिस्म अत़हर पर तलवारो और नेज़ो की ज़रबें लगी होंगी उस वक़्त सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को कितनी तकलीफ़ हुई होगी जब ख़ानवादा-ए-रसूल की बेहुरमती व क़त्लो ग़ारत और उन्हें बेशुमार अज़िय़यते दी गईं गुलशने रसूल जब करबला में उजड़ गया और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के दिल की दुनियाँ के फूल मुरझा गये उस वक़्त मेरे आक़ा रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तकलीफ़ का आ़लम क्या होगा जिसका कोई मुवाज़ना व तसव्वुर नहीं कर सकता।

उम्मुल फ़ज़ल बिन्तुल हारिस जो हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अन्हु) की अहलिया और हज़रत अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) की वालिदा थीं बयान करती हैं कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर मैने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आज रात मैने एक बुरा ख़्वाब

देखा है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया वो ख़्वाब क्या है मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुई या रसूलुल्लाह मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिस्म अक़दस का एक टुकड़ा काटकर मेरी गोद में रख दिया गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि तूने अच्छा ख़्वाब देखा है इंशा अल्लाह मेरी बेटी फ़ातिमा (अ़लैहस्सलाम) के यहाँ लड़का पैदा होगा जो तेरी गोद में आयेगा ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) के यहाँ हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) पैदा हुये और मेरी गोद में आये जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया था एक दिन मैं सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो मैने हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) को उठाकर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की गोद मुबारक में रख दिया मेरी तवज्जो इधर-उधर हो गई फिर मैने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आँखो से आँसू जारी थे मैं अ़र्ज़ गुजार हुई या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों क्या बात है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि जिबराईल (अ़लैहस्सलाम) मेरे पास आये और मुझे ख़बर दी कि अ़नक़रीब मेरी उम्मत मेरे बेटे हुसैन को शहीद करेगी और मेरे पास उस जगह की मिट्टी लाये हैं जो सुर्ख़ है। (मिश्कात-3/262)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) बयान करती है कि हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये जब कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर वही नाज़िल हो रही थी

और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम लेटे हुये थे और हज़रत इमाम हुसैन आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिस्म अक़दस पर चढ़ गये और खेलने लगे जिबराईल (अ़लैहस्सलाम) ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से कहा या मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) आप अपने इस बेटे हुसैन से मुहब्बत करते हैं आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमााया- ऐ जिबराईल मैं अपने बेटे हुसैन से मुहब्बत क्यों न करूँ जिबराईल (अ़लैहस्सलाम) ने कहा बेशक अ़नक़रीब आपकी उम्मत आपके बाद आपके इस बेटे हुसैन को शहीद करेगी और जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को मिट्टी दी और कहा इस मिट्टी वाली ज़मीन पर आपका बेटा हुसैन शहीद किया जायेगा और उस ज़मीन का नाम करबला है पस जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) चले गये फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाये और वो मिट्टी आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के दस्त अक़दस में थी और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम आबदीदा थे फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- ऐ आयशा जिबरईल ने मुझे ख़बर दी कि मेरा बेटा हुसैन करबला में शहीद किया जायेगा फिर आप असहाब की तरफ़ तशरीफ़ ले गये जिनमें हज़रत मौला अ़ली, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उ़मर, हज़रत हुज़ैफा, हज़रत अम्मार, हज़रत अबूजर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) मौजूद थे और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम उस वक़्त भी आबदीदा थे सहाबाकिराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह किस चीज़ ने आपको आबदीदा कर दिया आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जिबराईल ने मुझे ख़बर दी कि मेरा बेटा मेरे बाद करबला में शहीद किया जायेगा और मेरे लिये वहाँ की मिट्टी लाये

हैं और मुझे बताया कि इस मिट्टी वाली ज़मीन पर हुसैन शहीद किया जायेगा। (मजमउज़्ज़वाइद–9/188) (मुअ़जम कबीर– तबरानी–3/107)

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने वो मिट्टी हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास रखवा दी और फ़रमाया कि जब ये मिट्टी खून में बदल जाये तो समझ लेना मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया है। (ख़साइसुल कुबरा–2/125)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/189)
(मुअ़जम कबीर– तबरानी–3/108)

जिस वक़्त हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को वो मिट्टी रखने के लिये दी उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतहरात हयात थीं लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा को ही मिट्टी रखने को क्यों दी क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के इ़ल्मे ग़ैब में ये बात थी और आपकी चश्मे नबूवत ये देख रही थी कि जिस वक़्त मेरा बेटा हुसैन करबला में शहीद किया जायेगा उस वक़्त तमाम अज़वाजे मुतहरात में से सिर्फ़ हज़रत उम्मे सलमा ही ज़िन्दा रहेंगी इसलिये आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उस मिट्टी को रखने के लिये हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को मुन्तख़ब फ़रमाया और उन्हें मिट्टी रखने के लिये दी और फ़रमाया जब ये मिट्टी खून में बदल जाये तो समझ लेना मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया है और जब वाक़्या करबला का ज़हूर हुआ और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) शहीद किये गये तो उस वक़्त

सिर्फ़ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ही ज़िन्दा थीं और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतहरात वफ़ात पा चुकी थीं।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि उन्होने शहादते इमाम हुसैन के दिन ख़्वाब में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को देखा कि आप रो रहे हैं और आपका सरे अक़दस और रीश (दाढ़ी) मुबारक पर गर्द पड़ी हुई है उम्मे सलमा ने इसकी वजह दरयाफ़्त की तो हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया मैं अभी-अभी मशहदे हुसैन (हुसैन की शहादतगाह) से आ रहा हूँ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने देखा कि उस शीशी की मिट्टी खून में बदल गई थी।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं- कि एक दोपहर के वक़्त मैने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को ख़्वाब में देखा कि गेसू मुबारक बिखरे हुये हैं और दस्त मुबारक में एक शीशी है जिसमे खून है मैं अ़र्ज़ गुज़ार हुआ मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों ये क्या है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया ये हुसैन और उसके अहसाब (साथियों) का खून है मैं दिन भर इसे जमा करता रहा हूँ फिर मैने वो वक़्त याद रखा तो मालूम हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) उसी वक़्त शहीद किये गये थे। (मिश्कात-3/263)

ख़ानवादा-ए-रसूल और असहाब पर जुल्म व ज़्यादती करने वाले और उन्हे क़त्ल करने वाले और इनके क़त्ल का हुक्म देने वाले तमाम लोग अ़ज़ाबे

इलाही में गिरफ़्तार हुये इनका दुनियाँ में भी निहायत दर्दनाक व ख़ौफ़नाक अंजाम हुआ और उनमें से कोई एक भी ऐसा नहीं था कि जिसे अल्लाह तआ़ला ने दुनियाँ में सख़्त तरीन सज़ा देते हुये हलाक न किया हो और आख़िरत में भी उन तमाम लोगो पर जहन्नुम में निहायत सख़्त तरीन दर्दनाक मुख़्तलिफ़ अ़ज़ाब मुसल्लत किया जायेगा और वो हमेशा दोज़ख़ के सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तिला रहेंगे।

जब उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सर लाकर मस्जिद के सहन में एक दूसरों के साथ मिलाकर रखे गये तो एक साँप आया वो उन सरों के दरमियान से निकला और इब्ने ज़ियाद के नथुनों मे दाख़िल हो गया और दो तीन बार उसने यही किया और थोड़ी देर बाद चला गया और गायब हो गया। (तिर्मिज़ी–2/734)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पर वही भेजी कि मैने यहृया इब्ने ज़करिया (अ़लैहिमुस्लाम) के बदले सत्तर हज़ार अफ़राद क़त्ल किये हैं और तेरे नवासे के बदले मुझे सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार क़त्ल करना है। (मुस्तदरक हाकिम–3/485 हदीस न०–4208) (सिर्रुश्शहादतैन–53)

-ःताज़ियादारी के जाइज़ होने के शरई दलाइलः-

अ़शरा मुहर्रम में ताज़ियादारी करना जाइज़ व सबावे दारैन है इन अइयाम में शर्बत, खिचड़ा, बिरयानी, खीर वग़ैराह पर फ़ातिहा दिलाना और लोगों में तक़सीम करना और चाय, शर्बत, खीर वग़ैराह की सबील करना बाइसे ख़ैरो बरकत व सवाब है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तअ़ाला है-
जो लोग अल्लाह तअ़ाला की निशानियों की ताज़ीम व अदबो एहतिराम करते हैं ये फेअ़ल उनके दिलों का तक़वा है। (सू०-हज-32)

तफ़सीर व अहादीस में लिखा है कि हर वो चीज़ (शअ़ाइरूल्लाह) यानी अल्लाह तअ़ाला की निशानी और उसकी यादगार में दाख़िल है जिसको देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें और मैं ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वालों से पूँछता हूँ कि क्या उन्हें ताज़िया देखकर इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) और उनकी कुरबानी याद नहीं आती।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जिस चीज़ को अल्लाह तअ़ाला ने हराम क़रार दिया वो हराम है और जिसको हलाल क़रार दिया वो हलाल है और जिस चीज़ के बारे में ख़ामोश रहा वो माफ़ है। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मिश्कात-367)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला ने बाज़ चीज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं उन्हें ज़ाया मत करो और जो हराम कर दिया उनकी हुरमत मत तोड़ो और जो हुदूद मक़र्रर किये हैं उन हुदूद के आगे मत बढ़ो और बाज़ चीज़ों में उसने सुकूत (ख़ामोशी) इख़्तियार की है (और ये सुकूत) किसी भूल की वजह से नहीं बल्कि रहमत व करम की वजह से है तो उनमें बहस न करो। (मिश्कात-325)

मज़कूरा अहादीस की रोशनी में ये बात साबित हुई कि ताज़ियादारी करना जाइज़ है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ ख़ामोशी इख़्तियार की है और कुरान व हदीस में ताज़ियादारी की कहीं मुमानियत नहीं आई है और जिन चीज़ों के बारे में अल्लाह तआ़ला ने ख़ामोशी इख़्तियार की है वो चीज़ें हमारे लिये माफ़ हैं और जिन चीज़ों को अल्लाह तआ़ला ने माफ़ फ़रमाया हो तो वो चीज़ें किसी भी तरह से नाजाइज़ व हराम नहीं हो सकतीं और अल्लाह व रसूल ने जिन चीज़ों को हराम क़रार न दिया हो उन चीज़ों को हराम व नाज़ाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत व बे बुनियाद है और जिस तरह हम रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत व अ़क़ीदत में ईद मिलादुन्नबी का जश्न बड़े ज़ॉक़ व जोश और एहतमाम के साथ मनाते हैं इसी तरह हम इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की मुहब्बत में ताज़ियादारी करते हैं और उनकी यादगार मनाते हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मरवी है कि आपने फ़रमाया अगर किसी चीज़ की तस्वीर बनाना ज़रूरी समझो तो दरख़्तों की या ऐसी चीज़ की तस्वीर बनाओ जिसमें रूह न हो। (यानी जानदार न हो) (मिश्कात–386)

मज़कूरा हदीस भी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़िया बनाना जाइज़ है क्योंकि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है और ताज़िया ग़ैर जानदार है और उसमें जान नहीं होती जिस तरह पहाड़, मकान, जंगल, नदी, झरना, बाग़ात मस्जिदे मक्का मुअ़ज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा वग़ैराह की तस्वीर बनाना जाइज़ है इसी तरह रोज़ा–ए–इमाम हुसैन यानी ताज़िया बनाना जाइज़ है।

सैइयद अल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी अपनी किताब ''मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रोशनी में'' फ़रमाते हैं कि कुरान व हदीस की रूह से जिन्हें अहले बैत से मुहब्बत नहीं वो मुनाफ़िक़ हैं मुहब्बत का तक़ाज़ा ये है कि जो चीज़ महबूब से निसबत रखती है तो मुहब्बत करने वाला उस चीज़ से भी निसबत रखता है और उसकी ताज़ीमो तकरीम करता है और ताज़िया अहले बैत से निसबत रखता है तो जिसे अहले बैत से मुहब्बत होगी वो ताज़िये से भी मुहब्बत करेगा और ताज़िया रोज़ा–ए–इमाम हुसैन की नक़ल है।

मिसाल के तौर पर हाजी लोग मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा से बहुत सी चीज़ें अपने–अपने मुल्कों में लाते हैं फिर उन चीज़ों को अपने रिश्तेदार दोस्त

अहवाब बग़ैराह को बतौर तोहफ़ा देते हैं और उन्हें लेने वाले लोग उन चीज़ों को इज़्ज़त की नज़र से देखते हैं और उन चीज़ों को तबर्रुक समझते हैं हालाँकि हक़ीक़त ये है कि वो चीज़ें मक्का व मदीना से आती ज़रूर है लेकिन वो चीज़ें मक्का व मदीना की बनी हुयी नहीं होती हैं बल्कि वो दूसरों मुल्कों से लाकर मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा में बेची जाती हैं लेकिन फिर भी हम उन चीज़ों की ताज़ीम व तकरीम करते हैं क्योंकि वो तमाम चीज़ें मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा से निसबत रखती हैं इसलिये क़ाबिले ताज़ीम होती हैं।

इसी तरह जो लोग इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मुहब्बत करते हैं और जब वो ताज़िये को देखते हैं तो उसकी ताज़ीम करते हैं और उसको रोज़ा-ए-इमाम हुसैन तसव्वुर करते हैं क्योंकि ताज़िये की निसबत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से वाबस्ता होती है इसलिये ताज़िया भी क़ाबिले ताज़ीम होता है।

इसी तरह जब किसी औलिया-ए-किराम या बुजुर्गानेदीन की दरगाह पर हम हाज़िरी के लिये जाते हैं और जो तबर्रुकात हम दुकानों से ख़रीदते हैं लेकिन वो तबर्रुक जब तक दुकानों पर था तो उसकी ताज़ीम नहीं होती थी लेकिन जब वो तबर्रुक आस्ताना-ए-औलिया की हाज़िरी दे आता है तो वही तबर्रुक क़ाबिले ताज़ीम हो जाता है क्योंकि उसे दरगाहे औलिया या बुजुर्गानेदीन की ज़ियारत का शरफ़ हासिल हो जाता है और उसकी निसबत उस दरगाह में मौजूद वली अल्लाह से वाबस्ता हो जाती है इसलिये हम उस

तबर्रुक को भी इज़्ज़त और एहतराम की नज़र से देखते हैं।

जब कोई शख़्स उस तबर्रुक को लेकर वापस अपने घर आता और उस तबर्रुक को लोगो में तक़सीम करता और कहता कि मैं ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ की दरगाह पर हाज़िरी के लिये अजमेर शरीफ़ गया था या हज़रत वारिस पाक की दरगाह देवा शरीफ़ गया था या हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलयरी की दरगाह पर हाज़िरी के लिये गया था वग़ैराह और ये तबर्रुक वहीं का है तो हम लोग उस तबर्रुक को कितनी इज़्ज़त की नज़र से देखते क्योंकि वो तबर्रुक औलिया-ए-किराम व बुजुर्गानेदीन से निसबत रखता है।

एक बात क़ाबिले तवज्जो है और हमें उस पर ग़ौर करना चाहिये कि कुछ शहर व कस्बे ऐसे हैं कि जिनके नाम के आख़िर में हम शरीफ़ लफ्ज़ का इस्तेमाल करते हैं जैसे बग़दाद शरीफ़, अजमेर शरीफ़, देवा शरीफ़, किछौछा शरीफ़, काल्पी शरीफ़, बिलग्राम शरीफ़, मारेहरा शरीफ़, बरेली शरीफ़ वग़ैराह आख़िर ऐसा क्यों है क्योंकि इन तमाम शहर व कस्बों में औलिया-ए-किराम व बुजुर्गानेदीन मदफून हैं और इन शहरों व कस्बों से अल्लाह के नेक सालिहीन बुजुर्गों और वालियों की निसबत जुड़ी है इसलिये इन शहरों व कस्बों के नाम भी हम ताज़ीम के साथ लेते हैं तो नेक सालेह बुजुर्गों व औलिया-ए-किराम की निसबत से उस शहर का नाम भी ताज़ीम के क़ाबिल हो जाता है तो सइयदुना हज़रत इमाम हुसैन की निसबत से ताज़िया कितनी बड़ी ताज़ीमो अदब और एहतराम के क़ाबिल होगा इसका हम और आप खुद अन्दाज़ा लगायें और

ताज़िये को ताज़ीमो तकरीम की नज़र से देखें।

जिस तरह काग़ज़ सिर्फ़ काग़ज़ होता है लेकिन जब उस काग़ज़ पर अल्लाह व रसूल का नाम लिख दिया जाये तो वो चूम कर सर आँखों पर लगाने के क़ाबिल हो जाता है इसी तरह जब किसी काग़ज़ पर कुरान लिख दिया जाता है तो वो अल्लाह का कलाम हो जाता है और वो ताज़ीमो अदब व एहतराम के क़ाबिल हो जाता है इसी तरह हम मस्जिदे नबवी और गुम्बदे खज़रा या ख़ाना-ए-काबा की तस्वीर जो सिर्फ़ काग़ज़ पर बनी हुई होती है लेकिन हम उसे चूमते और उसकी ताज़ीम करते हैं और उनका एहतराम करते हैं और उन तस्वीरों को ऐसी जगह रखते और सजाते हैं कि जहाँ उनकी बे अदबी न हो।

हालाँकि वो काग़ज़ पर बनी होती हैं और वो असल भी नहीं होती बल्कि उसकी नक़ल होती हैं लेकिन फिर भी हम उन तस्वीरों की ताज़ीम करते हैं क्योंकि वो अल्लाह व रसूल से निसबत रखती हैं इसलिये हम उस काग़ज़ को नहीं देखते बल्कि हम ये देखते हैं कि उस काग़ज़ पर लिखा और बना क्या है और इसी तरह हम ताज़िये की काग़ज़ और पन्नी को नहीं देखते हैं बल्कि ये देखते हैं कि ये रोज़ा-ए-इमाम हुसैन है जिसकी निसबत सइयदुना इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से है जो अपने नाना जान हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के लख़्ते जिगर हैं इसलिये हम ताज़िये को ताज़ीम की नज़र से देखते हैं और बा नीयते ताज़ीम रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िया) की ज़ियारत करना इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है।

अहले इ़ल्म इस बात को जानते हैं कि किसी चीज़ का जाइज़ या नाजाइज़ होना चार चीज़ों पर मुन्हसिर है। 1–कुरान 2–हदीस 3–इज्माअ़ 4–क़यास और इन चारों चीज़ों से ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना साबित नहीं लेकिन उ़ल्मा–ए–किराम में इख़्तिलाफ़ है कुछ उ़ल्मा ताज़ियादारी को जाइज़ क़रार देते है और कुछ उ़ल्मा इसे नाजाइज़ क़रार देते हैं और जो उ़ल्मा इसे नाजाइज़ कहते हैं वो इस वजह से कहते हैं कि ताज़ियादारी में कुछ काम ग़ैर शरई हैं जैसे बैन्ड़ बाजा बेहूदा खेल तमाशे, छतों पर बैठकर खाने की चीज़ें व दीगर चीज़ों को लोगों के बीच ज़मीन पर फेंकना ये सब काम वाक़ई नाजाइज़ हैं लेकिन इस वजह से ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहना बिल्कुल ग़लत है और ये उनकी ज़्यादती व जुल्म है जो हमें इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) की यादगार मनाने से रोकते हैं जो एक अच्छा और नेक अ़मल है और बाइसे अज्र है और रहा सवाल इस फ़ेअ़ल से जुड़ी हुई बुराइयों का तो हर अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी होती है तो उन्हें चाहिये कि सिर्फ़ बुराई को रोकने की लोगों को ताकीद करें न कि अच्छाई को जिस तरह हर इन्सान के साथ अल्लाह तअ़ाला ने एक शैतान मुक़र्रर कर रखा है जो हमें बुराई का हुक्म देता है और हमारे नफ़्स से बुरे काम कराता है।

तो क्या हम इन्सान से सरज़द होने वाले गुनाहों और बुराइयों को रोकेंगे या उससे वाक़ेअ होने वाले नेक काम और अच्छाइयों को रोकेंगे क्योंकि इन्सान के साथ अच्छाई और बुराई दोनो जुड़ी होती हैं पस हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ बुराई को रोकें न कि अच्छाई को

मिसाल के तौर पर शादी ब्याह में बहुत सी बातें ख़िलाफ़े शरअ़ हैं जैसे मर्द औ़रत का एक साथ जमा होना, बेपर्दा औ़रतों का मर्दों से गुफ़्तगू करना, मर्दों को ना मेहरम को देखना जो सख़्त हराम है इसके अलावा दूल्हा भाती की बुरी रस्में, बैन्ड बाजा, आतिश बाज़ी, खड़े होकर खाना पीना, जूता चुराई की रस्में वग़ैराह ये सब बुराई और ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर हैं तो क्या इस वजह से किसी को शादी ब्याह के लिये मना किया जायेगा या शादी को नाजाइज़ क़रार दिया जायेगा नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि शादी ब्याह में शामिल होने वाली बुराईयों और ख़िलाफ़े शरअ़ कामों को रोका जायेगा।

इसी तरह रोज़ा नमाज़ फ़र्ज़ है मगर बाज़ लोग रोज़ा नमाज़ में दिखावा (रियाकारी) करते हैं और रियाकारी हराम है तो क्या इस वजह से रोज़ा नमाज़ से रोका जायेगा या रियाकारी से रोका जायेगा इसी तरह नौकरी करना शरअ़न जाइज़ है मगर इसके साथ रिश्वत भी ली जाती है जो फ़ेअ़ले हराम है तो क्या इस वजह से नौकरी करने को मना किया जायेगा या रिश्वत लेने से मना किया जायेगा इसी तरह तिजारत में भी झूठ, फ़रेब, धोका, बेईमानी वग़ैराह दीगर कई तरह की बुराइयाँ होती हैं और बाज़ लोग तो अपनी तिजारत में हराम हलाल का भी तमीज़ नहीं रखते तो क्या इन बुराईयों और गुनाहों की वजह से तिजारत को नाजाइज़ या हराम कहा जायेगा या तिजारत से जुड़ी बुराईयों को रोका जायेगा।

इसी तरह ताज़ियादारी में जो काम ग़ैर शरई हैं हमें उन कामों को रोकना चाहिये न कि

ताज़ियादारी को रोकना चाहिये जिस तरह मस्जिद ख़ाना-ए-काबा की नक़ल है जो एक इमारत है उसी तरह ताज़िया हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के रोज़े की नक़ल है इस दलील से भी ताज़िया बनाना जाइज़ है और इमाम हुसैन और शहीदाने करबला की यादगार मनाने के लिये ताज़ियादारी करना व ज़िक्रे शहादतैन करना जाइज़ व सवाबे दारैन है।

कोई अ़मल ऐसा किया जाये जिसकी वजह से असल वाक़िया करबला नज़रों के सामने आ जाये तो वही अ़मल ज़्यादा कारगर होता है जैसे ताज़िये को देखकर वाक़िया करबला हमारी नज़रों के सामने आ जाता है और इस दलील से भी ताज़ियादारी करना बेहतर अ़मल है हदीस पाक में है जो जिससे मुहब्बत करेगा उसका हश्र उसके महबूब के साथ होगा यानी अल्लाह तआ़ला के यहाँ दोनों एक मुक़ाम पर होंगे और अगर हम अहले बैत से मुहब्बत करेंगे और उनकी मुहब्बत में उनकी यादगारी मनाने के लिये ताज़ियादारी करेंगे तो क़यामत के दिन हमें उनका साथ मिलेगा जो हमारे लिये बड़े फ़ख़्र की बात होगी और उनका साथ हमारे लिये निजात है और उनका साथ हमें जन्नत में ले जायेगा।

बाज़ लोग कहते है कि किसी की मौत पर तीन दिन से ज़्यादा सोग मनाना शरअ़न जाइज़ नहीं व बीवी के लिये शौहर की मौत पर चार महीना दस दिन तक सोग मनाना जाइज़ है इससे ज़्यादा सोग मनाना हराम व नाजाइज़ है ये बात बिल्कुल हक़ है लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) तो शहीद हुये हैं और शहीद ज़िन्दा होता है और हमेशा

ज़िन्दा ही रहेगा मुसलमान उनके मरने का सोग नहीं मनाता बल्कि वो तो इस बात का ग़म मनाता है कि इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और आपके घर वालों और दीगर शुहदा-ए-करबला ने जो मुसीबतें और तकलीफ़ें उठाईं और आपके जिस्म मुबारक पर बहात्तर (72) से ज़्यादा तलवारों के ज़ख़्म थे और आपके सामने आपके भाई और बेटे और भतीजे भूके प्यासे शहीद हो गये और आपके भाई हज़रत अ़ब्बास का सीना छलनी कर दिया गया और बाज़ू काट दिये गये और आपका ख़ानदान करबला में लुट गया और ख़ानवादा-ए-रसूल को कितनी अज़िय़तें दी गई और आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी बेटी सकीना की बेहुरमती की गई और बे शुमार अज़िय़तें दी गईं ख़ानवादा-ए-रसूल दीन इस्लाम के लिये कुरबान हो गये तमाम शुहदा-ए-करबला भूके प्यासे शहीद हो गये हत्ता कि उन्हें पानी की एक बूँद भी न मिली तो हम इन तमाम बातों का ग़म मनाते हैं और जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला होता है तो हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से मुहब्बत करने वाले मुसलमानों की आँखों से आँसू खुद व खुद जारी हो जाते हैं।

बाज़ लोग तो इमाम आ़ली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) का ग़म मनाने और उनके ग़म में आँसू बहाने को भी नाजाइज़ व बिदअ़त क़रार देते हैं जबकि हक़ीक़त ये है कि जब ज़िक्रे इमाम हुसैन या ज़िक्रे करबला हो और दिल ग़मगीन न हो तो वो दिल इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की मुहब्बत से ख़ाली हैं क्योंकि मुहब्बत का तक़ाज़ा ये होता है कि महबूब के पाँव में काँटा भी चुभे और तकलीफ़ हमें हो और इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने करबला में

कितनी बड़ी-बड़ी बेशुमार तकलीफ़ें उठाईं तो हमें उनका कितना ज़्यादा ग़म होना चाहिये और मुहब्बत के कई दरजात होते हैं और उनमें सबसे ऊँचा दर्जा ये है कि कोई शख़्स मुहब्बत की तमाम हदों को पार करते हुये खुद को अपने महबूब की मुहब्बत में ग़र्क़ कर दे यही सच्ची और हक़ीक़ी मुहब्बत होती है।

हज़रत इमाम मालिक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से बेहद मुहब्बत थी जब आप मदीने की गलियों से गुज़रते तो वहाँ की दीवारों को चूमते हुये जाते थे जिसके बाइस आपका चेहरा गर्द आलूद हो जाता था तो लोगों ने आपसे कहा कि हज़रत आप ऐसा क्यों करते हैं जिससे आपका चेहरा गर्द आलूद हो जाता है इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने फ़रमाया कि मैं अपने महबूब की मुहब्बत के सबब ऐसा करता हूँ क्योंकि जब मेरे आक़ा रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम जब इन गलियों से गुज़रते होंगे तो आपका हाथ मुबारक इन दीवारों से लगा होगा इसलिये मैं इन दीवारों को चूम लेता हूँ क्योंकि इन दीवारों की निसबत मेरे आक़ा अ़लैहस्सलाम से है तो लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा मुम्किन नहीं है कि सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम मदीने की गलियों से गुज़रते हों और अपने दस्ते मुबारक दीवारों को लगाते हुये चलते हों फिर इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने फ़रमाया ठीक है कि ऐसा नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो हो सकता है आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिस्म अक़दस के कपड़े कोई हिस्सा इन दीवारों से लग गया हो फिर लोगों ने कहा कि ऐसा भी नहीं हो सकता क्योंकि आप दीवारों से कुछ दूरी बनाकर चला

करते थे तो फिर इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने फ़रमाया ठीक है हमने माना कि ये नहीं हो सकता लेकिन ऐसा तो ज़रूर हुआ होगा कि मेरे आक़ा जब इन मदीने की गलियों से गुज़रते होंगे तो इन दीवारों पर आपकी निगाहे रहमत ज़रूर पड़ी होगी फिर लोगों ने कहा कि हज़रत ऐसा भी मुम्किन नहीं क्योंकि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम चलते थे तो आप अपनी नज़रें हमेशा नीची रखते थे फिर इमाम मालिक (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने फ़रमाया चलो हमने माना ये भी ठीक है लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे आक़ा सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का जिस गली से गुज़र हो और उस गली की दीवारों ने आपके रूख़े अनवर का दीदार न किया हो और जिन दीवारों ने मेरे महबूब का दीदार किया हो वो ताज़ीमो तकरीम और चूमने के क़ाबिल हैं इसलिये इनको चूमना मेरे लिये बेहतर और ख़ैरो बरकत का बाइस है।

और ये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है जब हम अपने आक़ा का नाम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम सुनते हैं तो हम अपने अगूँठों को चूमकर आँखों से लगाते हैं क्योंकि ये हुज़ूर से मुहब्बत की अ़लामत है इसी तरह जब आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के बेटे और लख़्ते जिगर हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र हो और दिल ग़मगीन और आँखें नम न हों तो ये अ़क़ीदत मन्दों और उनसे मुहब्बत रखने वालों के लिये कैसे मुम्किन हो सकता है बल्कि हक़ीक़त ये है कि जब हज़रत इमाम हुसैन या करबला का ज़िक्र होता है या जब ताज़िया नज़रों के सामने होता है तो उनसे मुहब्बत रखने वाले लोगों के आँसू जारी हो जाते हैं

क्योंकि जिस वक़्त ताज़िया उनकी नज़रों के सामने होता है उस वक़्त उनका ज़ाहिरी जिस्म ताज़िये के नज़दीक होता है लेकिन वो खुद हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) और करबला की यादों के तसव्वुर में खो जाते हैं और उनके दिल ग़मगीन और आँखें आबदीदाह हो जाती हैं।

लेकिन बाज़ लोग इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) के ग़म और उनकी याद में रोने पर भी एतराज़ करते हैं और कहते हैं कि किसी के ग़म या किसी की याद में रोना नाजाइज़ व बेसब्री की अ़लामत है जबकि अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद में हज़रत यूसुफ अ़लैहस्सलाम के ग़म और उनकी याद में हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम के रोने को फसबरुन जमील फ़रमाया (यानी बेहतर सब्र) और हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम कई सालों तक अपने बेटे हज़रत यूसुफ अ़लैहस्सलाम की जुदाई के ग़म और उनकी याद में इतना रोये कि रो-रो कर आपकी आँखें सफ़ेद हो गईं और अगर रोना नाजाइज़ या बेसब्री की अ़लामत होती तो अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में हज़रत याकूब अ़लैहस्सलाम के रोने को बेहतर सब्र क़रार न देता।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है-
और वो (यूसुफ अ़लैहस्सलाम को कुँऐ में फेंककर) अपने बाप के पास रात के वक़्त रोते हुये पहुँचे (और) कहने लगे ऐ हमारे बाप कि हम लोग दौड़ में मुक़ाबला करने चले गये थे और हमने यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया था उसे भेड़िये ने खा लिया और वो कमीज़ पर झूठा खून लगाकर ले आये (याकूब) ने कहा (हक़ीक़त ये नहीं है) बल्कि तुम्हारे

(हासिद) नफ़्सों ने एक (बहुत बड़ा) काम तुम्हारे लिये आसान और खुश गवार बना दिया (जो तुमने कर डाला) पस (इस हादसे पर) सब्र ही बेहतर है और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ उस पर जो कुछ तुम बयान कर रहे हो। (सू०–यूसुफ–16,–18)

और याकूब ने उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय अफ़सोस यूसुफ (की जुदाई) पर और उनकी आँखें ग़म से (रो–रो कर) सफेद हो गई सो वो ग़म को ज़ब्त किये हुये थे (यानी वो सब्र करते रहे) (सू०–यूसुफ–84)

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआ़ला ने रोना हक़ और ईमान की अ़लामत क़रार दिया है। कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–

और (यही वजह है कि उनमें बाज़ सच्चे ईसाई) जब सुनते हैं वो जो रसूल की तरफ़ उतरा तो उनकी आँखें देखो आँसुओं से उबल रहीं हैं इसलिये कि वो हक़ को पहचान गये हैं (और वो) कहते हैं ऐ हमारे रब हम ईमान लाये तू हमें हक़ के गवाहों में लिख ले। (सू०–मायदा–83)

सरवरे कौनेन सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की शहादत का जब–जब ज़िक्र किया तब–तब आप ग़मगीन हुये और आपकी चश्मे मुबारक से आँसू जारी हुये जिस वक़्त जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को हज़रत इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की शहादत की ख़बर दी तो आप ये ख़बर सुनकर आबदीदाह हो गये तो इन तमाम दलीलों

से साबित हुआ कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) के ग़म और उनकी याद में आँसू बहाना जाइज़ व सुन्नते रसूल और बेहतर अज्र का बाइस है।

बाज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़ियादारी यज़ीदी काम है कि जिस तरह यज़ीदियों ने हज़रत इमाम-आ़ली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) को शहीद करके उनके सरे मुबारक को नेज़े पर रखकर घुमाया था तो मैं उन बदअ़क़ीदा और बदनीयत रखने वाले लोगों से कहना चाहता हूँ कि जाहिल से जाहिल मुसलमान का भी अ़क़ीदा और नीयत ये नहीं होती कि वो सरे मुबारक को अपने काँधों पर रखे हुये है।

बल्कि उनका अ़क़ीदा और नीयत ये होती है कि जिस तरह नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपने प्यारे बेटों और नवासों यानी हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हुम को अपने काँधे मुबारक पर सवार किया था उसी तरह हम हुसैनी रोज़ा-ए-इमाम हुसैन यानी ताज़िये को अपने काँधों पर रख कर बा-नीयते ज़ियारत घुमाते हैं।

हदीस पाक में है कि हर इन्सान के आमाल का दारोमदार उसकी नीयतों पर है और अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे का सिर्फ़ बातिन यानी उसकी नीयतों को देखता है कि मेरे बन्दे की नीयत और इरादा क्या है और अल्लाह तआ़ला हर इन्सान को उसके नेक आमालों का बदला उसके ज़ाहिर को देखकर नहीं देता बल्कि उसकी नेक नीयतों को देखकर अ़ता करता है जैसे अगर कोई शख़्स अपनी इ़बादत या नेक अ़मल लोगों को दिखाने के लिये करता है तो उसे अपनी

इ़बादत व नेक अ़मल का कोई भी अज्र (बदला या सवाब) नहीं मिलेगा क्योंकि हर नेक अ़मल के लिये नेक नीयत का होना ज़रूरी है।

जिस तरह हम अपनी आँखों से माँ बहन बेटी बीवी वग़ैराह को देखते हैं लेकिन उन तमाम लोगों को देखने की नज़र व नीयत और अ़क़ीदा अलग-अलग होता है अगर कोई शख़्स ये कहे कि कोई शख़्स अपनी आँखों से तमाम लोगों को अलग-अलग नज़र से कैसे देख सकता है क्योंकि आँखें तो दो ही होती हैं तो ये उसकी बद अ़क़ीदगी व बद नीयती और बद गुमानी की दलील है क्योंकि आँखें दो हैं निगाह एक है लेकिन उस निगाह में नीयतें हज़ारों हैं और जो लोग ताज़िये के बारे में इस तरह का ख़्याल करते हैं कि इमाम हुसैन का सरे मुबारक को लोग लिये घूमते हैं तो ये उनकी बद नीयती और बद गुमानी है और बद गुमानी सख़्त गुनाह है और उन्हें चाहिये कि इस तरह के बुरे ख़्यालात व बद नीयतों और बद गुमानियों से बचें और इस तरह के गुनाहों से इजतिनाब करें ताकि अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और गुनाहों से महफ़ूज़ रहें और ताज़िये को ताज़ीमो तकरीम की नज़र से देखें

इसी तरह का एक सवाल आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) से किया गया कि ताज़िया परस्त का ज़िब्हा हलाल है या हराम तो आप ने जवाब में फ़रमाया- कि कोई जाहिल से जाहिल मुसलमान भी ताज़िये को माअ़बूद नहीं जानता और ताज़िया परस्त का लफ़्ज़ बहाबियों की ज़्यादती है जिस तरह ताज़ीम व तकरीम मज़ारात तइयबा पर मुसलमानों को क़ब्र परस्त का लक़ब देते हैं ये सब

उनकी जहालत व बे इल्मी व जुल्म है।
(फ़तावा रज़विया–24/500)

मुहर्रमुल हराम ग़म और ख़ुशी दोनों का महीना है ग़म इस बात का है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) और आपके ख़ानदान और आपके साथियों पर तकलीफ़ों और मुसीबतों के पहाड़ टूटे और उस पर भूक व प्यास की शिद्दत हत्ता कि मासूम बच्चों को भी पानी मयस्सर न हुआ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की गोद मुबारक में आपके लख़्ते जिगर अ़ली असगर को शहीद किया गया एक ऐसा तीर अ़ली असगर की गर्दन में लगा कि खून के फ़व्वारे निकल पड़े और मैदाने करबला की ज़मीन शहीदों के खून से लाल हो गई और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्स्लाम) ने अपने जिस्मे अक़दस में बे शुमार जख़्मों के अलावा बे शुमार तकलीफें और मुसीबतें उठाईं और आख़िर में आप भी हालते सजदे में शहीद कर दिये गये।

और ख़ुशी इस बात की है कि हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) तमाम तकलीफ़ों को बर्दास्त करते हुये सब्र और अल्लाह तआ़ला की रज़ा पर राज़ी रहे और ऐसे नाजुक व सख़्त परेशानियों भरे हालातों पर साबित क़दमी रहते हुये शहादत का जाम नोश फ़रमाया इसलिये तमाम मुसलमानों के लिये ये बड़े फ़ख़्र और ख़ुशी की बात है और अल्लाह तआ़ला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है– कि जो लोग मेरी राह में मारे जायें उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वो ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा का ग़म नहीं बल्कि ख़ुशी मनाई जाती है इस तरह माहे मुहर्रम ग़म और ख़ुशी दोनों का महीना है।

बाज़ लोग कहते हैं कि शरअ़ में ताज़ियादारी की कुछ असल नहीं और ये फ़ेअ़ल बिदअ़त व नाजाइज़ है तो मैं उनसे ये पूँछना चाहता हूँ कि कुरान व हदीस और फ़िक़ा में इसकी मुमानियत कहाँ पर आई है हालाँकि गुज़िश्ता सफ़ा पर कुरान व अहादीस की रोशनी में ये बात साबित हो चुकी है कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है और कुरान मजीद की सूरह हज की आयात से भी वाज़ेह हो चुका है।

कि वो हर चीज़ अल्लाह तआ़ला की निशानी है जिसे देखकर अल्लाह व रसूल और अल्लाह वाले याद आ जायें तो ताज़िये को देखकर इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की याद आना इस बात पर दलालत करता है कि ताज़िया भी अल्लाह तआ़ला की निशानी है और जो लोग अल्लाह तआ़ला की निशानियों और यादगारों का एहतमाम करते हैं ये फ़ेअ़ल उनके दिलों का तक़वा है यानी ताज़िया बनाना और लोगों को उसकी ज़ियारत कराना एक अच्छा व बेहतरीन और महबूब व मक़बूल अ़मल है।

और अहादीस मुबारका से भी ये बात साबित हो चुकी है कि जिस काम के लिये अल्लाह व रसूल ने ख़ामोशी इख़्तियार की है या जिस अम्र (काम) या फ़ेअ़ल की हमें मुमानियत नहीं फ़रमायी वो काम हमारे लिये माफ़ हैं ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह व रसूल की ख़ामोशी इस बात पर दलालत करती है कि ताज़ियादारी नाजाइज़ नहीं बल्कि जाइज़ व सवाबे दारैन है और ताज़ियादारी करना ये हमारी इमाम हुसैन से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत है और जिसे इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से मुहब्बत हो वो ताज़ियादारी करे और

उनकी यादगार मनाये और जिसे उनसे मुहब्बत न हो तो वो उनकी यादगार न मनाये।

दुनियाँ में बहुत से काम दीन में नये हुये हैं जो कुरान व हदीस से साबित नहीं लेकिन वो तमाम काम दीन और मुसलमानों के लिये फ़ायदेमन्द साबित हुये हैं और वो तमाम काम हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के बाद बिसाल अ़मल में आये जैसे कुरान का एक साथ जमा होना, कुरान मजीद के हरूफ़ पर ज़ेर, ज़बर, पेश, वग़ैराह का लगाना, जुमा के दिन वक़्ते जुमा एक और अज़ान का इज़ाफा करना, मस्जि़दों में अ़ौरतों का न आना और जमाअ़त में अ़ौरतों की शिर्कत से मुमानियत, रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करना वग़ैराह और जिस नये काम को करने से दीन या मुसलमानों को फ़ायदा पहुँचे वो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतर और पसंदीदा होता है और इसे बिदअ़ते हसना कहते हैं यानी अच्छी बिदअ़त और दीन में नया वो काम जिससे दीन या मुसलमानों को नुकसान पहुँचे उसे बिदअ़ते सइया कहते है यानी बुरी बिदअ़त इसलिये सबसे पहले हमें बिदअ़त का माना और मफ़हूम को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये ताकि किसी अच्छे या बुरे काम में फ़र्क़ करने में हमसे ग़लती न हो और किसी काम को बुरा कहने से पहले अच्छी तरह समझ लें कि ये काम अच्छा है या बुरा सही है या ग़लत और ये बिदअ़ते हसना है या बिदअ़ते सइया तब उसके बाद किसी काम के मुताअ़ल्लिक़ अच्छा या बुरा ख़्याल करें यही सही और अच्छा तरीक़ा है और यही दीन व मुसलमानों के हक़ में बेहतर है।

बाज़ लोग ईद मीलादुन्नबी का जश्न मनाने पर भी एतराज़ करते हैं और इसे बिदअ़त क़रार देते हैं हालाँकि ये बहुत बेहतरीन अ़मल है और बे शुमार अज्र का बाइस है जो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की मुहब्बत व अ़क़ीदत के सबब किया जाता है और इस अ़मल से बे शुमार दीनी व दुन्यावी व उख़रवी फ़वाइद हैं और ईद मिलादुन्नबी का जश्न हम मुसलमानों के दिलों में नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की मुहब्बत की नूरानी रोशनी और ईमान में निखार लाता है और जो शख़्स इस जश्न को मनाने पर एतराज़ करे या बिदअ़त कहे वो खुद को हुजूर का उम्मती होने का गुमान भी न करे क्योंकि जिसे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और उनके अहले बैत से मुहब्बत नहीं गोया वो मुसलमान ही नहीं कायनात में हम तमाम मुसलमानों के लिये ईद मिलादुन्नबी से बढ़कर कोई जश्न व खुशी और मक़ामे मशर्रत नहीं।

सरकारे दो अ़ालम की आमद पर दो अ़ालम में खुशियाँ मनाईं गईं और हम भी इस मुबारक दिन पर खुशियों का इज़हार करते हैं और उनका उम्मती होने का सुबूत पेश करते हैं आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तशरीफ़ आवरी की वो सुहानी बा बरकत घड़ी को याद करना और खुशियाँ मनाना ये हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से सच्ची मुहब्बत की अ़लामत है और इससे दीन या मुसलमानों को किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता फिर भी इस बेहतर अ़मल को बिदअ़त क़रार देना ये उनकी बद अ़क़ीदगी और कम अ़क़्ली की दलील है और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से उनकी मुहब्बत महज़ दिखावा है।

तो जिस तरह हम सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आमद की यादगार मनाते हैं उसी तरह हम उनके नूरे नज़र दिल के फूल व जिगर के टुकड़े हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की यादगार मनाते हैं तो हम इसमें क्या ग़लत करते हैं जो बाज़ लोगों को बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती है नाना की यादगार मनाना और नवासे की यादगार न मनाना क्या ये सही व दुरस्त है यानी हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की यादगार मनाने को जाइज़ कहना और उनके नवासे हज़रत इमाम हुसैन की यादगार मनाने को नाजाइज़ कहना क्या ये ना इंसाफी नहीं बल्कि ऐसा कहना इमाम हुसैन से मुहब्बत करने और अ़क़ीदत रखने वालों पर जुल्म व ज़्यादती है हज़रत इमाम हुसैन की यादगार हम जुलूसे ताज़िया की शक्ल में मनाते हैं जैसे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आमद की यादगार हम जुलूस की शक्ल में मनाते हैं तो इसमें हम क्या बुरा करते है जो लोग हमें इससे रोकते और बिदअ़त व नाजाइज़ का फ़तवा देते हैं।

हालाँकि हक़ीक़त ये है कि जब हम हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत की मुहब्बत में यादगारे हुसैन मनाते और जुलूसे ताज़िया निकालते हैं तो हमारा ये फ़ेअ़ल अल्लाह व रसूल के नज़दीक बेहतरीन व पसंदीदा है और इस फ़ेअ़ल के इहतिमाम करने से हमारे आक़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को बहुत ज़्यादा खुशी मिलती है और हुजूर को खुश करना गोया अल्लाह तआ़ला को खुश व राज़ी करना है और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को खुशी पहुँचाने के सबब हमें उनकी कुर्बत नसीब होती है जो हमें कुर्बे इलाही की मन्ज़िल तक पहुँचाती है।

हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की यादगार मनाने से हमारे दिलों में मौजूद उनकी मुहब्बत और ईमान में पुख़्तगी व निखार आता है और हमारे और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के दरमियान तअ़ाल्लुक़ातों में मज़बूती आती है और ये मज़बूती हमें हुजूर और उनके अहले बैत के क़रीब कर देती है और हमारे दिल हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत की मुहब्बत से मुनव्वर होते हैं और ये मुहब्बत रोज़े क़यामत हमारे लिये शफ़ाअ़त का बेहतरीन ज़रिया होगी

जुलूसे हुसैनी यानी ताज़ियादारी करने से दीन या क़ौम को किसी क़िस्म का कोई नुकसान नहीं होता और ना ही किसी मुसलमान को किसी तरह की कोई तकलीफ़ व परेशानी होती है हाँ अगर इसमें कुछ काम ख़िलाफ़े शरअ़ हैं तो हमें चाहिये उन कामों से परहेज़ करें और ताज़ियादारी में शामिल बुराइयों को दूर करने की कोशिश करें लेकिन इस वजह से ताज़िया को नाजाइज़ या बिदअ़त कहना गोया इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अन्हु) और शुहदाये करबला से निफ़ाक़ रखने की दलील है।

जिन बुराईयों की वजह से बाज़ लोग जुलूसे हुसैनी या रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को नाजाइज़ या हराम कहते हैं और फ़तवा देते हैं तो मैं उनसे एक सवाल करता हूँ ठीक इसी तरह की बुराईयाँ दीगर कामों में भी पायी जाती है तो वो लोग उन कामों को नाजाइज़ व हराम क्यों नहीं कहते और उन कामों पर नाजाइज़ व हराम फ़तवा जारी क्यों नहीं करते क्या ये हक़ और इंसाफ की बात है।

मिसाल के तौर पर बाज़ार में दुकानदार से ज़रूरत का सामान ख़रीदने के लिये बहुत सी ना मेहरम औ़रतें भी आती हैं और दुकानदार अपनी सौदा बेचने के लिये उन औ़रतों से बातचीत भी करता है और उनमें अक्सर औ़रतें बे पर्दा होती हैं और सौदा को परखने समझने फिर सौदा को अपनी पसन्द के मुताबिक़ इन्तेख़ाब करने और सौदा की क़ीमत तय करने यानी इस दरमियान दुकानदार और औ़रत कुछ वक़्त बाहम गुफ़्तगू करते हैं और दोनो लोगों की निगाहें एक दूसरे पर कई बार पड़ती हैं और कभी-कभी दिल में बद-ख़्याली भी पैदा होती है और कभी-कभी बद निगाह और बद ख़्याली उसे ज़िना जैसी बड़ी बुराई और गुनाह की तरफ़ ले जाती है और बाज़ लोग तो ज़िना की तरफ़ माइल हो जाते हैं और वो इस गुनाह के मुरतकिब हो जाते हैं और बाज़ लोग तो झूठ, फ़रेब, धोका, बेईमानी पर मुश्तमिल अपनी सौदा को बेचते हैं और हराम माल कमाते हैं और ये तमाम बातें बुराई व गुनाह हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से तिजारत करना नाजाइज़ व हराम होगा- हरगिज़ न होगा।

इसी तरह जब हम बाज़ार जाते तो रास्तों और बाज़ारों में बहुत सी औ़रतें बे पर्दा घूमती हैं या जब हम सफ़र पर जाते हैं तो रास्तों में, रेलवे प्लेटफार्म पर, ट्रेनों में, हवाई जहाज़ पर अक्सर औ़रतें बे पर्दा होती हैं और अक्सर लोगों की बद निगाह उन औ़रतों पर पड़ती है और दिल में बुरे ख़्यालात पैदा होते हैं और इसके अलावा दीगर बहुत सी बुराईयाँ बाज़ारों और सफ़र के रास्तों के दरमियान हाइल होती हैं तो क्या इन बुराईयों की वजह से बाज़ार जाना या सफ़र करना हराम व नाजाइज़ होगा- हरगिज़ न होगा।

बुराई तो शैतान की तरह हर जगह मौजूद है तो क्या हर जगह जाना बुरा और गुनाह है बल्कि हमें चाहिये कि जिन अच्छे और सवाब के कामों के साथ बुराई भी जुड़ी हुई हो तो हम सिर्फ़ बुराई से बचें और अच्छे कामों के साथ बुराई जुड़ी होने की वजह से अच्छे कामों को तर्क न करें यही अ़क्लमन्दी की अ़लामत है और दुनियाँ व आख़िरत में हमारे लिये बेहतर और ख़ैरो बरकत व अज्र का बाइस है।

हदीस पाक में है हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने बाज़ार को ज़मीन पर सबसे बुरी जगह बताया लेकिन कभी बाज़ार जाने या बाज़ार में तिजारत करने को मना नहीं फ़रमाया बल्कि बाज़ार और तिजारत में वाकैअ़ होने वाली बुराईयों और गुनाहों से बचने की हमें ताकीद फ़रमाई और यही तरीक़ा हमारा भी होना चाहिये कि हम खुद को बुराईयों और गुनाहों से पाक रखने की हर मुमकिन कोशिश करें और उन अच्छे कामों को करना न छोड़े जिनसे कुछ बुराईयाँ भी वाबस्ता हैं।

इसी तरह शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब भी कई तरह की बुराइयों और गुनाहों पर मुश्तमिल होती हैं लेकिन ताज़िया और जुलूसे हुसैनी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोगों को वहाँ कोई बुराई नज़र नहीं आती है बल्कि वो लोग उम्दाह लिवास ज़ैबे तन करके उन तक़रीबों में शिर्कत करते और खाते पीते बैठते उठते और लोगों से गुफ़्तगू करते और निकाह पढ़ाते और नज़राना हासिल करते और उन्हें को मुबारक बाद देते और वो कभी भी ऐसी जगहों से एराज़ नहीं करते चाहे वहाँ खड़े होकर खाना-पीना हो या औ़रतों की

बेपर्दगी हो मर्दों व औ़रतों का बाहम हंसी मज़ाक, आतिशबाजी, बैन्ड, बाजा व दीगर ग़ैर मुस्लिमों की बुरी रस्में हों लेकिन वो लोग इन तमाम बुराइयों व गुनाहों से बे परवाह रहते हैं हम रोज़ बाज़ार जाते हैं और साल भर में सैंकड़ों शादी ब्याह व दीगर तक़ारीब में शिर्कत करते हैं लेकिन बाज़ार व शादी ब्याह वग़ैराह में उन्हें कोई भी काम ख़िलाफ़े शरअ़ दिखाई नहीं देता और न कोई बुराई नज़र आती है और जुलूसे हुसैनी (ताज़िया) साल में एक बार निकलता है तो उन्हें इसमें बहुत सी बुराइयाँ दिखाई देती हैं हालाँकि हम पर वाजिब है कि हम जहाँ कहीं भी किसी बुराई या ख़िलाफ़े शरअ़ काम को देखें तो उसे अपनी ताक़त के मुताबिक़ रोकने की हर मुमकिन कोशिश करें चाहें बाज़ार हो या शादी ब्याह हो या जुलूसे हुसैनी हो या दीगर कोई भी मजालिस हो या तक़रीब लेकिन बुराई के साथ अच्छाई को भी ख़त्म करना ये हिमाक़त और कम इ़ल्मी की दलील है और हमें इससे इजतिनाब (परहेज़) करना चाहिये।

हालाँकि शरीअ़त हमें इस बात की क़तअ़न इजाज़त नहीं देती कि किसी अच्छे या नेक काम के साथ बुराई जुड़ी हो तो उस अच्छे काम को नाजाइज़ या हराम क़रार दिया जाये बल्कि जो काम शरअ़न जाइज़ हैं या जिस काम को अल्लाह व रसूल ने जाइज़ व हलाल क़रार दिया या जिस काम की अल्लाह व रसूल ने हमें मुमानिअ़त नहीं फ़रमाई तो उस काम को नाजाइज़ या हराम गुमान करना भी सख़्त गुनाह है और हर अच्छे काम का सवाब मिलता है और हर बुरा काम गुनाह है इसलिये हमें चाहिये कि बुरे कामों से परहेज़ करें और अच्छे कामों की तरफ़ राग़िब हों

और ताज़िया जो असल में इमाम आ़ली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) के रोज़ा–ए–पाक की नक़्ल है उसकी ताज़ीम व तकरीम करना और इमाम हुसैन की यादगार मनाना और जुलूसे हुसैनी में ताज़िये की ज़ियारत करना और लोगों को ज़ियारत कराना यह एक अच्छा अ़मल है जो बेहतर अज्र का बाइस है इसलिये हमें चाहिये कि इस अ़मल को बड़े जोश व मुहब्बत और खुलूस और एहतमाम के साथ करें इंशा अल्लाह हम और आप इस अच्छे अ़मल का बेहतरीन अज्र पायेंगे।

बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो बे नमाज़ी हैं जब जी चाहा नमाज़ पढ़ली और जब जी नहीं चाहा तो नहीं पढ़ी इसके अलावा टी०वी० और मोबाइल पर फिल्में देखते टी०वी० सीरियल बड़े शौक़ और एहतमाम से देखते हैं और टी०वी० और मोबाइल पर गाने सुनते हैं और दीगर बहुत से बुरे काम करते हैं और बड़े खूबसूरत अंदाज़ से ताज़ियादारी और जुलूसे हुसैनी को नाजाइज़ व हराम कहते हैं लेकिन खुद का मुहासिबा नहीं करते और ना ही अपनी बुराइयों पर ग़ौरो फ़िक्र करते हैं जबकि नमाज़ फ़र्ज़ है हमें हर हाल में पढ़नी होगी रमज़ान के रोज़े फ़र्ज़ हैं हमें हर हाल में रखने चाहिये और दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और वो आमाल जिनका हमें अल्लाह व रसूल ने करने का हुक्म दिया है वो हमें ज़रूर करना चाहिये लेकिन बाज़ लोग इन तमाम आमालों से वे फ़िक्र और वे परवाह होते हैं लेकिन जुलूसे हुसैनी व ताज़िये की मुख़ालिफ़त करते नहीं थकते और खुद को दीनदार मुत्तक़ी व परहेज़गार गुमान करते हैं क्या ये उनकी कम अक़्ली व वे इ़ल्मी और हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से

निफ़ाक़ रखने की दलील नहीं है।

हालाँकि हकीक़त ये है कि ताज़ियादारी करने से इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) व दीगर शुहदा-ए-करबला की यादें ताज़ा होती हैं और ये ख़्याल आता है कि हमारे इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) ने दीन इस्लाम के लिये खुद को कुरबान कर दिया और अपने ख़ानदान को दीन पर निछावर कर दिया ये इब्रत हमारे लिये बाइसे ख़ैर है जो हमें सबक़ देती है कि हम भी उनकी राह पर चलें और खुद को दीन इस्लाम के लये वक़्फ़ कर दें और उनका रास्ता इख़्तियार करें व उनकी मुहब्बत में खुद को ग़र्क़ कर दें जिसने हमारे दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त की तो उनकी यादगार मनाना हमारे लिये बेहतर अ़मल है जिसने हमारे दीन को बचाने के लिये सब कुछ किया तो उनकी याद को ताज़ा करना और अपने दिलों को उनकी याद और उनकी मुहब्बत से मुनव्वर करना और अपने ईमान को नया निखार देना ये दुनियाँ और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर व अफ़ज़ल है।

जब कोई शख़्स ताज़िये को देखता है तो उस वक़्त वो ताज़िये के क़रीब होता है लेकिन उसका ख़्याल व तसव्वुर हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) व करबला की तरफ मुतवज्जै होता है जो उसके दिल को ग़मगीन और आँख को रोने पर मजबूर कर देता है और उनकी याद में आँख से निकला हर आँसू अहले बैत से मुहब्बत की गवाही देता है और जिस तरह हम इमाम अ़ाली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) के नाना जान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आमद की यादगार मनाते हैं उसी तरह जब हम हुज़ूर

सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के नवासे व बेटे इमाम हुसैन की यादगार मनाते हैं और ये फ़ेअ़ल मुहब्त व अ़क़ीदत से वाबस्ता है और दुनियाँ की कोई भी चीज़ किसी के दिल से मुहब्बत व अ़क़ीदत को नहीं निकाल सकती क्योंकि अल्लाह व रसूल और अहले बैत की मुहब्बत ईमान की बुनियाद है और जिस चीज़ की बुनियाद मज़बूत होती है तो वो उस चीज़ की पुख़्तगी और मज़बूती के लिये कारसाज़ होती है इन तमाम दलाइल से ये बात साबित होती है कि इमाम हुसैन की यादगार मनाना व ताज़ियादारी करना व जुलूसे हुसैनी में ताज़ियों की ज़ियारत करना और लोगों को ताज़ियों की ज़ियारत कराना सब जाइज़ व सवाबे दारैन है।

अ़शरा मुहर्रम में ताज़ियादारी औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-किराम ने बड़े जोश व मुहब्बत, और एहतराम व एहतमाम के साथ की है और जिस काम को औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-किराम ने किया हो वो काम नाजाइज़ व ग़लत हो ही नहीं सकता क्योंकि ये लोग अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रबीन नेक सालिहीन महबूब बन्दे हैं जो कभी नाजाइज़ व हराम काम की तरफ़ निगाह भी नहीं करते और छोटी से छोटी कम दरजे वाली सुन्नतों को भी तर्क नहीं करते और वो आला मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं और अल्लाह तआ़ला ने उन्हें विलायत से सरफ़राज़ फ़रमाया और उनके दरजात को इ़ज़्ज़तो एज़ाज़ से सर बुलन्द फ़रमाया।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है-
सुनलो बेशक अल्लाह तआ़ला के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म वो जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते हैं उन्हें खुशख़बरी है दुनियाँ में और

आख़िरत में (और) अल्लाह तआ़ला की बातें बदल नहीं सकती (और) यही बड़ी कामयाबी है।
(सू०-यूनुस-63,-64)

हमारे पीरो मुर्शिद आले रसूल सइयद अ़ल्लामा मौलाना उवैस मुस्तफ़ा साहब बिल्ग्रामी अ़शरा मुहर्रम की सात तारीख़ को एक अ़लम उठाते हैं और गलियों में घुमाते हैं और हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास करबला में जो अ़लम था उस अ़लम का एक मुतबर्रक टुकड़ा सैइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब क़िब्ला के पास मौजूद है उस मुबारक टुकड़े को पहले गुस्ल दिया जाता है फिर उसे अ़लम में नसब करके हज़रत सइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब उस अ़लम को लोगों की ज़ियारत के लिये बिलग्राम शरीफ़ की गलियों में बाअदबो एहतराम घुमाते हैं और ये इमाम हुसैन (अ़लैहस्स्लाम) की यादगार मनाने और ताज़ियादारी के जाइज़ होने की ज़िन्दा नज़ीर है।

मो० कासिम नियाज़ी बरेलवी ने अपनी किताब फज़ाइले अहले बैत में हज़रत शाह नियाज़ का वाक्या यूँ लिखते हैं कि आफ्ताबे शरीअ़त हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ साहब चिश्ती क़ादरी बरेलवी (रहमतुल्लाह अ़लैह) जिनके दर पे अहले तरीक़त व अहले शरीअ़त सब अ़क़ीदत के साथ अपना सर झुकाने में फ़ख़्र महसूस करते हैं आपका वाक्या करामाते निज़ामियाँ में लिखा है कि एक बार हज़रत नियाज़ बे नियाज़ के साथ सूरत के रहने वाले एक आ़लिम ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रहमतुल्लाह अ़लैह) का हमेशा ये तरीक़ा था कि आप ताज़िये के तख़्त को हाथ लगाकर अपने मुँह

व क़ल्ब (दिल) पर फेरते थे मगर इस बार हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को बोसा दे दिया यह देखकर आपके साथ जो अ़ालिम साहब थे उनके दिल में ख़्याल आया कि हज़रत साहब ने ये क्या ग़ज़ब कर दिया कि ताज़िये के तख़्त को मुँह से बोसा दे दिया।

अ़ालिम साहब के दिल में जैसे ही ये ख़्याल आया तो हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रहमतुल्लाह अ़लैह) को इसकी ख़बर हो गई क्योंकि आप बहुत बड़े बुजुर्ग और अल्लाह तअ़ाला के वली थे फिर हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ ने अ़ालिम साहब से फ़रमाया कि ताज़िये की तरफ़ देखिये फ़िर अ़ालिम साहब ने ताज़िये की तरफ़ देखा तो क्या देखते हैं कि ताज़िये के दोनों तरफ़ इमाम हसन व इमाम हुसैन(अ़लैहिमुस्सलाम) खड़े हैं और अ़ालिम साहब ने जब ये देखा तो उन पर रिक्क़त तारी हो गई और वो ज़मीन पर लोटने लगे इसके बाद हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ (रह०) और ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गये।

जिन उ़ल्मा-ए-किराम ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहा है वो इस वजह से कहा है कि उनके वक़्ते हयात में जो ताज़िये बनाये जाते थे वो जानदार तस्वीरों पर मुश्तमिल होते थे जैसे मोर, घोड़ा, पुतली, बुर्राक़, परी वग़ैराह लेकिन बदलते ज़माने और हालात ने इन जानदार तस्वीरों के ताज़िये में चलन को ख़त्म कर दिया है और आज हालात ये हैं कि मौजूदा दौर में ताज़ियों में जानदार की तस्वीर नहीं होती और ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना शरअ़न जाइज़ है जो कि अहादीस से साबित है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ (रहमतुल्लाह

अ़लैह) फ़रमाते हैं कि ताज़िये की असल इस क़दर थी कि रोज़ा-ए-इमाम हुसैन की सही नक़ल बनाकर बा नीयत तबर्रुक मकान में रखना इसमें शरअ़न हर्ज न था तस्वीर मकानात वग़ैराह ग़ैर जानदार की बनाना व रखना सब जाइज़ है। (फ़तावा रज़विया-24/513)

आला हज़रत की इस तहरीर से वाज़ेह हुआ कि ताज़िया बनाना जाइज़ है और सही नक़ल से मुराद ताज़िये में जानदार तस्वीर न हो लेकिन बाज़ लोग ये कहते हैं कि सही नक़ल से मुराद ये है कि करबला में जैसा हज़रत इमाम हुसैन का रोज़ा है वैसा ही बनाओ लेकिन ये सिर्फ़ इल्मी अ़क्ल की समझ का फ़र्क़ है क्योंकि कई लफ़्ज़ ऐसे होते हैं जिनके कई मायने होते हैं और ज़रूरत के मुताबिक़ हम उन्हें अपने इस्तेमाल में लेते हैं जैसे-वली का माना दोस्त, मददगार, कफ़ील (सरपरस्त,ज़िम्मेदार) और वो शख़्स जो खुदा के क़रीब हो, वारिद का माना आने वाला और मौजूद है, क़िब्ला का माना काबा और कलमा ताज़ीम है, असबाब का माना सामान और सबब की जमा है, औक़ात का माना हैसियत और वक़्त की जमा है, अम्र का माना फ़ेअ़ल, हुक्म और काम है, कज़ा का माना हुक्मे खुदा व मौत और वो इबादत जो मुक़र्रर वक़्त के बाद अदा की जाये,रक़म का माना तहरीर व माल व दौलत है अहल का माना मालिक व लायक़ और ख़ानदान, वग़ैराह हैं।

इसी तरह हमारे चारो इमामों में बहुत सी बातों के मुताअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है हालाँकि चारों हक़ पर हैं फ़र्क़ ये कि जिसके क़यास में जो बात आई वही उन्होंने लिख दी या बयान कर दी किसी ने कहा कि फ़लाँ बात सुन्नत है तो किसी ने उसको वाजिब कहा

और किसी ने फ़र्ज़े किफ़ाया कहा ये इल्मी अक़्ल की समझ का फ़र्क़ है और रोज़ा-ए-इमाम हुसैन जो कि एक इमारत की नक़ल है और इमारतों की तामीरात अक्सर होती रहती है और उनके नक्शे बदलते रहते हैं एक ज़माने में ख़ाना-ए-काबा व मस्जिदे नबवी की तस्वीर कुछ और थी लेकिन आज कुछ और है और जिस चीज़ को हम दिल से मुकम्मल तौर पर मान लें वो चीज़ वही हो जाती है जैसे हमने ईंट सीमेन्ट बालू वग़ैराह से एक चार दीवारी बनाई और दिल से मान लिया ये मस्जिद है तो वो मस्जिद हो जाती है।

इसके लिये ज़रूरी नहीं कि मस्जिदे हराम या मस्जिदे नबवी की सही नक़ल हो तभी मस्जिद होगी ऐसा ख़्याल रखना हिमाक़त और ग़लत व बे बुनियाद है इसी तरह हमनें ताज़िया बनाया और दिल से मान लिया कि ये रोज़ा-ए-इमाम हुसैन है तो यक़ीनन वो रोज़ा-ए-इमाम हुसैन है और यही हमारा अ़क़ीदा होना चाहिये क्योंकि ईमान की बुनियाद अ़क़ीदे पर होती है और अच्छा गुमान व सही अ़क़ीदा हमें निजात की तरफ़ ले जाता है और बद गुमानी और बद अ़क़ीदा हमें गुमराही की तरफ़ ले जाता है।

कुरान व हदीस हम सुन्नी भी पढ़ते हैं और देवबन्दी वहाबी भी पढ़ते हैं लेकिन फ़र्क़ समझ और अ़क़ीदे का है हमारी अच्छी सोच और अच्छी समझ और सही अ़क़ीदा हमें अल्लाह व रसूल के रास्ते की तरफ़ ले गया और देवबन्दी वहाबी की बुरी सोच और बदअ़क़ीदा उन्हें गुमराही और दोज़ख़ की तरफ़ ले गया और बाज़ मज़मून या तहरीर या मसाइल को पढ़ना आसान है लेकिन उनका समझना बहुत मुश्किल है।

और यही मुश्किलात इख़्तिलाफ़ की वजह बनती है इसलियें हमें चाहिये इस मामले में वहस न करें बल्कि अच्छी सोच व समझ पैदा करें और सही अ़क़ीदा रखें ताकि हर बात को समझने में हमें आसानी हो।

आला हज़रत (रहमतुल्लाह अ़लैह) के ज़माने में जो ताज़िये बनाये जाते थे वो जानदार सूरतों पर मुश्तमिल होते थे और उनके साथ कुछ ग़ैर शरई उमूर भी ताज़ियादारी में शामिल थे इसलिये आला हज़रत अहमद रज़ा खाँ ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ क़रार दिया और मज़कूरा तहरीर में नीज़ फ़रमाया ताज़ियों में जानदार की तस्वीरें परियाँ, बुर्राक़ वग़ैराह और अ़शरा मुहर्रम में सीना जनी मातम बाजे ताशे मर्द औ़रत का मेल जोल बेहूदा खेल तमाशे छतों पर बैठकर खाने की चीज़ें या और कोई चीज़ का फेंकना या लुटाना ये सब बातें ख़िलाफ़े शरअ़ हैं इस वजह से आला हज़रत अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने ताज़ियादारी को नाजाइज़ क़रार दिया।

ताज़िया व जुलूसे हुसैनी नाजाइज़ या हराम नहीं है बल्कि इसके साथ जो ख़िलाफ़े शरअ़ काम हैं वो ग़लत व नाजाइज़ हैं आला हज़रत अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) के फ़तबों से ये बात साबित हो चुकी है कि आपने ताज़ियादारी को नाजाइज़ सिर्फ़ इस वजह से कहा कि ताज़ियादारी में कुछ ग़ैर शरई उमूर भी शामिल थे और आप ताज़िये के ख़िलाफ़ नहीं थे बल्कि ताज़िये में जानदार की तस्वीरों की वजह से आपने ताज़िये को नाजाइज़ कहा लेकिन अब ताज़िये से जानदार तस्वीरों को मुकम्मल तौर पर हटा दिया गया है इसलिये ताज़िये को नाजाइज़ कहना बिल्कुल

ग़लत व बे बुनियाद है आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ ने अपने कई फ़तवों में राइजा या मुरव्वजा लफ़्ज़ का इस्तेमाल किया है और राइजा के माना ये है कि जो चीज़ उस वक़्त राइज (चलन) में हो आपके तहरीर किये हुये फ़तवे हस्वे ज़ैल हैं जिनमें राइजा लफ़्ज़ का इस्तेमाल हुआ है।

ताज़िया राइजा का बनाना व देखना जाइज़ नहीं।
(फ़तावा रज़विया–24/490)

अ़लम व ताज़िया व मेंहदी जिस तरह राइज है बिदअ़त है। (फ़तावा रज़विया–24/500)

ताज़िया राइजा नाजाइज़ व बिदअ़त है
(फ़तावा रज़विया–24/501)

बकालत का पेशा जैसा आजकल राइज है शरअ़न हराम है। (फ़तावा रज़विया–11/257)

आला हज़रत अहमद रज़ा ख़ाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते है–
अ़शरा मुहर्रम में इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) व दीगर शुहदा–ए–किराम के नाम से सद्क़ा ख़ैरात व ईसाले सवाब करो और इन अइयाम (दिनों) में रोज़े रखो और उनका सवाब इमाम हुसैन व दीगर शुहदा–ए–किराम की नज़र करो और अ़शरा मुहर्रम में गर्मियों के दिनों में शर्बत पिलायें और जाड़ों के दिनों में चाय वग़ैराह पिलायें खाने को चाहे कितना लज़ीज़ व वेश क़ीमती बनायें सब ख़ैर है खिचड़ा, पुलाव वग़ैराह जो चाहें बनायें मुहताजों को खिलायें अपने घर वालों

को खिलायें नेक नीयत से सब सवाब है।
(फ़तावा रज़विया–24/494)

इसलिये हम मुसलमानों को चाहिये कि शरई तरीक़े के मुताबिक़ ताज़ियादारी करें और इमाम हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से सच्ची मुहब्बत और अ़क़ीदत का सबूत दें और अ़शरा मुहर्रम में रोज़ा–ए–इमाम हुसैन (ताज़िया) बनायें और मुहब्बत व अ़क़ीदत व अदबो एहतराम के साथ उनकी ज़ियारत करें और जुलूसे हुसैनी की शक्ल में लोगों को रोज़ा–ए–इमाम हुसैन (ताज़िये) की ज़ियारत करायें ताकि हमारे लिये ये अ़मल ख़ैरो बरकत व सवाब का बाइस बने।

उ़ल्माये अहले सुन्नत व बुज़ुर्गाने दीन का ताज़ियादारी के मुताअ़ल्लिक़ कॉल व फ़ेअ़ल–

1–हज़रत शाह नियाज़ बे नियाज़ बरेलवी (रहमतुल्लाह अ़लैह) का मामूल था कि शबे आ़शूरा की रात में ताज़ियों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और जब हज़रत को ज़ॉफ हुआ (यानी कमजोरी की हालत में) दूसरे लोगों के सहारे से तशरीफ़ ले जाते थे और हज़रत ने ताज़िये के तख़्त को बोसा भी दिया।
(करामाते निज़ामियाँ–37)

2–हज़रत मुफ़्ती याकूब लाहौरी फ़रमाते हैं कि मुहर्रम अपने तमाम लमाजात के साथ करना जाइज़ है और ये अच्छा अ़मल है जो औलिया अल्लाह से साबित है।
(तोहफ़तुन नाज़रीन–52)

3–आले रसूल हज़रत सइयद अब्दुल रज़्ज़ाक़ बाँसवी

(रहमतुल्लाह अ़लैह) जिस वक़्त ताज़िया उठता तो आप खड़े रहते और जब ताज़िया रूख़सत होता तो आप नंगे पाँव ताज़िये के साथ जाते थे और दफ़न करके घर वापस आते थे और ये वो आले रसूल वली-ए-कामिल थे जिनकी नस्ल में से सैइयद हज़रत वारिस पाक (रहमतुल्लाह अ़लैह) तशरीफ़ लाये जिनकी दरगाह देवा शरीफ़ में है। (करामाते रज़्ज़ाकि़या-15)

4-शाह कुतबुद्दीन संभली का मामूल था कि आपके सामने ताज़िया आता तो आप बा अदब खड़े हो जाते थे और आप रोते रहते थे। (फ़तावा ताज़ियादारी-3)

5-शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी फ़रमाते हैं कि ताज़िये के सामने रखकर जो फ़ातिहा दी जाती है वो मुतबर्रक है। (फ़तावा अ़ज़ीज़ी-1/189)

6-सइयद अ़ल्लामा मौलाना महबूब उर रहमान नियाज़ी जयपुरी ने ताज़ियादारी की हिमायत में एक किताब तसनीफ़ फ़रमाई है और आपने ताज़ियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन और अच्छा फ़ेअ़ल बताया।
(मुहब्बते अहले बैत कुरान व अहादीस की रोशनी में)

7-हज़रत अ़ल्लामा सलामत अ़ली देहलवी शागिर्दे हज़रत शाह अब्दुल अ़ज़ीज़ देहलवी फ़रमाते हैं कि खुदा का शुक्र है कि ताज़ियादारी इस्लाम में है और इससे दीनी फ़ायदे होते हैं।
(तब्सरातुल ईमान- दीने मुहम्मदी और ताज़ियादारी)

8-हज़रत सइयद शाह अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ बाँसवी (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि ताज़िये को कोई ये

न जाने कि खाली काग़ज़ या पन्नी है बल्कि शहीदाने करबला की मुक़द्दस रूहें इस तरफ़ मुतवज्जै होती हैं। (करामाते रज़्ज़ाक़िया–15)

9–हज़रत नईमुद्दीन मुरादाबादी साहब (मुफ़स्सिरे कुरान) ताज़िया बनाने में पाबन्दी से चन्दा दिया करते थे और आपके साहबज़ादे और जांनशीन और जामये नईमियाँ मुरादाबाद के मुतवल्ली सैइयद इज़हारूद्दीन मियाँ साहब क़िब्ला का बयान है कि मेरे वालिद ने पूरी ज़िन्दगी में कभी ताज़िये की मुख़ालिफ़त नहीं की।
(फज़ाइले अहले बैत–35)

10–हज़रत अ़ल्लामा मौलाना भोले मियाँ साहब क़िब्ला सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया गंज मुरादाबाद जिला उन्नाव फ़रमाते हैं कि ताज़ियादारी करना, सवील लगाना, फ़ातिहा दिलाना जाइज़ व सवाबे दारैन है।
(फ़तवा– हज़रत अ़ल्लामा मौलाना भोले मियाँ साहब)

11–मौलाना तजम्मुल हुसैन रहमानी फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने इमाम हसन व इमाम हसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को उम्मत की सिफ़ारिश के लिये पैदा फ़रमाया है इस हक़ की अदायगी और इमाम आ़ली मक़ाम की ज़्यादा से ज़्यादा खुशी हासिल करने के लिये गुलामाने हुसैनी सवाब पाने की नीयत से सालाना यादगार को अपना सरमाये हयात बनाये हुये हैं हर साल हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम यादगारी उ़हद के लिये शुहदाए उ़हद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते थे और उनके लिये दुआ़ये रहमत करते थे। (कमालाते रहमानी–121)

12–हज़रत सइयद हाजी वारिस पाक (रहमुतल्लाह अ़लैह) ताज़िया वाले घरों पर तशरीफ़ ले जाते थे और कभी बैठते थे और कभी खड़े रहकर लौट आते थे और बस्ती के तमाम ताज़िये आपके दरबार तक आते थे और उस वक़्त आप बाहर खड़े होकर ताज़ियों की ज़ियारत किया करते थे। (मिशकात–ए–हक्कानियाँ–84)

13–शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ देहलवी का मामूल था कि आप ताज़िये को काँधा लगाते थे। (फ़ज़ाइले अहले बैत–35)

14–आले रसूल हज़रत अ़ल्लामा मौलाना क़ारी व हाफ़िज़ सइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब सज्जादा नशीन बिलग्राम शरीफ़ मुहर्रम की सात तारीख़ को मुहब्बत और खुलूस और एहतराम व एहतमाम के साथ अ़लम उठाते और ज़ियारत के लिये गलियों में ले जाते हैं और हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास जो अ़लम करबला में था उसका एक मुतर्बरक टुकड़ा जो हज़रत सइयद उवैस मुस्तफ़ा साहब के पास मौजूद है और वो उस टुकड़े को इस अ़लम में नसब करते हैं।

15–उ़ल्माये मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा का फ़तवा मुहर्रम में मुरव्वजा ताज़िया वाजिबुल एहतराम है और दस मुहर्रम को फ़ातिहा दिलाना लाज़िम है और शरबत की सबील और मलीदा खिचड़ा वग़ैराह ताज़िये पर रखकर फ़ातिहा दिलाना तबर्रुक है (फ़तावा मकइया–37, –38–सालेह इब्ने अहमद मक्का मुकर्रमा व अबू तुराब उमरी मदीना मुनव्वरा)

–: ताज़ियादारी एक महबूब व मक़बूल अ़मल है :–

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहस्सलाम इमारते इस्लाम के सुतून हैं दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये ख़ानबादा–ए–रसूल की कुर्बानी दीन इस्लाम के लिये एक बे मिस्ल अम्रे अ़ज़ीम थी जिससे इस्लाम आज ज़िन्दा व ताबिन्दा है तारीख़े इस्लाम में हक़ और बातिल की सैंकड़ों जंगे हुई और हाज़ारो अफ़राद शहीद हुये लेकिन किसी और शहादत को इस क़दर शौहरत व मक़ामो मन्ज़िलत हासिल न हुई जितनी शहादते इमाम हुसैन को हुई हज़रत इमाम आ़ली मक़ाम की शहादत अक्बरो आज़म है हज़ारों साल गुज़र जाने के बाद भी हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की शहादत का ज़िक्र अर्श ता फ़र्श आज भी ज़िन्दा है और ता क़यामत ज़िन्दा व ताबिन्दा रहेगा।

आप शहादत के उस मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं जहाँ आज तक किसी की रसाई न हो सकी ख़ानबादा–ए–रसूल और आपके असहाब पर करबला में इंतिहाई जुल्मों सितम ढाये गये हज़रत इमाम हुसैन और असहाब को तीन दिन भूका प्यासा शहीद किया गया जसदे मुबारक घोड़ों की टापों से पामाल किये गये खवातीने अहले बैत की वे हुरमती की गई यतीम मासूम बच्चों को नंगे पाँव और हज़रत इमाम हुसैन और असहाब के सरे मुबारक को नेज़ो पर रखकर कूफ़ा से दमिश्क़ तक ले जाया गया ख़ानबादा–ए–रसूल पर करबला में जिस क़दर मसाइबो आलाम और निहायत सख्त तकलीफ़ गुज़री ऐसी तकलीफ़ो मुसीबत कायनात में किसी पर न गुज़री।

लेकिन रज़ाये इलाही की तलब में ख़ानबादा-ए-रसूल सब्र व तहम्मुल पर इस्तिक़ामत और मक़ामे रज़ा पर साबित क़दमी रहे हालाँकि इस मुक़ाम पर बड़े-बड़े वली अल्लाह के क़दम इस्तिक़ामत हासिल न कर सके लेकिन ख़ानबादा-ए-रसूल का वो बुलन्द व आला मक़ाम है कि मक़ामे रज़ा पर ज़र्रा बराबर भी लग़्जिशे क़दम न हुये हज़रत इमाम हुसैन ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत मौला अ़ली करमल्लाहु वजहुल करीम की तालीमो तरबियत और अपनी माँ ख़ातूने जन्नत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा के दूध की लाज रखते हुये और अपने नाना जान सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) की जुबाने अक़दस से चूसे हुये लुआवे दहन का हक़ अदा करते हुये दीन इस्लाम के अहकामात और सुन्नतों पर मुकम्मल अ़मल पैरा रहते हुये दीन इस्लाम की हिफ़ाज़त की।

लेकिन आज उसी इस्लाम के मानने वाले और खुद को हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का गुलाम कहने वाले और अहले बैत से मुहब्बत का दावा करने वाले बाज़ लोग यादे करबला और यादे हुसैन में ताज़ियादारी करने से बिला वजह और बिला शरई दलील के मुहिब्बाने अहले बैत को रोकते और फ़तवा देते हैं अहले बैत की मुहब्बत व अ़क़ीदत से वाबस्ता इस बेहतरीन और महबूब व मक़बूल अ़मल को नाजाइज़ क़रार देते हैं जो कि असल में अज्रे अ़ज़ीम व सवाबे दारैन का बाइस है।

बाज़ कम इल्म और हिकमतों से अंजान कुछ उ़ल्माओं ने मज़हब के नाम पर दहशत गर्दी और बे बुनियादी फ़तवो के ज़रिये लोगों में डर और इख़्तिलाफ़

व इन्तिसार को हमारे मुआ़शरे पर मुहीत कर दिया है और सुन्नत जमात के इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ को मुन्तशिर कर दिया है जिसके बाइस जमाते अहले सुन्नत कई मुख़्तलिफ़ टुकड़ो में बंटकर कमजोर हो गई है कुछ उ़ल्माओं के बाहमी व इस्लामी इख़्तिलाफ़ ने लोगों को एक दूसरे से बई़द (दूर) कर दिया है और हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादारी के मौजूअ़ पर इख़्तिलाफ़ व इन्तिसार और अ़जीब कशमकश में लोगों को उल्झा कर रख दिया है जिसके सबब से बाज़ लोगों के दिल अहले बैत की मुहब्बत से ख़ाली हो गये हैं और जिनके दिल अहले बैत की मुहब्बत पर मामूर नहीं वो मुनाफ़िक़ हैं।

ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने का दाबा करने वालो तुम्हें ये सनद किसने दी कि तुम हक़ व सदाक़त पर हो और अपनी वे हिकमती व फ़तवों से लोगों को डराने वालो इस्लाम तुम्हारा ही मज़हब नहीं है बल्कि इस्लाम पूरी कायनात का मज़हब है ताज़ियादारी को बुग्ज़ व अ़दावत की नज़र से देखने वालो हमारे माहौल व मुआ़शरे में हज़ारों बुराईयाँ मौजूद हैं उन्हें बाअ़ज़ व नसीहत के ज़रिये दूर करने की पहल व कोशिश करो अगर तुम सुन्नियत व हक़्क़ानियत और सदाक़त का दाबा करते हो क्या तुम्हें कोई और बुराई नज़र नहीं आती या फिर जानकर भी अंजान बने हो।

बल्कि हक़ीक़त ये है कि ताज़ियादारी के तमाम मुख़ालिफ़ीन का दिली और बातिनी मक़सद ताज़ियादारी को ख़त्म करके लोगों के दिलों से अहले बैत की मुहब्बत और यादे हुसैन का मिटाना है ताकि आने वाली नस्लें ये भूल जायें कि मारका-ए-करबला क्या था

और हज़रत इमाम हुसैन कौन थे लेकिन उनका ये मक़सद व ख़्वाहिश इंशा अल्लाह कभी पूरी न होगी क्योंकि अल्लाह तआ़ला जिसे बढ़ाये उसे कौन मिटा सकता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जिस पर तुम्हारा दिल मुतमईन हो अगरचा लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें। (मुस्नद-अहमद)

मज़कूरा हदीस इस बात पर दलालत करती है कि जिस मसले पर उ़ल्मा-ए--किराम में बाहमी इख़्तिलाफ़ हो यानी कोई जाइज़ कहे और कोई नाजाइज़ कहे तो हमारा दिल जिस पर मुतमईन हो या कामिल यक़ीन हो वो हमारे लिये सही व दुरूस्त और बेहतर है ताज़ियादारी करने व यादगारे हुसैन मनाने के मौक़िफ़ पर मुहिब्बाने अहले बैत के दिल कामिल यक़ीन के साथ मुतमईन रहते हैं इसलिये उनका ये फ़ेअ़ल शरई एतबार से जाइज़ व सवाबे दारैन है और ये अहले बैत अतहार से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत की अ़लामत है अब उ़ल्मा जो चाहे फ़तवा दें अल्लाह व रसूल और अहले बैत की इंतिहाई मुहब्बत असल ईमान की बुनियाद है और अहले बैत की मुहब्बत में यादगारे हुसैन मनाना और ताज़ियादारी करना ये ईमान का एक जुज़ (हिस्सा) है।

यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) को जो लोग नाजाइज़ व बिदअ़त कहते है क्या वो अपने बुजुर्गों की सालाना यादगार नहीं मनाते हालाँकि वो लोग अपने बुजुर्गों की सालाना यादगार शक्ले उ़र्स बड़े ज़ौक़ व एहतमाम के साथ मनाते हैं और लाखों रूपया ख़र्च

करते हैं लेकिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) जो अपने नाना जान सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के जिगर के फूल व दिल के टुकड़े हैं उनकी यादगार मनाने से हम मुहिब्बाने अहले बैत को रोकते और फ़तवा देते हैं क्या ये उनकी ज़्यादती व जुल्म नहीं है बल्कि वो अपने इल्मी इक़्तिदार का ग़लत व नाजाइज़ इस्तेमाल करते हैं और अपनी तानाशाही और मनमानी व हुक्मे नफ़्स की हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं और लोगों को उसके ताबेअ़ और मुतइ़यन करना चाहते हैं जो कि बिल्कुल नाजाइज़ व ग़लत और ख़िलाफ़े शरअ़ है।

मज़हबे इस्लाम में जिन चीज़ों के मुताअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ हो यानी सहीउल अ़क़ीदा उ़ल्मा-ए-किराम किसी अम्र या फ़ेअ़ल को जाइज़ कहें और कुछ नाजाइज़ कहें तो हम तमाम सुन्नी मुसलमानों को पूरी आज़ादी है कि हम जिन उ़ल्मा की चाहें इक़्तिदा (पैरवी) करें शरीअ़ते मुतहरा किसी एक की पैरवी करने से हमें क़तअ़न नहीं रोकती जिस तरह हमारे फ़िक़ई चार इमाम हैं और हम जिस इमाम की चाहें इक़्तिदा करें शरअ़न जाइज़ है।

चुनाँचा यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) के मौक़िफ़ पर भी उ़ल्मा-ए-किराम में इख़्तिलाफ़ है तो हमारा जिन उ़ल्मा पर एतक़ाद हो और दिल मुतमईन हो तो हमारा उन उ़ल्मा की पैरवी करना शरअ़न जाइज़ है।

कई ताक़तें इन्सान को सीधी राह से भटकाने व गुमराह करने पर लगी हैं जिनमें सबसे बड़ा हमला सीधी राह (सिराते मुस्तक़ीम) पर शैतान का होता है।

मैं ज़रूर लोगों को गुमराह करने के लिये तेरी सीधी राह में ताक लगाकर बैठूँगा फिर मैं ज़रूर उनके पास आऊँगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दायें से और उनके बायें से। (सू०-आअ़राफ़-7/16)

अब एक सवाल पैदा होता है कि हर उ़ल्मा ये दाबा करता है कि मेरा मौक़िफ़ सही-उल अ़क़ीदा हक़ व सदाक़त और सिराते मुस्तक़ीम पर है तो अब ये फ़ैसला कैसे हो कि कौन सही है और कौन ग़लत तो इस अशक़ाल से निजात पाने और इसका जवाब और इस कशमकश से बाहर निकलने और सिराते मुस्तक़ीम पाने के लिये बेहतर व आसान रास्ता अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सूरह- निसा में हमें मरहम्त फ़रमां दिया।

जो कोई अल्लाह व रसूल की इताअ़त करे तो यही लोग(रोज़े क़यामत) उन हस्तियों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने (ख़ास) इनाम फ़रमाया है जो कि अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिहीन हैं। (सू०-निसा-69)

यानी सिराते मुस्तक़ीम अल्लाह तआ़ला के इनाम याफ़्ता बन्दों का रास्ता है और इनाम याफ़्ता बन्दों के चार तबक़ात है जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इनाम किया है यानी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा व सालिहीन और इन्हीं का रास्ता सिराते मुस्तक़ीम है जैसा कि सूरहः फ़ातिहा से वाज़ेह होता है ''इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम सिरातल लज़ीना अन्अ़म्ता अ़लैहिम'' यानी (अल्लाह तआ़ला) हमें सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) पर चला उन लोगों के रास्ते पर जिन पर तूने इनाम किया है अल्लाह तआ़ला ने बराहे रास्त अपने बन्दों से कलाम नहीं किया बल्कि अपने हर हुक्म व पैग़ाम के

लिये नबी व रसूल को पैग़म्बर व अ़मली नमूना बनाया

इरशादे बारी तआ़ला है–
बेशक रसूलुल्लाह की ज़ाते अक़्दस तुम्हारे लिये निहायत हसीन बेहतरीन नमूना है। (सू०–अहज़ाब–21)

हर शख़्स को हक़ व बातिल और सही व ग़लत में इम्तियाज़ करने के लिये एक अ़मली नमूने की ज़रूरत होती है तो जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने अपनी हिदायत का आइनादार नमूना अपने महबूब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को बनाया उसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने अपनी हिदायत का आइनादार नमूना औलिया–ए–किराम को मुतइ़यन किया कि मेरे बाद औलिया–ए–किराम का रास्ता ही राहे हिदायत व सिराते मुस्तक़ीम है अगर हम सिराते मुस्तक़ीम के मुतलाशी हैं तो हमें चाहिये कि उ़ल्मा–ए–किराम के इख़्तिलाफ़ी रास्ते को छोड़कर उनके रास्तों पर चलें जिन पर अल्लाह तआ़ला ने इनाम किया है और उन्हीं के तर्ज़े अ़मल पर अ़मल करें यही हमारे लिये बेहतर और बाइसे निजात है क्योंकि इन्हीं का ज़ाहिर व बातिन हिदायत याफ़्ता होता है और इन्हीं का रास्ता सिराते मुस्तक़ीम है।

जब किसी मसले पर उ़ल्मा–ए–किराम में इख़्तिलाफ़ हो जाये और खुद की अक़्ल सही फ़ैसला करने पर क़ासिर हो तो अल्लाह तआ़ला ने हमें जो रास्ता अ़ता किया है वही हमारे लिये सही और बेहतर है जिस रास्ते पर अल्लाह तआ़ला के इनाम याफ़्ता बन्दे चले हों उसी रास्ते को इख़्तियार करें उसी पर साबित क़दमी रहते हुये इस्तिक़ामत हासिल करें।

तो मालूम हुआ कि तमाम औलिया-ए-किराम का रास्ता व तरीक़ा सिराते मुस्तक़ीम है और जो इनके तरीक़े पर चले उसका रास्ता हक़ व हिदायत पर है अगर हम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-किराम की हालाते ज़िन्दगी का मुताअ़ला करें तो हमें पता चलता है कि इन्होंने बड़े ज़ॉक़ व एहतमाम के साथ ताज़ियादारी की है और जो फ़ेअ़ल औलिया अल्लाह से साबित हो वो ग़लत व नाजाइज़ हो ही नहीं सकता क्योंकि औलिया अल्लाह से कोई नाजाइज़ फ़ेअ़ल का सादिर होना ना मुम्किन है क्योंकि तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया -ए-किराम अल्लाह तआ़ला के मख़सूस व मुक़र्रब और इनाम याफ़्ता बन्दे हैं और इन्हीं का रास्ता सिराते मुस्तक़ीम है।

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया अम्बिया और शुहदा के अलावा कुछ लोग ऐसे होंगे जिन पर क़यामत के दिन अम्बिया रश्क़ करेंगे और उनके चेहरों पर नूर होगा और वो अल्लाह के वली होंगे। (मिश्कात)

बाज़ लोगों ने तो ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में इन्तिहां कर दी हत्ता कि रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को ही नाजाइज़ क़रार दे दिया और ज़ियारते ताज़िया और ताज़ीमे ताज़िया को नाजाइज़ व हराम कहते हैं हालाँकि हदीस पाक में है कि ग़ैर जानदार की तस्वीर बनाना जाइज़ है लेकिन इन लोगों की रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) से नफ़रत व दुश्मनी के बाइस मज़कूरा हदीस पाक को भी नज़र अंदाज करने पर इन्हें मज़बूर कर दिया है हालाँकि बिला शरई दलील व सबूत के किसी चीज़ को नाजाइज़ क़रार देते हुये फ़तवा देना

शरअ़न व क़तअ़न (बिल्कुल,हरगिज़) जाइज़ नहीं बल्कि गुनाह है और इ़ल्मी क़्यास में ग़लती या भूल चूक का इमकान किसी से भी हो सकता है जब किसी मसले पर उ़ल्मा-ए-किराम में इख़्तिलाफ़ हो तो भी किसी से से ग़लती या भूल चूक का इमकान हो सकता है।

हदीस पाक में वारिद है-
हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जो बग़ैर सबूत दिये फ़तवा दिया जायेगा उसका गुनाह उस पर है जिसने उसको फ़तवा दिया। (इब्ने माजा-1/47)

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जो शख़्स मेरी तरफ़ ऐसी बात मन्सूब करे जो मैने न कही हो तो उसे अपना ठिकाना जहन्नुम में बना लेना चाहिये और जिस शख़्स को ग़ैर मुस्तनद (ग़ैर सनद) फ़तवा दे दिया गया हो तो उसका गुनाह फ़तवा देने वाले पर है।
(मुस्नद अहमद-4/429-हदीस न०-8761)

अक्सर ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वाले लोग आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) के फ़तवो का हवाला देते हैं तो मेरा उनसे एक सवाल है कि इन्होने इसके अलावा आला हज़रत की कोई और बात भी कभी मानी है कभी उनकी बात पर अ़मल भी किया है या सिर्फ़ ताज़ियादारी को ही नाजाइज़ व हराम जानते व मानते हैं हालाँकि उन पर लाज़िम है कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ

(रहमतुल्लाह अ़लैह) के दीगर फ़तावों पर भी ग़ौर करें और उन्हें दिल से तसलीम करते हुये उनकी तामील व तकमील को अमली जामा पहनायें।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) के फ़तवे के मुताबिक़ आजकल राइज शादी व तक़रीबों में जाना और खाना बन्द करें और खड़े होकर खाना-पीना बन्द करें यहाँ तक कि अगर मजलिसे निकाह ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल हो तो निकाह पढ़ाना भी बन्द करें अगर वो हक़ व सदाक़त पर हैं और आला हज़रत से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत रखते हैं और उनके कॉल व फ़ेअ़ल पर अ़मल करने का दावा करते है नहीं तो उनकी आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) से मुहब्बत व अ़क़ीदत झूठी और महज़ दिखावा है बल्कि वो सिर्फ़ यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) को मिटाने और मुहिब्बाने अहले बैत के दिलों से मुहब्बते हुसैन व यादे हुसैन को मिटाने के काम को अंजाम देने के लिये आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) के फ़तवों को तोड़ मरोड़ कर लोगों के सामने पेश करते हैं ताकि किसी तरह ताज़ियादारी ख़त्म हो जाये और दिलों से यादे हुसैन और मुहब्बते हुसैन मिट जाये।

हालाँकि आला हज़रत ने कभी ताज़िये की मुख़ालिफ़त नहीं की और कभी भी शबीय रोज़ा-ए-इमाम हुसैन को नाजाइज़ नहीं कहा और न ही अपने फ़तवों में तहरीर किया और रहा सवाल ताज़िये से जुड़े ग़ैर शरई उमूर व जानदार तस्वीरों के ताज़िये में शामिल होने के सबब आपने ताज़ियादारी को नाजाइज़

कहा लेकिन आज बदलते दौर में ताज़िये ग़ैर जानदार तस्वीरों पर मुश्तमिल होते हैं जो हर सूरत शरअ़न जाइज़ हैं और उनकी ज़ियारत व ताज़ीम वाइसे सवाब है।

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) के फ़तवे के मुताबिक राइजा शादी ब्याह व तक़रीब मे जाना व खाना नाजाइज़ है क्योंकि आजकल राइजा शादी ब्याह व तक़ारीब ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल होती हैं जिसके लिये आला हज़रत ने सख़्त मुमानियत फ़रमाई है।

किसी ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस में जाना और खाना जाइज़ नहीं और अगर खाना दूसरी जगह हो जहाँ पर कोई ख़िलाफ़े शरअ़ काम न हो तो वहाँ आम आदमी के जाने में कोई हर्ज नहीं लेकिन आ़लिम व मुक़्तदा (इमाम) का वहाँ भी जाना जाइज़ नहीं है।
(फ़तावा रज़विया–24/134)

ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस व तक़रीब में जाना नाजाइज़ है। (सुनन अबू दाऊद–4/916–ह०–3755)

हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है– सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने खड़े होकर पानी (वग़ैराह) पीने से मना फ़रमाया क़तादा ने कहा हमने कहा कि खड़े होकर खाना कैसा है तो अनस ने कहा ये तो और ज़्यादा बुरा है। (सही मुस्लिम–5/250 –ह०–5275)
(सुनन अबू दाऊद–4/893 –ह०–3717)

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने खड़े होकर पानी पीने से मना फ़रमाया- (सही मुस्लिम-5/251 ह०-5277)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम मे से कोई (कुछ भी) खड़े होकर न पिये और जो भूले से पी ले तो कै़ कर डाले। (सही मुस्लिम-5/251 ह०-5279)

इसके अलावा बरेली से जदीद फ़तवा सात (7) अगस्त 2015 को अमर उजाला अख़्वार में सफ़हा न० एक पर शाए हुआ था जिसका मज़मून ये था कि जिस शादी में खड़े होकर खाना पीना या जहेज़ की माँग हो वहाँ उ़ल्मा-ए-किराम निकाह नहीं पढ़ायेंगे अलबत्ता मज़कूरा फ़तावों पर आम तो आम ख़ास ने भी अ़मल नहीं किया बल्कि हकी़क़त ये है कि उन्हें आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) और बरेली शरीफ़ के फ़तवों से कोई सरोकार नहीं है उन्हें तो आला हज़रत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये ग़ैर शरई उमूर पर मुश्तमिल शादी व तक़ारीब में शिर्कत करना और खाना-पीना और निकाह भी पढ़ाना है क्योंकि इसमें उन्हें दुन्यावी फ़वाइद हासिल होते हैं।

जब उ़ल्मा ही अपने इ़ल्म के बावुजूद आला हज़रत और बरेली के फ़तवो पर अ़मल पैरा नहीं तो क्या बे इ़ल्म आम लोग जो फ़तवे वा सही माना और मफ़हूम भी नहीं जानते तो क्या वो फ़तवों पर अ़मल करेंगे बल्कि हकी़क़त ये है कि बाज़ उ़ल्मा अपने इ़ल्म

पर तकब्बुर करते हैं और दीन इस्लाम को अपने तरीक़े और मनमानी से चलाना चाहते हैं ऐसे ज़ुल्मा इस्लाम के मुताबिक़ नहीं चलते बल्कि इस्लाम को अपने मुताबिक़ चलाना चाहते हैं।

ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वालो साल में ग़ैर शरई उमूर पर मुश्तमिल सैकड़ों शादियों और तक़ारीबों में शिर्कत करना कब बन्द करोगे अगर तुम बाक़ई आला हज़रत की बात मानते हो तो शादी ब्याह व तक़ारीब में जाना व खाना और निकाह पढ़ाना मुअ़त्तल करो आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) के हज़ारों फ़तवे ऐसे हैं जिनका अक्सर आम व ख़ास बे इ़ल्म व आ़लिम का अमलन कोई तअ़ाल्लुक़ नहीं है जिनमें बाज़ हस्बे ज़ैल है।

माल के बदले तावीज़ देना धन्धा है मस्जिद के हुजरे में उजरत लेकर तावीज़ गण्डे करना नाजाइज़ है। (फ़तावा रज़विया–8/95)

हिन्दु, यहूदी व नसरानी का बनाया हुआ साबुन जिसमें चर्बी पड़ी हो चाहे गाय या बकरी की हो नापाक व हराम है। (फ़तावा रज़विया–4/573)

काफ़िर तबीब से मुसलमानों को इलाज कराने की मुमानियत है। (फ़तावा रज़विया–21/243)

अंग्रजी दवाईयों में जिस क़दर रक़ीक़ (यानी पतली) दवायें हैं सब में उमूमन शराब होती है सब नजिश व हराम हैं (मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–3/365)

जवान ग़ैर मेहरम औ़रत के सलाम का जवाब न दें। बल्कि दिल में जवाब दें।
(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–3/351)

बाज़ उ़ल्मा ने मौजूअ़ ताज़ियादारी को बुराई व गुनाह के उस मुक़ाम पर रखा है जिस मुक़ाम पर देवबन्दी वहाबी जश्ने ईद मीलादुन्नबी को रखते हैं और ये उनकी बुग्ज़े अहले बैत की अ़लामत है वो अपने बयान व तक़रीर में ताज़ियादारी को जिस मिक़दार में नाजाइज़ व हराम क़रार देते हैं उस मिक़दार में दीगर हज़ारों बुराइयों व उमूरे गुनाह को ज़िमनन नहीं लेते अगर तमाम उ़ल्मा अल्लाह व रसूल की फ़रमाबरदारी करते हुये अहकामे शरीअ़त के पाबन्द होते और अल्लाह व रसूल की इताअ़त व सुन्नतों पर अ़मल पैरा होते तो उनमें से बाज़ की जहन्नुम में जाने की हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम पेशीनगोई न करते।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– कि आ़लिम को ऐसा अ़ज़ाब दिया जायेगा कि उसके अ़ज़ाब की सख़्ती के बाइस उसके इर्द गिर्द जहन्नुमी इकट्ठा होंगे। (मुस्नद अहमद–5/205)

ताजदारे मदीना सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– आख़िर ज़माने में जाहिल इ़बादत गुज़ार होंगे और फ़ासिक़ उ़ल्मा होंगे।
(कंज़ुल उ़म्माल–14/322)

सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- कोई शख़्स उस वक़्त तक अ़ालिम नहीं हो सकता जब तक कि वो अपने इल्म पर अ़मल न करे। (कंजुल उ़म्माल-10/192)

इरशादे बारी तअ़ाला है-
ऐ ईमान वालो वो बात क्यों कहते हो जो खुद नहीं करते। (सू०-सफ़-2)

हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- अ़नक़रीब मेरे बाद ऐसे उम्रा (सरदार, हाकिम, बादशाह) भी आयेंगे जो ऐसी बातें करेंगे जो करेंगे नहीं और वो करेंगे जिनका उन्हें हुक्म नहीं दिया गया होगा। (मुस्नद अहमद-2/746- ह०-4363)

बाज़ लोग जो ताज़ियादारी को नाजाइज़ व हराम कहते है लेकिन वो घर व दुकानों में टी०वी० पर रोज़ फ़िल्में व नाटक देखते हैं और मोबाइल फोन पर फ़िल्में देखते और गाने सुनते और मौसिक़ी का मज़ा लेते हैं जबकि मज़कूरा बातें नाजाइज़ व सख़्त हराम हैं साल में 364 दिन टी०वी० पर फ़िल्में व नाटक और मोबाइल फोन पर गाने सुनते हैं और शादियों व दीगर तक़रीबों में शिर्कत करते हैं जो ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर पर मुश्तमिल होती हैं लेकिन इन सब ग़ैर शरई उमूर और नाजाइज़ व हराम कामों में उन्हें कोई बुराई नज़र नही आती उन्हें तो सिर्फ़ ताज़ियादारी में हज़ारों बुराईयाँ नज़र आती हैं।

अगर उनकी नज़र में ताज़ियादारी करने वाले मुहिब्बाने

अहले बैत बुराई व फ़ेअ़ले गुनाह करते हैं तो ये उनकी कम इ़ल्मी व बे हिकमती और अहले बैत से बुग्ज़ व क़ीना की अ़लामत है हालाँकि रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िया) की बा नीयते ताज़ीम ज़ियारत करना बाइसे अज्रे अ़ज़ीम है और टी०वी० पर फ़िल्में व नाटक देखना और मोबाइल फोन पर फ़िल्में देखना और गाने सुनना सिर्फ़ और सिर्फ़ बुराई व गुनाह के काम हैं।

ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करने वालो क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि फ़िल्में व नाटक देखना और गाने सुनना नाजाइज़ व हराम और गुनाह के काम हैं पस अपने घरों व दुकानों से फ़ौरन टी०वी० को निकाल फेंको और वीडियो चलित मोबाइल का इस्तेमाल करना छोड़ दो और ख़िलाफ़े शरअ़ शादी व तक़रीब में शिर्कत करना बन्द कर दो अगर तुम अल्लाह व रसूल की इताअ़त करते हो और अहकामे शरीअ़त व सुन्नत पर अ़मल पैरा होने का दावा करते हो।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-अल्लाह तआ़ाला ने मुझे तमाम जहानों के लिये रहमत व हिदायत बनाकर भेजा है और बजाये जाने वाले आलाते मौसिक़ी और साज़ों को मिटाने का हुक्म दिया है। (मुस्नद अहमद-8/286 -ह०-22281)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- जो शख़्स किसी गाने वाली के पास बैठकर गाना सुनता है क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ाला उसके कानो में पिघला हुआ सीसा उँडेलेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल-15/96 -ह०-40662)

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम है-
हर खेल हराम है सिवाय तीन के ख़ाविन्द का अपनी बीवी से खेलना, घोड़े को शायस्तगी सिखाते हुये उसके साथ खेलना और अपनी कमान के साथ तीरंदाज़ी करना। (फ़तावा रज़विया-24/79)

नाच देखने वाला फ़ासिक़ है।(फ़तावा रज़विया-24/341)

जो शख़्स ऐलानियाँ फ़ासिक हो उस शख़्स को सलाम देना मुकरूह है। (फ़तावा रज़विया-24/341)

शरई तौर पर फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब है।
(फ़तावा रज़विया-24/407)

बाज़ लोग कहते हैं कि ताज़ियादारी से दीन इस्लाम को नुकसान होता है क्योंकि ताज़िये से शुहदा-ए-करबला की निसबत जुड़ी है और ताज़ियादारी में ग़ैर शरई उमूर शामिल होते हैं इसलिये ताज़ियादारी नाजाइज़ है अलबत्ता फ़िल्में व नाटक देखने व शादी व तक़रीब से दीन इस्लाम या किसी नबी या वली की निसबत नहीं जुड़ी होती बल्कि वो अपना ज़ाती फ़ेअ़ल है तो इसका जवाब ये है कि मुसलमान का हर जाइज़ व नाजाइज़ काम दीन इस्लाम से वाबस्ता है।

मिसाल के तौर पर हर मुसलमान के घर में अल्लाह का कलाम कुरान मजीद मौजूद है और जिस घर में तिलावते कुरान व ज़िक्रे इलाही व नमाज़ व दीगर इबादत व अ़मल सालेह की मौजूदगी में उसी घर में नाच गाना, फ़िल्में नाटक और मौसिक़ी व दीगर खुराफ़ात व अल्लाह व रसूल की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते

हुये ख़िलाफ़े शरअ़ काम होते हैं क्या ये अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी और दीन इस्लाम से जुड़ी हुई बात नहीं है इसी तरह शादी व तक़रीब में अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करते हुये शादी व तक़रीब में ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर को शामिल करना क्या ये इस्लाम से जुड़ी हुई बात नहीं है जबकि निकाह तरीक़ा-ए-रसूल व सुन्नते रसूल है और इस्लाम से वाबस्ता है दौराने निकाह जहाँ खुत्बे में अल्लाह व रसूल का ज़िक्र होता है उसी मजलिस में अल्लाह व रसूल की ना-फ़रमानी व ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये ख़िलाफ़े शरअ़ व ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़े पर जाहिलाना व खुराफ़ात के काम होते है क्या निकाह दीन इस्लाम से जुड़ी हुई बात नहीं हैं अगर हम खुद को मुसलमान कहते हैं और खुद को अल्लाह का बन्दा और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का उम्मती व गुलाम कहते हैं और मानते हैं तो हमारा हर फ़ेअ़ल व अ़मल इस्लाम से वाबस्ता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- निकाह मेरा तरीक़ा है पस जिसने मेरे तरीक़े से ऐराज़ किया (मुँह फेरा) उसने मुझसे ऐराज़ किया। (सुनन इब्ने माजा-134)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया- दावत देने वाले को चाहिये कि वो परहेज़गार लोगों को दावत दे और फ़ासिक़ लोगों को दावत न दे और तुम्हारा खाना नेक लोग खायें।
(सुनन इब्ने माजा-126)

सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने

फ़रमाया–तुम सिर्फ़ परहेज़गार आदमी का खाना खाओ और तुम्हारा खाना भी परहेज़गार लोग ही खायें। (मुस्नद अहमद–3/38)

सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–सबसे बुरा खाना वलीमे का वो है जिसमें मालदार लोगों को बुलाया जाये और फुक़रा को छोड़ दिया जाये (सही मुस्लिम–2/778)

जुलूसे ताज़िया व दौराने ज़ियारते ताज़िया और आस्ताना–ए–औलिया पर मर्द व अ़ौरत एक साथ जमा हो जायें तो हमारे बाज़ उ़ल्मा कहते हैं कि ज़ियारते ताज़िया व आस्ताना–ए–औलिया पर औरतों का जाना नाजाइज़ है लेकिन दीगर सैकड़ों मक़ामात पर भी मर्द व अ़ौरत एक साथ जमा होते हैं जैसे बाजार रास्तों व मजालिस, बस, ट्रेन, हवाई जहाज़ वग़ैराह यहाँ तक कि घर में शादी या तक़रीब के मौक़े पर रिश्तेदार व दोस्त अहवाब व अ़ज़ीज़ो अक़ारिब व अहले ख़ानदान के मेहरम व ग़ैर मेहरम मर्द अ़ौरत एक साथ जमा होते हैं लेकिन हमारे बाज़ उ़ल्मा मज़कूरा जगहों के लिये मर्द व अ़ौरत के एक साथ जमा होने पर एतराज़ नहीं करते और न मना करते हैं और न कोई फ़तवा (शरई हुक्म) नाफ़िज़ करते हैं।

हालाँकि हमें ज़रूरत इस बात की है कि जहाँ मर्द व अ़ौरत मेहरम व ग़ैर मेहरम एक साथ जमा हों तो ख़वातीन पर लाज़िम है कि वो पर्दे में रहें और अपनी निगाहों को पाक रखते हुये बदख़्याली व बदगुमानी से इजतिनाब करते हुये अपनी निगाहों व शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और मर्दों पर लाज़िम है कि वो अपनी

निगाहों को नीची रखें और ग़ैर मेहरम ख़वातीन को देखने से बाज़ रहें और अपने दिल व ज़हन को बदख़्याली के वसवसे से पाक रखते हुये अपनी निगाहों व शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें जैसा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त और उसके हबीब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने हमें हुक्म दिया है।

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है-
(ऐ नबी सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) मुसलमान मर्दों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें ये उनके लिये बहुत सुथरा है अल्लाह तआ़ला को उनके कामों की ख़बर है और मुसलमान औ़रतों को हुक्म दो कि अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें और अपना बनाव सिंगार न दिखायें मगर जितना खुद ज़ाहिर हो और अपने दुपट्टे गिरेवानों पर डाले रहें। (सू०-नूर-31)

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) अपनी बीवियों और साहबज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़रमा दें कि चादरों का एक हिस्सा अपने मुँह पर डाले रहें। (सू०-अहज़ाब-33/59)

पस हम मुसलमानों को चाहिये कि ज़ियारते ताज़िया व जुलूसे ताज़िया में अपनी निगाहों को सिर्फ़ रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) की तरफ़ मुतवज्जे करें और बदख़्याली व गुनाह और बुराई के कामों से इजतिनाब करें और अपनी निगाहों को पाक रखें जिस तरह हाजी लोग जब हज करने के लिये जाते हैं तो उनके घर से जाने लेकर वापस आने तक मर्द व

औ़रत एक साथ जमा होते हैं जबकि लाखों अफ़राद हज के लिये जाते हैं और दौरने हज अराफ़ात, मुजदल्फ़ा मिना व सफ़ा मर्वाह और ख़ाना-ए-काबा वग़ैराह में एक साथ जमा होते हैं और दौराने तवाफ़ हर औ़रत का चेहरा खुला होता है और तमाम ख़वातीन का चेहरा खुला होने के बावजूद मर्द अपनी नीयतों व निगाहों को ग़ैर मेहरम को देखने से पाक रखते हुये बदख़्याली से खुद को महफ़ूज़ रखते हैं और अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।

ठीक इसी तरह हमें चाहिये कि हर मक़ामात पर जहाँ मर्द व औ़रत एक साथ जमा हों चाहे ज़ियारते ताज़िया हो या आस्ताना-ए-औलिया की हाज़िरी हो चाहे घर हो या बाज़ार अपनी निगाहों व नीयतों को पाक रखें और बा नीयत ताज़ीम रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) की ज़ियारत करें ताकि बेहतर जज़ा पायें और हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत की कुर्बत से बहरेयाब हों।

बाज़ लोग रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमने पर भी एतराज़ करते और मुहिब्बाने अहले बैत को ताज़िया परस्त का लक़ब देते हैं ये उनकी बे इ़ल्मी व बे हिकमती और बद गुमानी की दलील है हालाँकि कोई भी शख़्स (मआ़ज़अल्लाह) ताज़िये को खुदा नहीं जानता और ना ही कोई उसकी इ़बादत करता है इस तरह के इल्ज़ामात लगाने वालो ये बोहतान है जो गुनाहे अ़ज़ीम है हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की मुहब्बत व अ़क़ीदत में रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को बा नियते ताज़ीम चूमना जाइज़ व बाइसे ख़ैर है।

जिस तरह हम मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा की तस्वीरों को चूमते और आँखों से लगाते हैं क्योंकि वो अल्लाह व रसूल से निसबत रखती हैं इसी तरह हम रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमते हैं क्योंकि ताज़िये की निसबत हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से है जो अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैह के महबूब हैं और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की आँखों की ठण्डक व लख़्ते जिगर और गुलशने क़ल्ब के फूल हैं।

ख़ाना-ए-काबा में हजरे अस्वद जो कि एक पत्थर है मगर लोग उसे चूमते हैं तो जब पत्थर को चूमने से कोई बुत परस्त नहीं होता तो रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमने से कोई बुत परस्त कैसे हो सकता है अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने ख़ाना-ए-काबा से तीन सौ साठ (360) बुत बाहर निकलवा दिये मगर अल्लाह तआ़ला ने हजरे अस्वद के अलावा एक और पत्थर यानी मक़ामे इब्राहीम को ख़ाना-ए-काबा के सहन में नसब करा दिया और हुक्म दिया कि ये मेरे ख़लील इब्राहीम (अ़लैहस्सलाम) की निशानी है इसके क़रीब दो रकअ़त निफ़िल नमाज़ अदा करो।

तो जब हजरे अस्वद को चूमने और मक़ामे इब्राहीम के क़रीब नमाज़ पढ़ने से कोई मुशारिक या बुत परस्त नहीं होता तो रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को चूमने से कोई ताज़िया परस्त कैसे हो सकता है ताज़िये को चूमने उसकी ताज़ीम करने वालों की नीयतों और उनके बातिन को समझो और उस पर ग़ौर करो फिर सही व ग़लत, हक व बातिल और जाइज़ व

नाजाइज़ में इम्तियाज़ करो फिर अपनी जुबाने खोलो परिस्तिश का माना अल्लाह तआ़ला की ज़ात में किसी ग़ैर को शरीक करना या ग़ैर खुदा की इ़बादत करना होता है इसलिये मुहिब्बाने अहले बैत को ताज़िया परस्त का लक़ब देने वालो अपनी बद जुबानें बन्द रखो और ऐसे गुनाहों से तौबा करो।

बसा औक़ात देखने को मिलता है कि लोग औलिया-ए-किराम व बुजुर्गानेदीन के मज़ारात पर पड़ी चादर को चूमते और आँखों से लगाते हैं हालाँकि इसे कोई नाजाइज़ नहीं कहता अलबत्ता जिनके तुफ़ैल इन हज़रात को विलायत मिली तो उन्हीं का रोज़ा बनाने व चूमने और ताज़ीम व ज़ियारत करने को बाज़ उ़ल्मा नाजाइज़ क़रार देते हैं क्या ये उनकी बेइ़ल्मी व जुल्म, ज़्यादती और अहले बैत से बुग्ज़ की अ़लामत नहीं है कि औलिया अल्लाह के मज़ारात पर पड़ी चादर को चूमना जाइज़ और जो वलियों के वली हैं उनके रोज़े (ताज़िये) को चूमना नाजाइज़ क्या ये सही व दुरूस्त है

बाज़ लोग ये कहते हैं कि ताज़ियादारी की इब्तिदा लंग तैमूर बादशाह के ज़माने में हुई और वो बादशाह शिया था जिसने ताज़ियादारी की शुरूआ़त की और ताज़ियादारी करना शियाओं का काम है तो इसका जवाब ये है कि ताज़ियादारी की इब्तिदा किसी ने भी की हो लेकिन औलिया-ए-किराम व मशाइख़े इ़ज़ाम से ताज़ियादारी का साबित होना इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन है और ये एक अच्छा और महबूब व मक़बूल अ़मल है जो लोग शियाओं की ताज़ियादारी की मुशाबहत के

बाइस सुन्नी हज़रात को ताज़ियादारी करने से मना करते हैं और नाजाइज़ कहते हैं तो वो लोग अपनी कम इ़ल्मी के सबब ऐसा करते हैं तो मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि शिया और सुन्नी हज़रात की ताज़ियादारी में बहुत फ़र्क़ है और ताज़िया से जुड़े तमाम उमूर मुख़्तलिफ़ हैं जिस तरह इ़बादत हिन्दु, ईसाई, यहूदी वग़ैराह दीगर मज़हब के लोग भी करते हैं और हम मुसलमान भी करते हैं लेकिन हमारी और दीगर मज़हबों की इ़बादत में ज़मीनो आसमान का फ़र्क़ है हमारी इ़बादत हक़ है और उनकी इ़बादत बातिल है।

इसी तरह रोज़ा हम भी रखते हैं और दीगर मज़हब के लोग भी रोज़ा रखते हैं मगर हमारे और उनके रोज़ों में फ़र्क़ है बल्कि हमारे और दीगर मज़हबों के तमाम दीनी मामलात व तरीक़े एक-दूसरे से जुदा हैं योमे आशूरा का रोज़ा हम मुसलमान भी रखते हैं और यहूदी भी इस दिन का रोज़ा रखते हैं तो इस मुशाबहत की वजह से हम योमे आशूरा का रोज़ा तर्क नहीं कर सकते लेकिन कुछ फ़र्क़ व तब्दीली कर सकते हैं जैसा कि हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम यहूदियों की मुख़ालिफ़त करो यानी दो दिन रोज़ा रखो। (मुस्नद अहमद-ह०-2154) इसी तरह दाढ़ी हम मुसलमान भी रखते हैं और दीगर मज़हब के लोग भी रखते हैं तो इस मुशाबहत की वजह से हम दाढ़ी रखना तर्क नहीं कर सकते।

दुनियाँ में तमाम मज़हब कुछ मामलात में एक दूसरे से मुशाबहत रखते हैं लेकिन उनके तरीक़े और ढंग हमसे अलग हैं हमारी मुआ़शरती ज़िन्दगी की बहुत सी बातें दूसरे मज़हब से काफ़ी मिलती जुलती हैं

अलबत्ता हमारी ज़िन्दगी से वाबस्ता तमाम उमूर अहकामे शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ अ़मल में आते हैं यहाँ तक कि बात मौत भी कफ़न दफ़न वग़ैराह शरीअ़त व सुन्नत तरीक़े पर मुश्तमिल होता है लेकिन दीगर मज़हबों में ऐसा नहीं हैं उनके सुलूक़ व तरीक़े हम मुसलमानों से बहुत अलग हैं तो इन मुशाबहत की वजह से अगर कोई कहता है कि ताज़ियादारी शिआओं का फ़ेअ़ल है तो ये उसकी बेइ़ल्मी व कम अ़क्ली की अ़लामत है और ऐसे लोग इ़ल्म व अ़क्ल से कमसिन व नाबालिग़ हैं जो वो ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में ऐसी बे बुनियादी बातें करते हैं।

कुछ लोग तो ऐसे भी जिन्हें न तो दीन की समझ है और न इ़ल्म से कोई तअ़ाल्लुक़ सिर्फ़ नमाज़े जुमा पढ़ते हैं और सुबह से शाम तक हज़ारों बुराई व गुनाह के काम करते हैं और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी व ख़िलाफ़े शरअ़ और अल्लाह व रसूल की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते हुये हराम व नाजाइज़ काम करते हैं और वो अपने इन बुरे व गुनाह और हराम व नाजाइज़ कामों से वे फ़िक्र रहते और इस पर ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और ताज़ियादारी को हराम व नाजाइज़ कहते हैं नमाज़ व रोज़ो का एहतमाम न करने वालो और नाजाइज़ व हराम कामों से इजतिनाब न करने वालो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करने वालो क्या तुम्हारी हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) से दुश्मनी है या तुम्हारे दिलों में अहले बैत के लिये निफ़ाक़ है जो तुम ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करते हो और इस महबूब व मक़बूल अ़मल को नाजाइज़ कहते हो याद रखो तुम्हारा अहले बैत से निफ़ाक़ तुम्हारी हलाकत का सबब बनेगा।

हज इस्लाम का एक रुकन और इ़बादते ख़ुदा है मगर मनासिके हज में अल्लाह तआ़ला अपने महबूब व मख़सूस बन्दों की यादगार का इहतिमाम कराता है यानी रब तआ़ला ने अपने बरगज़ीदा बन्दों की यादगार को मनासिके हज में शामिल करते हुये लाज़िम कर दिया चुनाँचा अराफ़ात जो मक्का मुकर्रमा से बाहर बारह (12) मील के फ़ासले पर एक मुक़द्दस मैदान है जहाँ हाजी लोग हज के दिन लब्बैक पुकारते हैं और नमाज़ व ज़िक्रे इलाही और मुनाजात में मसरूफ रहते हैं और ये हज़रत आदम अ़लैहस्सलाम व हज़रत हव्वा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की यादगार भी है जब हज़रत आदम अ़लैहस्सलाम और हज़रत हव्वा जन्नत से दुनियाँ में भेजे गये तो मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) जगहों पर भेजे गये और इसी अराफ़ात के मैदान में दोनों लोगों का मिलाप हुआ तो अल्लाह तआ़ला ने आदम अ़लैहस्सलाम और हज़रत हव्वा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के मिलाप की जगह को उनकी यादगार बनाते हुये मनासिके हज में शामिल कर दिया।

इसी तरह मिना में हाजी लोग जमरद (शैतान) को कंकरियाँ मारते हैं ये हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल (अ़लैहिमुस्सलाम) की यादगार है सफ़ा मरवाह के सात चक्कर लगाना ये हज़रत हाज़रा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) की यादगार है और कुर्बानी करना ये हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल (अ़लैहिमुस्सलाम) की यादगार है मक़ामे इब्राहीम के नज़दीक दो रकअ़त नमाज़ निफ़िल अदा करना ये अल्लाह के ख़लील की यादगार है तो अल्लाह तआ़ला जब अपनी इ़बादत में अपने महबूबों और बरगज़ीदा बन्दों की यादगार का इहतिमाम कराता है तो हम मुहिब्बाने अहले बैत को

अल्लाह व रसूल के प्यारे महबूब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की यादगार (ताज़ियादारी) करने से बाज़ लोग क्यों रोकते हैं।

अहले इ़ल्म इस बात को जानते हैं कि फ़िक़ई मसाइल, रिवायते अहादीस, तफ़्सीरे कुरान व तारीख़ की कुतुब वग़ैराह दीगर बहुत सी बातों में उ़ल्मा-ए-किराम, आइम्माकिराम, मुहद्दिसीन, मुफ़स्सरीन, मुअर्रिख़ीन व सहाबा व ताबईन में इख़्तिलाफ़ रहा है मिसाल के तौर पर जब ये आयत नाज़िल हुई कि "अल्लाह तो यही चाहता है कि ऐ नबी (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) के घर वालों तुमसे हर तरह की नापाकी को दूर कर दे और तुम्हें कामिल तहारत से नवाज़ कर बिल्कुल पाको साफ़ व सुथरा करदे" (सू०-अहज़ाब-33) बाज़ सहाबा ने कहा कि मज़कूरा आयते करीमा हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की तमाम अज़वाजे मुतहरात के बारे में नाज़िल हुई और बाज़ सहाबा ने कहा कि ये आयत हज़रत मौला अ़ली सइयदा फ़ातिमा और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) के बारे में नाज़िल हुई। (तफ़्सीर कुरतबी-7/564)

इसी तरह हमारे चारो इमामों में भी फ़िक़ई मसाइल व बहुत सी बातों में इख़्तिलाफ़ है जैसे किसी एक इमाम ने कहा कि फलाँ बात वाजिब है तो दूसरे इमाम ने कहा कि सुन्नत है और तीसरे इमाम ने कहा कि फ़र्ज़े किफ़ाया है हालाँकि मसाइले शरीअ़त कुरान व अहादीस व इ़ल्मी क़यास पर मबनी होते हैं फिर भी हज़ारों मसाइल में चारो इमामों में इख़्तिलाफ़ है हालाँकि चारो इमाम हक़ पर हैं और हर एक इमाम ने हर एक मसले को किसी न किसी आयते कुरानी या अहादीस

से इस्तदलाल करते हुये मुस्तनद किया है जिनमें बाज़ इख़्तिलाफ़ी मसाइल हस्बे ज़ैल हैं।

1–इमाम आज़म अबू हनीफ़ा के नज़दीक कुत्ता नजिस ऐ़न नहीं है लेकिन बाज़ फुक़हा ने इसके नजिस होने को तरजीह दी है। (फ़तावा रज़विया–4/402) (दुर्रे मुख़्तार)

2–कुत्ता नजिस ऐ़न नहीं (फ़तावा आ़लमगीरी) लेकिन इसके नजिस होने में मशाइख़ का इख़्तिलाफ़ है। (फ़तावा रज़विया–4/403)

3–कुत्ते की ख़रीद फ़रोख़्त सही है इसमें इमाम शाफई का इख़्तिलाफ़ है उनके नज़दीक कुत्ता नजिस ऐ़न है।

4–कुत्ते और गधे को ज़िबह करके उसका गोस्त बेचना जाइज़ है लेकिन इसमें मशाइख़ का इख़्तिलाफ़ है। (फ़तावा आ़लमगीरी–4/367)

जिन आइम्माकिराम ने कुत्ते को नजिस ऐ़न कहा उन्होंने भी और जिन्होंने कुत्ते को नजिस ऐ़न नहीं कहा उन्होंने भी अहादीस मुबारका से ही इस्तदलाल किया है जिनमे बाज़ हस्बे ज़ैल हैं।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आप फ़लाँ के घर तशरीफ़ ले जाते हैं और हमारे घर तशरीफ़ नहीं लाते तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारे घर कुत्ता है। (फ़तावा रज़विया–4/408,409) (मुस्नद अहमद–2/327)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने मवेशियों की हिफ़ाज़त व शिकार और खेती बाड़ी के अलावा कुत्ता रखा तो उसके सवाब से रोज़ाना एक क़ीरात घटा दिया जायेगा। (सही मुस्लिम–4/201) (मिश्कात–2/291)

हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने कुत्ते की क़ीमत लेने से मना फ़रमाया। (सही मुस्लिम–4/197)

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) ने कुत्ते और बिल्ली की क़ीमत लेने से मना फ़रमाया। (सही मुस्लिम–4/198)

एक दिन जिबरईल अ़लैहस्सलाम (हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम से) हाज़िरी का वायदा करके चले गये दूसरे दिन इन्तिज़ार रहा मगर जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) हाज़िर न हुये हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाये मुलाहिज़ा फ़रमाया– कि जिबरईल दरे दौलत पर हाज़िर हैं हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–क्यों– जिबरईल ने अ़र्ज़ किया कि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो फिर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अन्दर तशरीफ़ ले गये चारो तरफ़ तलाश किया तो पलंग के नीचे कुत्ते का पिल्ला निकला जब उसे बाहर निकाला तब जिबरईल अलैहस्सलाम हाज़िर हुये। (मल्फूज़ाते आला हज़रत–3/415)

5–एक औ़रत ने क़ाज़ी के यहाँ दावा किया कि फ़लाँ शख़्स ने मुझसे निकाह किया है और उस औ़रत ने दो झूठे गवाह पेश किये तो क़ाज़ी ने उस शख़्स को औ़रत का शौहर क़रार दिया तो इमाम आज़म के नज़दीक औ़रत मर्द के साथ रहे और जिमाअ़ (हम बिस्तरी) भी करे लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक नाजाइज़ है।
(दुर्रे मुख़्तार–2/26) (हिदाया–4/52)

6–अगर किसी मुसलमान ने किसी ज़िम्मी (ग़ैर मुस्लिम जो इस्लामी सल्तनत में रहे और सालाना टैक्स अदा करे) को शराब या खिंजीर बेचने या खरीदने के लिये वकील किया तो इमाम आज़म के नज़दीक जाइज़ है और साहिबीन ने फ़रमाया नाजाइज़ है।
(फ़तावा आलमगीरी–4/367)(शरह उल वक़ाया–1/110)

इस्तदलालः– हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं जब शराब की हुरमत नाज़िल हुई तो उस वक़्त ये पाँच चीज़ों से तैयार होती थी यानी अंगूर, खजूर, शहद, गन्दम और जौ से और शराब (ख़म्र) से मुराद हर वो चीज़ है जो अक़्ल पर पर्दा डाल दे।
(अबू दाऊद–4/865)

इरशादे बारी तअ़ाला है–
(ऐ महबूब) आप से शराब और जुऐ का हुक्म पूछते हैं तो आप फ़रमां दें कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है।
(सू०–बक़राह–219)

सूरह–मायदा में अल्लाह तअ़ाला इरशाद फ़रमाता है– शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुऐ के ज़रिये तुम्हारे दरमियान अ़दावत और दुश्मनी डलवादे और

तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ से रोक दे क्या तुम (इन शर अंगेज़ बातों से) बाज़ आओगे। (सू०–मायदा–91)

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया–शराब पीने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले, ख़रीदने वाले, अंगूर निचोड़ने वाले, नुचुड़वाने वाले, उसके उठाने वाले और जिसकी तरफ़ उठाई जा रही है उन सब पर लानत फ़रमाई है। (अबू दाऊद–4/868)

शराब इस ग़रज़ से छोड़ना कि सिरका बन जाये हराम है। (अबू दाऊद–4/869)

हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हर नशा आवर शैः ख़म्र (शराब) है और हर नशा आवर हराम है। (अबू दाऊद–4/871)

7–इमाम शाफ़ई फ़रमाते हैं कि नमाज़ में अख़ीर अत्तहइयात में दुरूद शरीफ़ पढ़ना फ़र्ज़ है इमाम अबू हनीफ़ा फ़रमाते हैं कि सुन्नत है। (मेरी नमाज़–85)

8–इमाम आज़म अबू हनीफ़ा के नज़दीक देहात में जुमा जाइज़ नहीं और इमाम शाफ़ई के नज़दीक देहात में जुमा जाइज़ है। (फ़तावा रज़विया–8/443)

9–इमाम अहमद बिन हम्बल के नज़दीक ईद बकरीद की नमाज़ फ़र्ज़े किफ़ाया है और इमाम आज़म के नज़दीक वाजिब है। (अहयाउल उलूम–1/484)

10–अहनाफ़ (हनफ़ी) के नज़दीक कुर्बानी के तीन दिन हैं लेकिन इमाम शाफ़ई के नज़दीक कुर्बानी के चार दिन हैं। (गुनयातुत्तालिबीन–419)

11–जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना इमाम अहमद के नज़दीक फ़र्ज़े ऐ़न है इमाम शाफ़ई के नज़दीक फ़र्ज़े किफ़ाया है इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक सुन्नते मुअक्किदा है। (मेरी नमाज–86)

12–इसी तरह इंशा की नमाज़े वितर इमाम आज़म के नज़दीक वाजिब हैं जबकि दूसरे इमाम के नज़दीक सुन्नत है। (अहयाउल उलूम–1/484)

13–इमाम मालिक व इमाम शाफ़ई के नज़दीक कुर्बानी सुन्नत है बाकी (दूसरे मुजतहदीन) के नज़दीक वाजिब है। (गुनयातुत्तालिबीन–419)

इस्तदलालः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– तीन वो चीज़ें जो मुझ पर फ़र्ज़ हैं लेकिन वो तुम्हारे लिये निफ़िली हैं 1–कुर्बानी 2–वितर पढ़ना 3–फजिर की दो रकअ़त पढ़ना। (मुस्तदरक हाकिम–260 –ह०–1147)

12–अहनाफ़ के नज़दीक खुत्बे के दौरान कोई नमाज़ जाइज़ नहीं लेकिन दूसरे इमाम के नज़दीक जाइज़ है उन्होंने मुन्दरजा ज़ैल अहादीस से इस्तदलाल किया है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तह्यतुल मस्जिद की दो रकअ़तों को न छोड़ो अगरचा इमाम खुत्बा दे रहा हो। (सही मुस्लिम–1/287)

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला बयान करते हैं कि एक शख़्स जुमा के दिन मस्जिद में दाख़िल हुआ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम उस वक़्त खुत्बा इरशाद फ़रमां रहे थे आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने उससे दरयाफ़्त किया क्या तुमने दो रकअ़त नमाज़ अदा करली उसने अ़र्ज़ किया नहीं तो आप सल्लल्लाहु

अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तुम दो रकअ़त नमाज़ अदा कर लो। (सही बुख़ारी–2/101 –ह०–930) (सही मुस्लिम–2/339 –ह०–2018) (अबू दाऊद)

12–अगर फजिर की सुन्नतें न पढ़ीं हों तो बाद फ़र्ज़ पढ़ लें लेकिन इमाम आज़म के नज़दीक जाइज़ नहीं। (अहयाउल उ़लूम–1/485)

13–मग़रिब की अज़ान व अक़ामत के दरमियान दो रकअ़त नमाज़ निफ़िल पढ़ना जाइज़ है लेकिन अहनाफ़ के नज़दीक जाइज़ नहीं। (अहयाउल उ़लूम–1/488)

इस्तदलालः– जब मुअज़्ज़िन मग़रिब की अज़ान पढ़ता तो सहाबाकिराम मस्ज़िद में सुतूनों की तरफ़ जाते और दो रकअ़त नमाज़ निफ़िल पढ़ते। (सही बुख़ारी–1/87)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– अज़ान व अक़ामत के दरमियान नमाज़ है जो चाहे पढ़े। (सही मुस्लिम–1/287)

मज़कूरा इख़्तिलाफ़ी मसाइल के अलावा हज़ारों फ़िक़ई मसाइल में हमारे चारो इमामों में इख़्तिलाफ़ है और दुनियाँ में इन चारो इमामों के मुक़ल्लिद हैं तो जो लोग किसी एक इमाम के मुक़ल्लिद हैं बाकी तीन इमामों के मुक़ल्लिद नहीं तो क्या वो हक़ पर नहीं हैं जबकि जब चारों इमाम हक़ पर हैं तो उनमें से किसी एक इमाम की इक़्तिदा करने वाले तमाम लोग हक़ पर हैं तो जब चारो इमामों में हज़ारों मसाइल में इख़्तिलाफ़ है लेकिन वो हक़ पर हैं और उनमें से किसी एक इमाम की इक़्तिदा (पैरवी) करने वाले भी हक़ पर हैं

तो मौजूअ़ ताज़ियादारी पर भी इख़्तिलाफ़ है कुछ उ़ल्मा इसे जाइज़ कहते हैं और कुछ नाजाइज़ कहते हैं तो जो ताज़ियादारी को जाइज़ कहने वाले उ़ल्मा की इक़्तिदा (पैरवी) करने वाले हक़ पर कैसे नहीं हो सकते व ताज़ियादारी को जाइज़ व सवाबे दारैन कहने वाले उ़ल्मा-ए-किराम की पैरवी करते हुये ताज़ियादारी करने वाले लोग हक़ पर कैसे नहीं हो सकते हालाँकि सच और हक़ ये है कि ताज़ियादारी करने वाले तमाम मुहिब्बाने अहले बैत हक़ पर हैं और अज्रे अ़ज़ीम के मुस्तहिक़ व सज़ावार है और ताज़ियादारी करना जाइज़ व सवाबे दारैन और बाइसे ख़ैर है और यह एक बेहतरीन महबूब व मक़बूल अ़मल है।

हदीस पाक में है हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते सुना है कि मैंने अपने रब से अपने सहाबा के इख़्तिलाफ़ के मुताल्लिक़ सवाल किया जो मेरे बाद होगा तो मेरी तरफ़ वही हुई ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम) तुम्हारे असहाब मेरे नज़दीक आसमान के सितारों की तरह हैं कि बाज़ पर बाज़ क़वी (ज़ोर आवर, ताक़तवर) हैं लेकिन सब नूरानी हैं जिसने इनमें से किसी के मौफ़िक़ को इख़्तियार किया वो मेरे नज़दीक हिदायत पर है रावी का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया-मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं तुम उनमें से किसी की भी पैरवी करोगे तो हिदायत ही पाओगे। (मिश्कात-बाब मनाक़िबे सहाबा-3/222)

एक अहम मसला जो क़ाबिले तवज्जो है कि जब तक किसी चीज़ के जाइज़ या नाजाइज़ होने पर तमाम

सुन्नी उ़ल्मा मुत्तफ़िक़ न हों तब तक हम तमाम सुन्नी मुसलमानों को शरीअ़ते मुतहरा इस बात की इजाज़त व इख़्तियार देती है कि हम जिस उ़ल्मा की चाहें पैरवी करें और ताज़ियादारी के मोकि़फ़ पर उ़ल्माओं में इत्तेफ़ाक़ नहीं है इसके अलावा कुरान व अहादीस से भी ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना साबित नहीं है बल्कि ताज़ियादारी के मौकि़फ़ पर उ़ल्मा-ए-किराम की अपनी अ़क़्ली सोच व समझ है कि जिसके अ़क़्लो फ़हम में जो बात आयी वो बयान कर दी या रक़म (तहरीर) कर दी हालाँकि जो बात कुरान व हदीस और इज्माअ़ व क़यास से ख़ारिज हो जो सिर्फ़ अपनी अ़क़्ल व समझ से कही जाये उसमें ग़लती का इमकान हो सकता है।

और हर वो अम्र या फेअ़ल जाइज़ है बशर्ते जिसकी मुमानियत कुरान या हदीस या इज्माअ़ से साबित न हो पस हमें चाहिये कि अगर हमारा अ़क़ीदा ये है कि ताज़ियादारी एक बेहतरीन और बाइसे ख़ैर अ़मल है और इसका एहतिमाम करने से हमें अल्लाह व रसूल और अहले बैत की कुर्बत व मुहब्बत हासिल होगी और हमारे ईमान और अ़क़ीदत को निखार व तजद्दुद और मज़बूती मिलेगी और हमारी निजात का ज़रिया बनेगी और रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला की हमें रहमत व नुसरत और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की शफ़ाअ़त की सआ़दत हासिल होगी तो ताज़ियादारी को बड़े ज़ॉक़ और एहतिमाम व सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत से करें और ताज़ियादारी में शामिल ग़ैर शरई उमूर को तर्क कर दें ताकि इस बेहतरीन अ़मल का हम बेहतर अज्र पायें और बुराई व गुनाह से महफ़ूज़ रह सकें।

जिस तरह चारो इमामों में फ़िक़ई मसाइल में इख़्तिलाफ़ है उसी तरह कुछ मसाइल में हनफ़ी उ़लमाओं में भी इख़्तिलाफ़ है जैसे सुबह सादिक़ से तुलूअ़ आफ़ताब तक कोई नमाज़ नहीं सिवाय दो सुन्नत व दो फ़र्ज़ के अलावा जाइज़ नहीं (जन्नती जेवर) सादिक़ से तुलूअ़ आफ़ताब तक दो सुन्नत व दो फ़र्ज़ के अलावा तह्यतुल वुजू, तह्यतुल मस्जिद और क़ज़ा नमाज़ जाइज़ है (कानूने शरीअ़त) रोज़े की हालत में हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया,(जन्नती जेवर) रोज़े की हालत में हैज़ आ गया तो रोज़ा न गया (कानूने शरीअ़त) शराब से अगर शिफ़ा का यक़ीन हो तो पीना जाइज़ है (आ़लमगीरी–5/263,) दवा के तौर पर शराब या मुर्दार जाइज़ नहीं (रद्दुल मुहतार) स्प्रिट और शराब का दवा में इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं (वहारे शरीअ़त) हालाँकि शराब की क़लील (थोड़ी) मिक़दार भी हराम है।

दवा के तौर पर शराब पीना हराम है।
(सही मुस्लिम–5/227 ह०–5141)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने जिस चीज़ को हराम क़रार दिया उस चीज़ से शिफ़ा भी उठाली है।
(मुअ़जम कबीर– तबरानी–9/345)
(सही बुख़ारी–7/244 ह०–5613)

हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्ला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– जिस चीज़ की कसीर मिक़दार नशा आवर हो उसकी क़लील (थोड़ी) मिक़दार भी हराम है। (अबू दाऊद–4/872)

इसी तरह बहुत से मसाइल में हनफ़ी उ़ल्माओं में इख़्तिलाफ़ है मगर लोग उन पर कभी ग़ौर नहीं करते बल्कि बाज़ लोगों का ग़ौर सिर्फ़ ताज़ियादारी पर रहता है कि किसी तरह ताज़ियादारी ख़त्म हो जाये उ़ल्मा-ए-किराम के वो फ़ैसले और फ़तवे जो ग़ैर मुस्तनद और जो कुरान व हदीस से साबित नहीं तो उन तमाम फ़तवों में भूल चूक व ग़लती का इहतिमाल मुमकिन है इ़ल्म की दो सूरतें ऐसी हैं जिनमें ग़लती या भूल चूक के इहतिमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता और वो दो सूरते मुन्दरजा ज़ैल हैं।

1-वो इ़ल्म जो ज़रिया-ए-वही हो जो सिर्फ़ अम्बिया-ए-किराम को हासिल हुआ।
2-वो इ़ल्म जो ज़रिया-ए-इल्हामी हो ये सिर्फ़ अम्बिया-ए-किराम व औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-किराम को हासिल हुआ। मक़सूद ये है कि तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-किराम दरजात व मरातिब में उ़ल्मा-ए-किराम से अफ़ज़ल व आला हैं और जो फ़ेअ़ल औलिया अल्लाह से साबित हो उसमें ग़लती का इमकान नहीं हो सकता और ताज़ियादारी औलिया-अल्लाह से साबित है इसलिये ताज़ियादारी जाइज़ है।

जो लोग ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त करते हैं अगर उनसे एक सवाल किया जाये कि ताज़ियादारी किस तरह से नाजाइज़ है तो उनके पास कोई मज़बूत दलील नहीं होती सिवाय कुछ उ़ल्मा के फ़तावों की कमज़ोर दलील होती है वो भी इज्माई नहीं बल्कि इख़्तिलाफ़ी होती है जो कि ना काफ़ी है इसके अलावा उनके पास ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने की कोई दूसरी दलील नहीं है जबकि मुहिब्बाने अहले बैत के

पास कुरान व अहादीस व औलिया-ए-किराम व ऩुलमा-ए-किराम की मज़बूत दलीलें हैं जो ताज़ियादारी के जाइज़ व सवाबे दारैन होने के लिये काफ़ी हैं ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने ताज़ियादारी की और आज तक अजमेर में ताज़ियादारी होती है और ताज़िया दरगाह शरीफ़ में बनता है हज़रत निजामुद्दीन, हज़रत दाता गंज बख़्श, हज़रत वारिस पाक (रह०) व दीगर सैंकड़ों औलिया-ए-किराम ने मुहब्बत व अ़क़ीदत के साथ बड़े ज़ॉक़ और इहतिमाम से ताज़ियादारी की और रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िये) को ताज़ीम व अ़दबो इहतिराम की नज़र से देखा इन हज़रात की सवानेह हयात की कुतुब में ताज़ियादारी का तज़किरा मिलता है और आज भी अजमेर शरीफ़, बहराइच शरीफ़, कलियर शरीफ़, किछौछा शरीफ़, देवा शरीफ़, बरेली शरीफ़ और मकनपुर शरीफ़ वग़ैराह जो रूहानियत के मरकज़ हैं वहाँ की ख़ानक़ाहें रोज़ा-ए-इमाम हुसैन (ताज़िया) से सजाई जाती हैं।

ज़रा सोचो असल इस्लाम ख़्वाज़ा ग़रीब नवाज़ हैं या आज के ऩुल्मा हैं जिनका इ़ल्म व दीनी ख़िदमात महज़ नज़राने और ज़रिया-ए-मआ़श पर मबनी है और बाज़ ऩुल्मा तो ऐसे हैं जो किसी मजालिस या इज्तिमाअ़ में शिर्क़त से क़ब्ल अपने ख़िताबात व तक़रीर का नज़राना तय करते हैं हालाँकि हक़ीक़त ये है कि जो तय किया जाये उसे क़ीमत कहते हैं और जो खुशी से बिला तय किये दिया जाये वो नज़राना है। मगर इन ऩुल्माओं ने तो नज़राने का माना ही बदल दिया बस अपनी मनमानी और फ़तवे बाज़ियों से मुसलमानों पर अपना रोब व दबदबा क़ायम करके हाकिम की तरह अपनी हुकूमत चाहते हैं और खुद को

मुत्तक़ी व परहेज़गार गुमान करते हैं इनकी फ़तवे-बाज़ियों ने सुन्नत जमात को मुख़्तलिफ़ टुकड़ों और जमातों में मुन्तशिर कर दिया है।

बाज़ उ़ल्मा तो ताज़ियादारी से इतनी बड़ी दुश्मनी रखते हैं कि यादगारे हुसैन (ताज़ियादारी) को मिटाने के लिये जब वो किसी उ़ल्मा के फ़तवे का हवाला देते हैं तो उस फ़तवे में फेर बदल करके और उसे तोड़ मरोड़ कर और उसमें तब्दीली करते हुये लोगों के सामने पेश करते हैं हालाँकि ये शरअ़न नाजाइज़ है।

मिसाल के तौर पर एक फ़तवा हस्बे ज़ैल है मुलाहिज़ा फ़रमायें- अशरा-ए-मुहर्रम में ताज़ियाादरी और क़ब्र व सूरत वग़ैराह बनाना जाइज़ नहीं।
(फ़तावा अज़ीज़िया-1/75)

मज़कूरा फ़तवा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का है जो बिल्कुल सही व हक़ है कि ताज़िये में क़ब्र बनाना जाइज़ नहीं और सूरत से मुराद जानदार तस्वीर है जो कि ताज़िये में ही नहीं बल्कि हर जगह नाजाइज़ व गुनाह है लेकिन एक मौलवी ने अपनी किताब में इस फ़तवे में फेरबदल करके शाऐ किया है जो दर्जे ज़ैल है।

अशरा मुहर्रम में जो ताज़ियादारी होती है गुम्बद नुमा ताज़िया व तस्वीरें बनाई जाती हैं यह सब नाजाइज़ है।

मज़कूरा बाला फ़तवे में फेरबदल किया गया है जो कि ग़लत व शरई हुक्म के ख़िलाफ़ है जबकि शरई हुक्म और तरीक़ा ये है कि जब हम किसी आ़लिमे दीन का फ़तवा या किसी हदीस का हवाला दें तो वही लिखें जो

कि उसकी असल हो उसमें फेरबदल करने की शरीअ़ते मुतहरा हमें क़तअ़न इजाज़त नहीं देती अब ज़रा ग़ौर करो मज़कूरा दोनो फ़तवों में क्या फ़र्क़ है शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने अपने फ़तवे में क़ब्र लिखा और मौलवी साहब ने फेरबदल करते हुये गुम्बद लिखा जबकि गुम्बद बनाना शरअ़न जाइज़ है और ताज़िये में क़ब्र बनाना नाजाइज़ है लेकिन इन मौलवी साहब ने क़ब्र और गुम्बद में इम्तियाज़ (फ़र्क़) नहीं रखा और ताज़िये से अपनी दुश्मनी के बाइस शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी के फ़तवे को तब्दील कर दिया।

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी के ज़माना-ए-हयात में जानदार तस्वीरों पर मुश्तमिल ताज़िये बनाये जाते थे और ताज़ियादारी में कुछ ग़ैर शरई उमूर भी शामिल थे इसलिये आपने ताज़ियादारी के नाजाइज़ होने का फ़तवा दिया लेकिन आपने ताज़िये की मुख़ालिफ़त कभी नहीं की और इस बात की पुख़्ता दलील ये है कि आपकी इसी किताब में दूसरा फ़तवा ताज़िये की हिमायत में तहरीर है।

ताज़िये पर रखकर जो फ़ातिहा दी जाती है वो मुतबर्रक़ है। (फ़तावा अज़ीज़िया-1/189)

ये बात क़ाबिले तवज्जो और ग़ौर करने की है कि जो शख़्स ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहे और वही शख़्स ताज़िये पर रखकर जो फ़ातिहा दी जाये उसे मुतबर्रक कहे क्या ये दोनों बातें अ़जीब और अनोखी नहीं हैं बल्कि मज़कूरा फ़तवे का माना और मफ़हूम ये निकलता है कि आपने ताज़ियादारी में शामिल ग़ैर शरई उमूर और जानदार तस्वीरों जैसे मोर, घोड़ा, परी,

पुतली वग़ैराह के शामिल होने के बाइस आपने ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहा लेकिन इस मौजूदा दौर में ताज़ियों में शामिल जानदार तस्वीरों को मुकम्मल तौर पर हटा दिया गया है और अब ताज़िये में कोई बुराई बाक़ी नहीं है इसलिये ताज़ियादारी में शामिल ख़िलाफ़े शरअ़ कामों को तर्क करके ताज़ियादारी करना बाइसे ख़ैर और अज्रे अ़ज़ीम व सवाबे दारैन है।

हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी का वाक़्या मशहूर है कि आप ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में फ़तवा लिखवा रहे थे तलबा हाज़िर थे और आप एक ऊँचे मक़ाम पर बैठे थे अइयामे मुहर्रम थे यकायक उस तरफ़ से एक ताज़िया गुज़रा जिसको देखकर हज़रत अपने मुक़ाम से उठे और ताज़िये के साथ-साथ चल दिये लौटकर आये तो आपकी आँखों से आँसू जारी थे और कपड़े फटे हुये थे उन्होंने तलवा से कहा कि ये फ़तवा चाक कर दो (फाड़ दो) तलबा को बहुत हैरत हुई और तलबा ने दरयाफ़्त किया कि हज़रत अभी अभी आपने फ़तवा लिखवाया और किस वजह से इसे चाक करवाते हैं हज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रहमतुल्लाह अ़लैह) ने फ़रमाया कि मैंने देखा कि ताज़िये के साथ सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ग़म के आ़लम में तशरीफ़ ले जा रहे थे मैंने उन्हें सलाम पेश किया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने दूसरी तरफ़ मुँह फेर लिया फिर मैंने दूसरी तरफ़ जाकर सलाम पेश किया तो आपने फिर मुँह फेर लिया तब मैंने सबब दरयाफ़्त किया तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया तुम अपना काम करो मैं तो हुसैन के ग़म में करबला जा रहा हूँ। (हुब्बे अहले बैत और ताज़ियादरी-25)

पस हमें चाहिये कि ताज़ियादारी को शरई तरीक़े से बड़े ज़ॉक़ व इहतिमाम से करें और लोगों को ताज़ियादारी में शामिल ग़ैर शरई उमूर को तर्क़ करने के लिये नरमी व हुस्ने खुल्क़ और अच्छे कलाम से तल्क़ीन व ताकीद करें ताकि ताज़ियादारी से वाबस्ता तमाम ग़ैर शरई उमूर को मुकम्मल तौर पर ख़त्म किया जा सके इसके अलावा जहाँ भी शर व गुनाह के काम हों चाहे घर हो या बाज़ार चाहे शादी हो या तक़ारीब यानी हर जगह जहाँ बुराई को देखे उसे दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करें।

हमारी ख़्वातीन माँओं बहनों और बेटियों को चाहिये कि घर से बाहर हर जगह पर्दा नशीन रहें और आस्ताना-ए-औलिया पर वक़्ते हाज़िरी व ज़ियारत बा अदब बा इहतिराम और पर्दानशीन होकर जायें तो वहाँ भी जाना बाइसे ख़ैर है जिस तरह उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा ने अहकामे शरीअ़त के मुताबिक़ ज़ियारते कुबूर की तो उन्हीं के तरीक़े को अ़मल में लाते हुये दरगाहे औलिया अल्लाह में हाज़िरी दें और ज़ियारते ताज़िया व जुलूसे ईद मीलादुन्नबी की ज़ियारत पर्दानशीन होकर करें ताकि बेहतर अज्र पायें।

बाज़ लोग अहले बैत अतहार को अ़लैहस्सलाम कहने पर भी एतराज़ करते हैं हालाँकि आइम्मा किराम व मुहददिसीनकिराम ने अहले बैत को अपनी कुतुब में अ़लैहस्सलाम लिखा हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी, इमाम बग़वी, काज़ी सनाउल्लाह पानीपती, इमाम जलालुद्दीन सयूती, इमाम तबरी, इमाम कुरबती, इमाम फख़रूद्दीन राज़ी(रहमतुल्लाह अ़लैहिम अजमईन)

वग़ैराह ने अहले बैत अतहार को अपनी कुतुब में अ़लैहस्सलाम लिखा इमाम बुख़ारी ने अपनी सही में किताबुल मनाक़िब में हज़रत सइयदा फ़ातिमा ज़हरा और हज़रत इमाम हुसैन को अ़लैहस्सलाम लिखा। (सही बुख़ारी–2/423,432)

अहले बैत अतहार को अ़लैहस्सलाम कहने पर कभी इख़्तिलाफ़ न था लेकिन अब इस दौर में इख़्तिलाफ़ शुरू हो गया और ये इख़्तिलाफ़ ख़ारजियत का असर है अहले इ़ल्म इस बात को जानते हैं कि अ़लैहस्सलाम का लुग्बी माना ''उस पर सलाम हो'' है और ये एक दुअ़ा है और सलाम शियारे इस्लाम है और किसी गायबाना शख़्स के सलाम के जवाब में अ़लैहस्सलाम कहा जाता है (यानी व अ़लैका अ़लैहस्सलाम) तो फिर अहले बैत अतहार को अ़लैहस्सलाम कहने पर एतराज़ क्यों हालाँकि लुग्बी माना के मुताबिक़ किसी गायबाना शख़्स को अ़लैहस्सलाम कह सकते हैं लेकिन दायरे शरीअ़त के तहत अम्बिया–ए–किराम और अहले बैत अतहार को ही अ़लैहस्सलाम कहते हैं।

क्योंकि अल्लाह तअ़ाला ने अपने महबूब रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के साथ अहले बैत अतहार को सलामती में शामिल किया है हर नमाज़ में जो हम दुरूद पढ़ते हैं उसमें भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के साथ आले रसूल को अल्लाह तअ़ाला ने शामिल करते हुये ख़ास कर दिया यानी सलातो सलाम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और आले रसूल एक साथ हैं और जो अहले बैत को अ़लैहस्सलाम कहने पर एतराज़ करे वो वे इ़ल्म और

बहुत बड़ा जाहिल है।

बाज़ लोग अ़शरा मुहर्रम में हरा व लाल कपड़ा पहनने पर भी एतराज़ करते हैं हालाँकि किसी भी दिन कसी भी रंग का कपड़ा पहनना जाइज़ है लेकिन पता नहीं इन एतराज़ करने वालों ने शरीअ़त की कौन सी नई किताब गढ़ली है जिसके मुताबिक़ ये लोग बे बुनियादी और ग़ैर शरई बातें करते और एतराज़ात लगाते हैं जिसकी शरीअ़त में कहीं असल नहीं बल्कि ये सिर्फ़ उनकी जहालत व बे इ़ल्मी और उनके नफ़्स से सादिर होने वाली फ़िजूल बातें हैं जो वो ऐसी बातें करते हैं और ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं जबकि ताज़ियादारी का नाजाइज़ होना कुरान व हदीस और इज्माअ़ व क़यास से साबित नहीं तो फिर वो किस बिना पर ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं ये भी सिर्फ़ उनके नफ़्स का हुक्म है न कि शरई हुक्म जो कि माना जाये।

मज़हबे इस्लाम मुहब्बत व अमन को फैलाने और नफ़रत को मिटाने व बाहमी इत्तेहाद को क़ायम करने और जाहलियत व गुमराही के अंधेरों से निकाल कर निजात व राहे हिदायत की रोशनी की तरफ़ ले जाने का पैग़ाम लेकर आया मगर कुछ उ़ल्माओं की बद ज़हनियत और बाहमी इख़्तिलाफ़ ने इस पैग़ाम का माना ही बदल दिया आज इस नाजुक वक़्त में जहाँ शैतान और नफ़्सानी ख़्वाहिसात व शहवात और लज़्ज़ात इन्सान पर ग़ालिब हैं और हमारे इस्लामी माहौल की फ़िज़ा में शर व बुराई इस क़दर हावी है जिसका कोई मेयार (पैमाना) नहीं ऐसे में अवाम की इस्लाह व हिदायत और रहनुमाई करने के वजाय

आपस में उ़ल्माओं का बाहमी निफ़ाक़ और बुग्ज़ व एक दूसरे की बुराईयाँ और एक-दूसरे पर फ़तवे लगाने के काम ने मज़हबे इस्लाम और मुसलमानों को कसीर नुकसान पहुँचाया है और अहले सुन्नत जमात को मुख़्तलिफ़ टुकड़ों में तक़सीम करने का काम किया है।

बाज़ उ़ल्मा एक दूसरे की बुराई व तनक़ीस करने में मसरूफ़ हैं और अक्सर लोगों को दुन्यावी कामों और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तकमीली कामों से फुरसत नहीं और दोनो तरह के लोग अपने अपने रास्ते और मुक़ाम से भटकर फ़ित्नों में मुब्तिला हैं तो अब ऐसे हालातों में मुसलमानों की इस्लाह व हिदायत और रहनुमाई का ज़रिया कौन बने।

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन उ़मर बिन अलआ़स (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि बनी इसराईल का मामला दुरूस्त चलता रहा यहाँ तक कि उनमें क़ैदी औ़रतों की औलाद भी फल फूल गई उन्होंने अपनी राय से (उस औलाद के मुताल्लिक़) फ़तवे देना शुरू कर दिये खुद भी गुमराह हुये औरों को भी गुमराह किया। (इब्ने माजा-1/47)

हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैंने एक शख़्स को कुराने करीम की किसी आयत की तिलावत दूसरी तरह से करते हुये सुना मैं सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और ये बात अ़र्ज़ की पस आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के चेहरे मुबारक का रंग बदल गया और

चेहरे मुबारक पर नागवारी के आसार महसूस हुये फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फरमाया तुम दोनों सही हो तुम से पहले लोग इख़्तिलाफ़ की वजह से हलाक हुये इसलिये तुम इख़्तिलाफ़ न किया करो।
(मुस्नद अहमद–2/746 ह०–4364)

बाज़ ऐसे भी उ़ल्मा हैं जिन्होंने माल के बदले अपने ज़मीर और इन्सानियत तक को बेच दिया है हत्ता कि बिला वली (सर परस्त) की इजाज़त के ये लोग मर्द व अ़ौरत (लड़का व लड़की) का बाहम निकाह महज़ चन्द रूपयों के लालच की वजह से पढ़ा देते हैं हालाँकि ये दुन्यावी व शरई हर सूरत क़तअ़न नाजाइज़ है लेकिन माल के लालच व ख़्वाहिश के ग़लबे ने इन्हें अन्धा कर दिया है जो ये लोगों के जज़बातों और उनकी इज़्ज़त के साथ खिलवाड़ करते हुये कुछ दुन्यावी फ़वाइद हासिल करने की ग़रज़ से ग़ैर शरई कामों को अंजाम देने में शरई अहकामात और अल्लाह व रसूल के हुक्म की बिल्कुल परवाह नहीं करते।

ज़रा सोचो और ग़ौर करो कि उन माँ बाप पर क्या गुज़रती होगी जब उनकी बेटी उनकी इजाज़त के बग़ैर किसी ग़ैर लड़के के साथ घर से चली जाती और उन (माँ बाप) की इ़ज़्ज़त व अरमानों को तार–तार करते हुये और उनकी इ़ज़्ज़त को दाग़दार व नीलाम करते हुये और उनकी नाफ़रमानी करते हुये वो (लड़की) किसी लड़के से निकाह कर लेती है तो उस वक़्त उन माँ बाप के दिल पर क्या गुज़रती है जिसका अंदाज़ा लगाना ना मुमकिन है मानो उन पर तकालीफ़ व ग़मों का पहाड़ टूट पड़ा हो और रूसवाइयाँ और शर्मसारी उनकी ज़िन्दगी पर मुहीत हो जाती है और

उनकी आँखों के साथ-साथ उनका दिल भी रोता है और उनके ख़्वाब व आरजूऐं पामाल होकर चकना चूर हो जाती हैं।

मगर बाज़ उ़ल्माओं को किसी के ग़म व तकालीफ़ और इ़ज़्ज़त से कोई सरोकार नहीं उन्हें तो फ़क़्त उस माल से मतलब होता है जो निकाह के बाइस हासिल होता है चाहे निकाह शरअ़न जाइज़ हो या नाजाइज़ हो उन्हें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता बल्कि वो अपने इ़ल्म को नाजाइज़ व ग़लत तरीक़े से इस्तेमाल करते हुये सिर्फ़ माल हासिल करने की ग़रज़ से निकाह पढ़ा देते हैं हालाँकि इस तरह के निकाह की अल्लाह व रसूल ने सख़्त मुमानियत फ़रमाई है और ऐसे निकाह को महज़ बातिल और ना क़ाबिले कुबूल क़रार दिया है।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिस किसी औ़रत का उसके वली की इजाज़त के बग़ैर निकाह कर दिया जाये तो उसका निकाह बातिल व ना क़ाबिले कुबूल है। (ये जुमला तीन मरतबा फ़रमाया)
(सुनन अबी दाऊद-2/599 ह०-2083) (मुस्तदरक-हाकिम-2/168) (दुर्रे मन्सूर-1/664) (तिर्मिज़ी-2/110) (मुस्नद इमाम शाफई-393) (सुनन इब्ने माजा-2/30 ह०-1879) (तिर्मिज़ी-1/561 ह०-1094)

अकरमा बिन ख़ालिद बयान करते हैं कि मैं सफ़र में चन्द हमराहियों के साथ था कि उनमें एक बेबा औ़रत भी थी जिसने एक आदमी को अपना वली

मुन्तख़ब किया और उस वली (सरपरस्त) ने उस औ़रत का निकाह एक मर्द से करा दिया तो हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने निकाह करने वाले और जिसका निकाह हुआ था दोनों को कोढ़े लगवाये और उस औ़रत का निकाह भी ख़त्म कर दिया। (मुस्नद इमाम शाफ़ई–394) (मुसन्निफ़ इब्ने अ़ली शैबा–3/456) (मुसन्निफ़ अ़ब्दुल रज़्ज़ाक–6/198)

अबू जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि सइयदुना ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास एक ऐसा निकाह लाया गया जिस पर सिर्फ़ एक मर्द व एक औ़रत ही गवाह थे तो आप ने फ़रमाया ये पोशीदा निकाह है मैं इसे जाइज़ क़रार नहीं देता अगर मुझे इसका पहले इ़ल्म होता तो मैं रज्म कर देता। (रज्म–यानी पत्थर मार मार कर हलाक करना, व संगसार करना) (मुस्नद इमाम शाफ़ई–394) (मौता इमाम मालिक–2/535)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि कोई औ़रत– औ़रत का निकाह न करे और न कोई औ़रत खुद अपना निकाह करे बेशक ज़ानिया है वो जो खुद अपना निकाह करती है।
(दुर्रे मन्सूर–1/664) (अबू दाऊद–2/598)
(सुनन इब्ने माजा–2/31 ह०–1882)

हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया कि वली के बग़ैर कोई निकाह नहीं। (सुनन इब्ने माजा–2/31 ह०–1881)

(तिर्मिज़ी–1/560 ह०–1093) (दुर्रे मन्सूर–1/664) (अबू दाऊद–2/600 ह०–2085)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया वली के बग़ैर कोई निकाह नहीं। (सुनन इब्ने माजा–2/31 ह०–1880)

इमाम बैहक़ी ने हज़रत इमरान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत किया है फ़रमाते हैं सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया– वली और दो आ़दिल गवाहों के बग़ैर निकाह जाइज़ नहीं। (बैहक़ी–सुनन कुबरा–7/125) (दुर्रे मन्सूर–1/664)

कुरान मजीद में इरशादे बारी तआ़ला है–
और (मुसलमान औ़रतों को) मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक कि वो मुसलमान न हो जायें। (सू०–बक़राह–221)

इस आयते करीमा में अल्लाह तआ़ला ने औ़रतों के बजाय उनके औ़लिया (सरपरस्तों) को ख़िताब फ़रमाया और उन्हें हुक्म दिया कि मुसलमान औ़रतों का निकाह मुशारिक मर्दो से न करें कुराने करीम के इस अंदाजे बयान से वाज़ेह हुआ कि मुसलमान औ़रत अपने निकाह का मामला खुद तय नहीं कर सकती उसके निकाह का मामला उसके वली (सरपरस्त) के ज़रिये व वसीले से ही अंजाम पायेगा मुफ़स्सिरीन किराम ने इस आयत को निकाह के मसले में नस क़रार दिया।

इमाम कुरतबी (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि ये आयत बतौर नस इस बात की दलील है कि वली की इजाज़त के बग़ैर निकाह करना जाइज़ नहीं है। (तफ़्सीर कुरतबी–2/103)

शेखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं कि औ़रत खुद निकाह नहीं कर सकती बल्कि उसके निकाह का बन्दोबस्त करना उसके वली की ज़िम्मेदारी है। (अबूदाऊद–2/596)

दूसरी आयते करीमा भी इस तरफ इशारा करती है कि वली की इजाज़त के बग़ैर औ़रत का निकाह जाइज़ नहीं।

और तुम अपने मर्दों और औ़रतों में से उनका निकाह कर दिया करो जो बे निकाह हों। (सू०–नूर–32)

इस आयते करीमा में भी अल्लाह तआ़ला ने कुँवारी लड़की और बेबा औ़रतों के औलिया को ख़िताब करके उन्हें निकाह का बन्दोबस्त करने का हुक्म दिया है इमाम बग़वी (रहमतुल्लाह अ़लैह) फ़रमाते हैं ये आयत इस बात की दलील है कि बेशौहर औ़रतों के निकाह का बन्दोबस्त करना औलिया की ज़िम्मेदारी है। (तफ़्सीर बग़वी–3/73) (तफ़्सीर कुरतबी–12/239) (अबूदाऊद–2/596)

कायनात की हर शैः की तख़लीक़ का कोई न कोई मक़सद ज़रूर होता है और उ़ल्मा–ए–किराम की तख़लीक़ का मक़सद दीनी तबलीग़ व लोगों की हिदायत व इस्लाह का ज़रिया बनना है और अल्लाह

व रसूल के अहकामात की तरफ़ लोगों को राग़िब करना है पस उ़ल्मा-ए-किराम को चाहिये कि अपने बाहमी निफ़ाक़ व बुग्ज़ को ख़त्म करें और इख़्तिलाफ़ी मसाइल में बहसो मुवाहिसा और फ़तवे बाजियों में पड़कर अपने वक़्त को ज़ाया न करें बल्कि वो जिस काम के लिये तख़लीक़ किये गये हैं उन तमाम कामों को अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुताबिक़ बेहतर तरीक़े और नेक नीयत व इख़लास के साथ अंजाम दें।

और हम मुहिब्बाने अहले बैत पर लाज़िम है कि ताज़ियादारी में जो ग़ैर शरई उमूर शामिल हैं उन्हें मुकम्मल तौर पर तर्क कर दें और अपनी ख़वातीन को इस हिदायत व नसीहत के साथ ज़ियारते ताज़िया की इजाज़त दें कि वो मुकम्मल तौर पर पर्दा नशीन रहें और अपनी निगाहों व नीयतों को पाक रखें और अपने दिलों में किसी भी तरह की बुरी और गुनाह की बात दाख़िल न होने दें और कोई भी ऐसा काम न करें जो ख़िलाफ़े शरअ़ हो।

और हम पर लाज़िम है कि हर तरह की खुराफ़ात व जाहिलाना कामों व ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़ो से इजतिनाब करें और अपनी नज़रों को सिर्फ़ रोज़ा-ए-इमाम हुसैन की तरफ़ मुतवज्जै करें और जुलूसे ताज़िया में हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) और शुहदाये करबला की मनक़बत पढ़ें और अल्लाह व रसूल के साथ-साथ नारा-ए-हुसैन लगायें और ज़िक्रे शहादतैन करें और शुहदाये करबला की मुहब्बत व ग़म में अपनी आँखों को आबदीदा करें व अहकामे शरीअ़त के दायरे व हद में रहकर यादगारे हुसैन मनायें ताकि इस महबूब व मक़बूल अ़मल का हम बेहतर अज्र पायें

और रहा सवाल उ़ल्माओं के फ़तवों व एतराज़ का जो ताज़ियादारी को नाजाइज़ कहते हैं तो उनकी तमाम दलीलें ताज़ियादारी को नाजाइज़ क़रार देने के लिये ना काफ़ी और बहुत कमज़ोर और क़ाबिले मोअ़तबर नहीं इसलिये उनके ताज़ियादारी की मुख़ालिफ़त में दिये गये बयानात व ख़िताबात और फ़तवों को नज़र अंदाज करते हुये ताज़ियादारी करें क्योंकि गुज़िश्ता ज़मानों से लेकर आज के मौजूदा दौर तक बाज़ उ़ल्माओं का ये मामूल रहा है कि एक दूसरे की बुराई व तनक़ीद और तनक़ीस करना रहा है।

हुज्जतुल इस्लाम इमामे तसव्वुफ़ इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाह अ़लैह) की किताब अहयाउल उ़लूम पर वक़्ती उ़ल्माओं ने एतराज़ात व ग़ैर मोअ़तबर होने का फ़तवा दिया यहाँ तक कि इस बेहतरीन व राहनुमा मोअ़तबर किताब अहयाउल उ़लूम को जलवाने का प्रोग्राम मुक़र्रर किया मगर अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की रहमत के बाइस वो अपने नापाक इरादों में कामयाब न हुये इसके अलावा हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलियरी (रहमतुल्लाह अ़लैह) पर वक़्ती उ़ल्माओं ने बे बुनियाद ऐतराज़ और गुमराही के इल्ज़ामात लगाये हत्ता कि उन्हें मस्जिद से बाहर निकाल दिया इसी तरह हज़रत जुन्नून मिश्री (रहमतुल्लाह अ़लैह) वग़ैराह दीगर औलिया–ए–किराम व सूफ़िया–ए–किराम और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ (रहमतुल्लाह अ़लैह) जैसी अज़ीम शख़्सियत पर भी बेशुमार इल्ज़ामात व एतराज़ात लगाये गये और इन औलिया–ए–किराम और मशाइख़े इ़ज़ाम से वाबस्ता अ़क़ीदत मन्दों के दिलों को चोट पहुँचायी गई।

जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) शहीद हुये उस दिन सत्तर (70) हज़ार फ़रिश्ते उतरे और उनके ग़म में रोये और क्यामत तक उन पर रोंयेगे ज़मीन तो ज़मीन आसमानों में भी ग़मे हुसैन मनाया जाता है यहाँ तक कि कायनात की हर शैः ग़मे हुसैन मनाती है जब जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम को हज़रत इमाम हुसैन की शहादत की ख़बर दी तो आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की चश्मे मुबारक से आँसू जारी हुये और आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम निहायत ग़मगीन हुये तो जिनका ग़म अर्श ता फ़र्श मनाया जाता है तो उनका ग़म मनाने और उनके ग़म में आँसू बहाने से मुहिब्बाने अहले बैत को बाज़ लोग क्यों रोकते हैं और नाजाइज़ कहते हैं लेकिन जब उनके यहाँ उनका कोई अ़ज़ीज़ फ़ौत हो जाता है या कोई माल वग़ैराह का दुन्यावी नुकसान हो जाता है तो दहाड़े मार मारकर बे इख़्तियार रोते हैं और हमें शुहदा-ए-करबला के ग़म में रोने से मना करते हैं।

ख़ानाबादा-ए-रसूल करबला में दीन इस्लाम के लिये कुरबान हो गये और कई सहाबा व आपके अ़ज़ीज़ अक़ारिब व दोस्त अहवाब और हज़रत मुस्लिम व उनके दो मासूम बेटे शहीद कर दिये गये हज़रत अ़ली असग़र जो सिर्फ़ छः (6) माह के मासूम बच्चे थे उन्होंने भूक प्यास की हालत में हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की गोद में दम तोड़ा हज़रत अ़ली अकबर ने भी भूक प्यास की हालत में शहादत पायी और आपके भाँजे सइयदा ज़ैनब (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) के बेटे अ़ौन और मुहम्मद जो कमसिन और मासूम थे वो भी आपके और अपनी माँ सइयदा ज़ैनब

के सामने शहीद हो गये जब बोसागाहे नबवी पर तीर व नेज़े चले और आले मुहम्मद पर पानी को बन्द कर दिया गया और भूक प्यास की शिद्दत पर तलवारों के वार से ज़ख़्म पर ज़ख़्म खाये और आपके सामने आपके भाई और बेटे और भतीजे शहीद हो गये और आप (हज़रत इमाम अ़ाली मक़ाम) उनके खून आलूदा जिस्मों को उठा उठा कर एक जगह जमा करते थे।

ख़ानाबादा-ए-रसूल की अ़ौरतों की बेहुरमती की गई हत्ता कि उनके सरों से चादरें भी छीन ली गईं जिनको आसमान ने भी बेपर्दा न देखा वो मैदाने करबला में नंगे सिर कर दी गईं बीमार ज़ैनुल आबदीन (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) को बीमारी और कमज़ोरी के बाइस जब उन पर चला भी नहीं जाता था भारी बेड़ियों से उनके जिस्मे अक़दस को जकड़ दिया गया क्या अ़ालमे मंजर होगा कि जब हज़रत इमाम अ़ाली मक़ाम के सामने आपके भाई भतीजे और बेटे शहीद किये गये और उनके खून आलूदा जिस्मों को देखकर उन पर क्या गुज़री होगी।

कायनात में ऐसी मुसीबतें व तकालीफ़ न किसी पर गुज़री और न किसी पर गुज़रेगी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम का बाग़े चमन करबला में उजड़ गया फिर अगर कोई ये कहे कि उनके ग़म में आँसू बहाना नाजाइज़ है तो बेशक वो दुश्मने अहले बैत और दुश्मने रसूल है और ये अज़ीमो अकबर कुर्बानी उन्होंने अपने लिये नहीं दीं बल्कि दीने मुहम्मदी की हिफ़ाज़त व बक़ा के लिये थी अगर वो ऐसा न करते तो आज इस्लाम की शक्लो सूरत निहायत जुल्मो जहालत व गुनाहों और शर से लबरेज़ होती।

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि एक दिन हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम अपने घर में तशरीफ़ फ़रमां थे और सबसे फ़रमां दिया कि अभी मेरे पास कोई न आये पस मैने इन्तिज़ार किया यहाँ तक कि हुसैन (अ़लैहस्सलाम) आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के हुजरे मुबारक में दाख़िल हुये फिर मैने हिचकी बंधने की आवाज सुनी कि आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम रो रहे थे जब मैने (हुजरे मुबारक में) झाँका तो देखा कि हुसैन (अ़लैहस्सलाम) आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की गोद मुबारक में हैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) की पेशानी पौंछ रहे हैं और साथ ही साथ रो रहे हैं फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम ने फ़रमाया जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) घर में मौजूद हैं और उन्होंने मुझसे कहा है क्या आप हुसैन से बेहद मुहब्बत करते हैं मैंने कहा हाँ फिर जिबरईल (अ़लैहस्सलाम) ने कहा बेशक आपकी उम्मत हुसैन को सर ज़मीने करबला में शहीद करेगी और जिबरईल उस सर ज़मीन की मिट्टी भी लाये हैं फिर आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने वो मिट्टी हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) को दिखाई।
(मुस्नद अहमद–2/782) (मजमउज़्ज़वाइद–9/189)
(मुअ़जम कबीर– तबरानी–3/108)

अबू नुऐम ने अस्बग़ बिन नबाता से रिवायत की है कि मैदाने करबला की वो जगह जहाँ इमाम आ़ली मक़ाम हज़रत इमाम हुसैन व शुहदा–ए–करबला शहीद हुये उसकी निसबत हज़रत मौला अ़ली ने फ़रमाया था कि ये हुसैन और उसके काफ़िले के ऊँटों के बैठने की जगह है ये उनके कजाबे रखने की जगह है और ये

उनके खून का मक़ाम है आले मुहम्मद का एक गिरोह इस मैदान में शहीद होगा जिस पर ज़मीन व आसमान रोयेंगे। (ख़साइसुल कुबरा–2/162) (सिर्रुश्शहादतैन–31)

जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) को शहीद किया गया तो सूरज को ग्रहन लगा हत्ता कि दोपहर के वक़्त तारे नमूदार हुये यहाँ तक कि उन्हें इत्मीनान होने लगा कि ये रात है। (मजमउज़्ज़वाइद–9/197)

जब हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) को शहीद किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया।
(मजमउज़्ज़वाइद–9/197)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने जिन्नों को सुना कि वो हुसैन (अ़लैहस्सलाम) के क़त्ल पर नोहा कर रहे हैं।
(मजमउज़्ज़वाइद–9/199)

शहादत इमाम हुसैन के दिन मुल्के शाम में जो पत्थर उठाया जाता तो वो खून आलूद होता।
(मजमउज़्ज़वाइद–9/194)

हज़रत इमाम हुसैन की शहादत के दिन अंधेरा हो गया और तीन रोज़ तक कामिल अंधेरा रहा और बैतुल मुक़द्दस के पथ्थरों के नीचे ताज़ा खून पाया गया।(अलविदाया वननिहाया–5/710)(सिर्रुश्शहादतैन–57)

जब हज़रत इमाम हुसैन शहीद हुये तो आसमान से खून की बारिश हुई जब सुबह हुई तो घड़े और मटके खून से भरे हुये थे। (सिर्रुश्शहादतैन–57)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के विसाल के बाद मैने जिन्नों का रोना नहीं सुना था मगर आज की रात मैने जिन्नों को रोते हुये सुना तब मैने समझ लिया कि मेरा बेटा हुसैन शहीद हो गया है फिर हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने अपनी कनीज़ से कहा कि घर से बाहर निकलकर मालूम कर तब मालूम हुआ कि हुसैन (अ़लैहस्सलाम) शहीद हुये हैं और जिन्न नोहा कर रहे हैं। (सिर्रुश्शहादतैन–59)

जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहस्सलाम) शहीद हुये उस दिन बैतुल मुक़द्दस में जो पथ्थर उठाया जाता उसके नीचे से ताज़ा ताज़ा खून निकलता था। (सिर्रुश्शहादतैन–57)

ताज़ियादारी एक बेहतरीन और महबूब व मक़बूल अ़मल है और ये अहले बैत अतहार से सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत की अ़लामत है जिस तरह हज़रत उ़वैस करनी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने अपने सारे दाँत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की सच्ची मुहब्बत में तोड़ दिये थे हालाँकि उनके लिये ये फ़ेअ़ल कोई शरई हुक्म न था बल्कि उन्होंने मुहब्बते रसूल के सबब ऐसा किया था और हम मुहिब्बाने अहले बैत भी अहले बैत अतहार की सच्ची मुहब्बत के सबब यादगारे हुसैन मनाते हैं और यादे हुसैन में ताज़ियादारी करते हैं और इंशा अल्लाह इस महबूब व मक़बूल अ़मल को दायम व क़ायम रखेंगे।

अल्लाह तआ़ाला अपने महबूब हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल हम सब मुसलमानों को हिदायत अ़ता फ़रमाये और जुमला मामलात में सही व ग़लत, जाइज़ व नाजाइज़ में इम्तियाज़ (फ़र्क़) करने की सलाहियत अ़ता फरमाये और हमारी अ़क़्लो फ़हम में तवानाई अ़ता फरमाये ताकि हम तेरे और तेरे हबीब सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम की फ़रमाबरदारी करते हुये राहे हक़ पर चल सकें और हमें अपनी और अपने महबूब रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम और अहले बैत अतहार की सच्ची और हक़ीक़ी और ज़ाहिरी व बातिनी मुहब्बत में ग़र्क़ करदे या अल्लाह तेरे महबूब की गुलामी का पट्टा मेरे गले में हो और हमें तमाम बुराईयों और गुनाहों और शैतान के शर से महफ़ूज़ रख और हम तमाम मुसलमानों को जो हयात हैं और जो वफ़ात पा चुके हैं उन सबकी अपने हबीब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल मग़फ़िरत फ़रमां और हम सब मुसलमानों के सग़ीरा व कबीरा गुनाहों को बख़्श दे और हमें इस्लाम पर ज़िन्दा रख और ईमान पर उठा और हमें सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाँ। आमीन।

● ● ● ● ● ● ●

अल्लाह तअ़ाला इस किताब को अपने महबूब सरकारे दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और इस किताब को बराहे ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रूह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये और अपने हबीब रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु अ़लैह वसल्लम के सद्क़े व तुफ़ैल उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये- आमीन।

नोट- जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें।

डा० आज़म बेग क़ादरी
09897626182

(कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत)

तसनीफ़ -व-तालीफ़
डॉ0 आज़म बेग क़ादरी

मदार बुक डिपो
मकनपुर (कानपुर)
09695661767